

वह आदमी जो भगवान था



The Man

Who Was God

Randolph Dunn

## The Man Who Was God

You are encouraged to study your Bible to prove the truth presented in these lessons or any other lesson. The comments presented herein are those of the authors and the compiler. You should verify their comments and opinions and teachings by others; e.g., a pastor, preacher, priest, rabbi, commentator, or publisher as it is YOUR responsibility to seek, know and do God's will.

In verifying to read different Bible translations, refer to Bible dictionaries and lexicons for meaning of words or phrases you do not know. Be careful with dictionary definitions as dictionaries give meaning of words and phrases from original language through current usage.

The meaning of words and phrases change over time. Also, several Greek words may be translated into one word in English and may distort the original meaning. For instance, the Greek words *de* and *kai* were translated as "and" in English. *De* is used to separate two nouns whereas *kai* connects two nouns.

Let God speak to you from His Holy Word as recorded in the Bible.



### International Bible Knowledge Institute

IBKI grants permission to reproduce for non-commercial purposes lessons in their entirety without change or charge.

Randolph Dunn, President - Roberto Santiago, Dean  
Visit our website [Thebibleway.net](http://Thebibleway.net)  
Contact us at [info.India.IBKI@gmail.com](mailto:info.India.IBKI@gmail.com)

## वह आदमी जो भगवान था

इन पाठों या किसी अन्य पाठ में प्रस्तुत सत्य को साबित करने के लिए आपको अपनी बाइबल का अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यहाँ प्रस्तुत टिप्पणियाँ लेखकों और संकलनकर्ताओं की हैं। आपको दूसरों द्वारा उनकी टिप्पणियों और राय और शिक्षाओं को सत्यापित करना चाहिए; उदाहरण के लिए, एक पादरी, उपदेशक, पुजारी, रब्बी, टिप्पणीकार, या प्रकाशक क्योंकि यह आपकी जिम्मेदारी है कि आप परमेश्वर की इच्छा को खोजें, जानें और करें।

विभिन्न बाइबल अनुवादों को पढ़ने के लिए सत्यापित करने में, उन शब्दों या वाक्यांशों के अर्थ के लिए बाइबल शब्दकोश और शब्दकोष देखें जिन्हें आप नहीं जानते हैं। शब्दकोश परिभाषाओं से सावधान रहें क्योंकि शब्दकोश वर्तमान उपयोग के माध्यम से मूल भाषा से शब्दों और वाक्यांशों का अर्थ देते हैं।

समय के साथ शब्दों और वाक्यांशों के अर्थ बदल जाते हैं। इसके अलावा, कई ग्रीक शब्दों का अंग्रेजी में एक शब्द में अनुवाद किया जा सकता है और मूल अर्थ को विकृत कर सकता है। उदाहरण के लिए, ग्रीक शब्द *डे* और *काई* का अंग्रेजी में "और" के रूप में अनुवाद किया गया था। *डे* दो संज्ञाओं को अलग करने के लिए प्रयोग किया जाता है जबकि *काई* दो संज्ञाओं को जोड़ता है।

परमेश्वर को अपने पवित्र वचन से आप से बात करने दें जैसा कि बाइबल में दर्ज है।



अंतर्राष्ट्रीय बाइबिल ज्ञान संस्थान IBKI बिना किसी परिवर्तन या शुल्क के गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों के पाठों को उनकी संपूर्णता में पुनः पेश करने की अनुमति देता है। रैंडोल्फ डन, राष्ट्रपति - रॉबर्टो सैंटियागो, डीन हमारी वेबसाइट [Thebibleway.net](http://Thebibleway.net) पर जाएँ हमसे [info.India.IBKI@gmail.com](mailto:info.India.IBKI@gmail.com) पर संपर्क करें

## The Man Who Was God

### Introduction

*"In the beginning God created the heavens and the earth. Now the earth was formless and empty, darkness was over the surface of the deep, and the Spirit of God was hovering over the waters."* (Genesis 1:1-2) *"In the beginning was the Word."* (John 1:1) *"Then God said, 'Let us make man in our image, in our likeness.'" (Genesis 1:26) The word "God" was translated from the Hebrew word 'Elohiym plural of El, but they are also one "The Father and I are one."* (John 10:30) These spirit beings must have existed before they spoke the heavens and earth into existence along with all its living creatures, animals and vegetation. Then, they made man from what they spoke into existence into their likeness.

According to the apostle John the "Word" was with God and was God. The Word became flesh and dwelt among man. John, the Baptist, referred to Him as "the Lamb of God" who takes away the sins.

What an awesome revelation, the spirit being, Deity - the creator of all things, will sacrifice Himself as the atoning sacrifice to cleanse those They created in Their likeness and set eternity in their hearts. *"He has also set eternity in the hearts of men; yet they cannot fathom what God has done from beginning to end."* (Ecc 3:11-12) Those who put their trust and obey Him are promised eternal life with Him, if they continue to live as by obedient faith as priest to serve Him.

The comments following quoted scripture are the writer's opinion and interpretation. You should not accept them without thought and adequate analysis and verification. Nor should you accept any other opinion without the same degree of analysis.

### Chapter 1

#### Deity

*"In the beginning God created the heavens and the earth. Now the earth was formless and empty, darkness was over the surface of the deep, and the Spirit of God was hovering over the waters."* (Gen 1:1-2)

*"In the beginning was the Word, and the Word was with God, and the Word was God. He was with God, in the beginning. Through him all things were made; without him nothing was made that has been made." ... "The Word became flesh and made his dwelling among us."* (John 1:1-3; 14) God, Logos and Word are discussed in Appendix C.

## वह आदमी जो भगवान था

### परिचय

*"शुरुआत में भगवान ने आकाश और पृथ्वी को बनाया। अब पृथ्वी निराकार और सूनी थी, अन्धकार की सतह पर अन्धकार छा गया था, और परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मँडरा रहा था।"* (उत्पत्ति 1:1-2) *"आदि में वचन था।"* (यूहन्ना 1:1) *"तब परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं।"* (उत्पत्ति 1:26) शब्द "परमेश्वर" का अनुवाद इब्रानी शब्द से किया गया है। एलोहीम का बहुवचन एल, लेकिन वे भी एक हैं "पिता और मैं एक हैं।" (यूहन्ना 10:30) इन आत्मिक प्राणियों का अस्तित्व आकाश और पृथ्वी के अस्तित्व में आने के साथ-साथ उसके सभी जीवित प्राणियों, जानवरों और वनस्पतियों के अस्तित्व में रहा होगा। फिर, उन्होंने मनुष्य को उस से अपनी समानता में अस्तित्व में बनाया जो उन्होंने कहा था।

प्रेरित यूहन्ना के अनुसार "वचन" परमेश्वर के पास था और परमेश्वर था। वचन देहधारी हुआ और मनुष्य के बीच में बस गया। बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना ने उसे "परमेश्वर के मेरे" के रूप में संदर्भित किया जो पापों को दूर करता है।

क्या एक अद्भुत रहस्योद्घाटन, आत्मा, देवता - सभी चीजों के निर्माता, प्रायश्चित्त बलिदान के रूप में खुद को बलिदान करेंगे, जिन्हें उन्होंने अपनी समानता में बनाया था और उनके दिलों में अनंत काल स्थापित किया था। *"उस ने मनुष्यों के मनो में भी अनन्तकाल का स्थान रखा है; तौभी वे यह नहीं समझ सकते कि परमेश्वर ने आरम्भ से अन्त तक क्या किया है।"* (सभो 3:11-12) जो लोग उस पर भरोसा करते हैं और उसकी आज्ञा का पालन करते हैं, उन्हें उसके साथ अनन्त जीवन का वादा किया जाता है, यदि वे उसकी सेवा करने के लिए याजक के रूप में आज्ञाकारी विश्वास के अनुसार जीना जारी रखते हैं।

उद्धृत ग्रंथ के बाद की टिप्पणियाँ लेखक की राय और व्याख्या हैं। आपको बिना पर्याप्त विश्लेषण और सत्यापन के उन्हें स्वीकार नहीं करना चाहिए। न ही आपको उसी डिग्री के विश्लेषण के बिना किसी अन्य राय को स्वीकार करना चाहिए।

### अध्याय 1

#### देव

*"शुरुआत में भगवान ने आकाश और पृथ्वी को बनाया। अब पृथ्वी निराकार और सूनी थी, अन्धकार की सतह पर अन्धकार छा गया था, और परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मँडरा रहा था।"* (उत्पत्ति 1:1-2)

*"आरंभ में वचन था, और वचन परमेश्वर के पास था, और शब्द भगवान था। वह भगवान के साथ था, प्रारंभ में। उसके बिना कुछ भी नहीं बन सकता; उसके बिना कुछ भी नहीं बनाया गया था जो बनाया गया था।"*

“For there are three that bear record in heaven, **the Father, the Word, and the Holy Ghost: and these three are one.** And there are three that bear witness in earth, the spirit, and the water, and the blood: and these three agree in one.” (1 John 5:7-8)

“That which was from the beginning, which we have heard, which we have seen with our eyes, which we looked upon and have touched with our hands (man’s nature), concerning the word of life—the life was made manifest, and we have seen it, and testify to it and proclaim to you the eternal life, which was with the Father and was made manifest to us—that which we have seen and heard we proclaim also to you, so that you too may have fellowship with us; and indeed our fellowship is with the Father and with his Son Jesus Christ.” (1 John 1:1-4)

**Comment:** So, “God,” the “Word” and the “Spirit” were present in the creation. Therefore, one could conclude just from these few verses there were three “Gods” or one in three forms – God, Word and Spirit. So, as spirit beings, and the creator of all things can be manifested into things of His creation in order for man can understand. For instance:

“The Lord appeared to Abraham near the great trees of Mamre while he was sitting at the entrance to his tent in the heat of the day. Abraham looked up and saw three men standing nearby. When he saw them, he hurried from the entrance of his tent to meet them and bowed low to the ground.” (Gen 18:1-2)

“Now Moses was tending the flock of Jethro his father-in-law, the priest of Midian, and he led the flock to the far side of the desert and came to Horeb, the mountain of God. There the angel of the Lord appeared to him in flames of fire from within a bush. Moses saw that though the bush was on fire it did not burn up. So, Moses thought, ‘I will go over and see this strange sight — why the bush does not burn up.’ When **the Lord saw** that he had gone over to look, **God** (‘Elohiym) **called** to him from within the bush, ‘Moses! Moses!’ and Moses said, ‘Here I am.’” So, God manifest Himself in the burning bush.” (Ex 3:1-4)

” ... "वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच अपना निवास स्थान बना लिया।"(यूहन्ना 1:1-3; 14) परिशिष्ट सी में परमेश्वर, लोगो और वचन की चर्चा की गई है।

"क्योंकि तीन हैं जो स्वर्ग में अभिलेख रखते हैं, पिता, वचन और पवित्र आत्मा: और ये तीनों एक हैं। और तीन हैं जो पृथ्वी पर गवाही देते हैं, अर्थात् आत्मा, और जल, और लोहू, और ये तीनों एक ही बात में सहमत हैं।"(1 यूहन्ना 5:7-8)

"वह जो आरम्भ से था, जिसे हम ने सुना है, जिसे हम ने अपनी आंखों से देखा है, जिसे हम ने जीवन के वचन के विषय में देखा है और अपने हाथों (मनुष्य के स्वभाव) से छुआ है- जीवन प्रगट हुआ, और हम इसे देखा है, और इसकी गवाही देते हैं और आपको अनन्त जीवन की घोषणा करते हैं, जो पिता के साथ था और हमें प्रकट किया गया था- जिसे हमने देखा और सुना है, हम आपको भी बताते हैं, ताकि आप भी हमारे साथ सहभागिता कर सकें; और हमारी सहभागिता पिता और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है।"(1 यूहन्ना 1:1-4)

**टिप्पणी:** तो, "ईश्वर," "शब्द" और "आत्मा" सृष्टि में मौजूद थे। इसलिए, इन कुछ छंदों से कोई यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि तीन "ईश्वर" थे या तीन रूपों में से एक - ईश्वर, शब्द और आत्मा। इसलिए, आत्मा के रूप में, और सभी चीजों के निर्माता को उसकी रचना की चीजों में प्रकट किया जा सकता है ताकि मनुष्य समझ सके। उदाहरण के लिए:

“यहोवा ने इब्राहीम को मग्रे के बड़े वृक्षों के पास उस समय दर्शन दिया, जब वह दिन की तपिश में अपने डेरे के द्वार पर बैठा था। इब्राहीम ने ऊपर देखा और तीन आदमियों को पास में खड़ा देखा। उन्हें देखकर वह अपने डेरे के द्वार से उन से भेंट करने को फुर्ती से निकला, और भूमि पर दण्डवत् किया।”(उत्पत्ति 18:1-2)

“मूसा अपने ससुर यित्रो की भेड़-बकरी की चरवाही कर रहा था, जो मिद्यान का याजक था, और वह भेड़-बकरियोंको जंगल के उस पार ले गया, और परमेश्वर के पर्वत होरेब के पास पहुंचा। वहाँ एक झाड़ी के भीतर से आग की लपटों में प्रभु का दूत उसे दिखाई दिया। मूसा ने देखा कि यद्यपि झाड़ी में आग लगी थी, वह नहीं जली। इसलिए, मूसा ने सोचा, 'मैं ऊपर जाकर यह अजीब दृश्य देखूंगा- झाड़ी क्यों नहीं जलती।' जब यहोवा ने देखा, कि वह देखने के लिये ऊपर गया है, तब हे परमेश्वर(एलोहीम) उसे झाड़ी के भीतर से पुकारा, 'मूसा! मूसा!' और मूसा ने कहा, मैं यहां हूँ। (निर्ग 3:1-4)

बिहान को बिलाम उठा, और अपने गदहे पर काठी बान्धी, और मोआब के हाकिमोंके संग चला। परन्तु जब वह गया तो परमेश्वर बहुत क्रुद्ध हुआ, और यहोवा का दूत उसका विरोध करने को मार्ग

*Balaam got up in the morning, saddled his donkey and went with the princes of Moab. But God was very angry when he went, and the angel of the Lord stood in the road to oppose him. Balaam was riding on his donkey, and his two servants were with him. When the donkey saw the angel of the Lord standing in the road with a drawn sword in his hand, she turned off the road into a field. Balaam beat her to get her back on the road. Then the angel of the Lord stood in a narrow path between two vineyards, with walls on both sides. When the donkey saw the angel of the Lord, she pressed close to the wall, crushing Balaam's foot against it. So, he beat her again. Then the angel of the Lord moved on ahead and stood in a narrow place where there was no room to turn, either to the right or to the left. When the donkey saw the angel of the Lord, she lay down under Balaam, and he was angry and beat her with his staff. Then the Lord opened the donkey's mouth, and she said to Balaam, 'What have I done to you to make you beat me these three times?'" (Num 22:21-28)*

God also manifested Himself again in the form of finger of the hand writing on the wall in Babylon before King Belshazzar. (Daniel 5:5)

#### Questions

1. Through the Word (God) all things were made.  
True \_\_\_ False \_\_\_
2. The Word became flesh (human).  
True \_\_\_ False \_\_\_
3. The Lord, Jehovah, the I AM, appeared to Abraham.  
True \_\_\_ False \_\_\_
4. God called to Moses at the burning bush.  
True \_\_\_ False \_\_\_
5. God was manifested by the finger writing on Belshazzar's wall.  
True \_\_\_ False \_\_\_

#### Chapter 2

### Prophecies About Jesus, the Son of the Living God

There are many Old Testament prophecies concerning Jesus. But what were the possibilities of making just

पर खड़ा हो गया। बिलाम अपने गदहे पर सवार था, और उसके दो सेवक उसके संग थे। जब गदही ने यहोवा के दूत को हाथ में नंगी तलवार लिए हुए सड़क पर खड़ा देखा, तब वह मार्ग को मोड़कर मैदान में बदल गई। बिलाम ने उसे सड़क पर वापस लाने के लिए पीटा। तब यहोवा का दूत दाख की बारियों के बीच एक संकरे मार्ग में खड़ा हुआ, जिसके दोनों ओर शहरपनाह थी। जब गदही ने यहोवा के दूत को देखा, तब वह बिलाम के पांव को कुचलते हुए दीवार से सट गई। इसलिए उसने उसे फिर से पीटा। तब यहोवा का दूत आगे बढ़कर एक संकरे स्थान पर खड़ा हो गया, जहां न तो दाहिनी ओर मुड़ने की जगह थी और न बाईं ओर। जब गधे ने यहोवा के दूत को देखा, वह बिलाम के नीचे लेट गई, और उस ने क्रोधित होकर अपक्की लाठी से उसको पीटा। तब यहोवा ने गदही का मुंह खोला, और उस ने बिलाम से कहा, मैं ने तुझ से ऐसा क्या किया है कि तू मुझे तीन बार मार डाले? (गिनती 22:21-28)

परमेश्वर ने भी स्वयं को राजा बेलशस्सर के सामने बाबुल में दीवार पर लिखी हाथ की उँगली के रूप में फिर से प्रकट किया। (दानियेल 5:5)

#### प्रश्न

6. शब्द (भगवान) के माध्यम से सभी चीजें बनाई गईं।  
सही गलत \_\_\_
7. शब्द मांस (मानव) बन गया।  
सही गलत \_\_\_
8. यहोवा, यहोवा, मैं हूँ, इब्राहीम को दिखाई दिया।  
सही गलत \_\_\_
9. परमेश्वर ने मूसा को जलती हुई झाड़ी के पास बुलाया।  
सही गलत \_\_\_
10. बेलशस्सर की शहरपनाह पर उँगली लिखने से परमेश्वर प्रकट हुआ।  
सही गलत \_\_\_

#### अध्याय 2

### जीवित परमेश्वर के पुत्र यीशु के बारे में भविष्यवाणियां

यीशु के विषय में पुराने नियम की कई भविष्यवाणियाँ हैं। लेकिन किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सिर्फ 25 भविष्यवाणियां करने की क्या संभावनाएं थीं जो कई साल बाद पैदा होने वाले थे और इन भविष्यवाणियों के सच होने की क्या संभावना थी?

डॉ. हॉले ओ. टेलर ने यह उत्तर प्रदान किया है: यदि इस्राएल के मसीहा के आने वाली घटनाओं की भविष्यवाणी की जाती है, तो सभी घटनाओं को एक व्यक्ति में पूरा करने की कुल संभावना 33 मिलियन होगी।

25 predictions about someone who was to be born many years later and having these predictions come true?

Dr. Hawley O. Taylor has provided this answer: If the events foretold for Israel's Messiah who was to come, then the overall probability that all n events would find their fulfillment in one person would be 33 million. Even if the prophecy regarding the virgin birth be excluded, the number remains astronomically large. Too large to assume that this accidentally happened! Dr. Taylor's statement is provided in Appendix A prior to a list of over 60 prophecies and their fulfillment. This is only one of the proofs that Jesus was who He claimed to be, God in the form of Jesus.

Here are just a few of over 60 prophecies and their fulfillment.

**Jeremiah 23:5** - "Behold, the days are coming, declares the LORD, when I will raise up for David a righteous Branch, and he shall reign as king and deal wisely, and shall execute justice and righteousness in the land."

**Matthew 1:1** - "This is a record of the life of Jesus the Messiah, the son of David, the son of Abraham."

**Luke 3:23-38** - Luke traced the genealogy of Jesus back through David all the way to Adam.

**Zechariah 9:9** - "Rejoice greatly, O daughter of Zion! Shout aloud, O daughter of Jerusalem! Behold, your king is coming to you; righteous and having salvation is he, humble and mounted on a donkey, on a colt, the foal of a donkey."

**Matthew 21:6-7** - "And the disciples went, and did even as Jesus appointed them, and brought the ass, and the colt, and put on them their garments; and he sat thereon."

**Isaiah 53:5** - "But he was wounded for our transgressions, he was bruised for our iniquities; the chastisement of our peace was upon him; and with his stripes we are healed."

**Matthew 27:26** - "Then released he unto them Barabbas; but Jesus he scourged and delivered to be crucified."

**Isaiah 53:7** - "He was oppressed, and he was afflicted, yet he opened not his mouth; like a lamb that is led to the slaughter, and like a sheep that before its shearers is silent, so he opened not his mouth."

**Matthew 27:12-14** - "While Jesus was being accused by the high priests and elders, he made no reply. Then Pilate asked him, 'Don't you hear how many charges they're bringing against you?' But Jesus did not reply at all, so that the governor was very surprised."

भले ही कुंवारी जन्म के बारे में भविष्यवाणी को बाहर कर दिया जाए, यह संख्या खगोलीय रूप से बड़ी है। यह मान लेना बहुत बड़ा है कि यह गलती से हुआ! 60 से अधिक भविष्यवाणियों और उनकी पूर्ति की सूची से पहले डॉ टेलर का बयान परिशिष्ट ए में दिया गया है। यह केवल एक प्रमाण है कि यीशु वह था जिसे उसने यीशु के रूप में परमेश्वर होने का दावा किया था।

यहाँ 60 से अधिक भविष्यवाणियों में से कुछ और उनकी पूर्ति हैं।

**यिर्मयाह 23:5** - "देख, यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आनेवाले हैं, जब मैं दाऊद के लिथे एक धर्मी डाली उठाऊंगा, और वह राजा होकर बुद्धिमानी से राज्य करेगा, और देश में न्याय और धर्म के काम करेगा।"

**मत्ती 1:1** - "यह इब्राहीम के पुत्र दाऊद के पुत्र यीशु मसीह के जीवन का अभिलेख है।"

**लूका 3:23-38** - लूका ने दाऊद के माध्यम से आदम तक यीशु की वंशावली का पता लगाया।

**जकर्याह 9:9** - "हे सिंघोन की पुत्री, अति आनन्दित हो! हे यरूशलेम की पुत्री, ऊँचे स्वर से चिल्लाओ! देख, तेरा राजा तेरे पास आ रहा है; वह धर्मी और उद्धार पाने वाला है, वह दीन और गदहे पर, और बछेड़े पर सवार, और गदहे का बच्चा है।"

**मत्ती 21:6-7** - "और चेलों ने जाकर वैसा ही किया जैसा यीशु ने उन्हें ठहराया, और गदहे और गदहे को ले जाकर अपने अपने वस्त्र पहिना लिए; और वह उस पर बैठ गया।"

**यशायाह 53:5** - "परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल हुआ, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया; हमारी शान्ति की ताड़ना उस पर थी; और उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जाते हैं।"

**मत्ती 27:26** - "तब उस ने बरअब्बा को उनके लिये छोड़ दिया; परन्तु यीशु ने कोड़े मारे, और क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिये छुड़ाया।"

**यशायाह 53:7** - "उस पर अन्धेर किया गया, और वह दुःखित हुआ, तौभी उस ने अपना मुंह न खोला; उस मेम्ने की नाई जो वध करने के लिये ले जाया जाता है, और उस भेड़ की नाई जो अपने ऊन कतरनेवालोंके साम्हने चुप रहती है, सो उस ने अपना मुंह न खोला।"

**मत्ती 27:12-14** - "जबकि यीशु पर महायाजकों और पुरनियों द्वारा आरोप लगाया जा रहा था, उसने कोई उत्तर नहीं दिया। तब पीलातुस ने उससे पूछा, 'क्या तुम नहीं सुनते कि वे तुम पर कितने आरोप लगा रहे हैं?' परन्तु यीशु ने कुछ उत्तर न दिया, यहां तक कि राज्यपाल को बहुत आश्चर्य हुआ।"

**यशायाह 53:9** - "और उन्होंने दुष्टों के साथ उसकी कब्र बनाई, और एक अमीर आदमी की मृत्यु के साथ, हालांकि उसने कोई हिंसा नहीं की थी, और उसके मुंह में कोई छल नहीं था।"

**मत्ती 27:57-59** - "उस शाम के बाद, अरिमथिया से एक अमीर आदमी आया। उसका नाम यूसुफ था, और वह यीशु का चेला बन गया था। वह पीलातुस के पास गया और उसने यीशु की लाश मांगी, और पीलातुस ने उसे करने का आदेश दिया। सो यूसुफ ने लोय को ले लिया और उसे एक साफ सनी के कपड़े में लपेट

**Isaiah 53:9** – “And they made his grave with the wicked and with a rich man in his death, although he had done no violence, and there was no deceit in his mouth.”

**Matthew 27:57-59** – “Later that evening, a rich man arrived from Arimathea. His name was Joseph, and he had become a disciple of Jesus. He went to Pilate and asked for the body of Jesus, and Pilate ordered it to be done. So, Joseph took the body and wrapped it in a clean linen cloth. Then he placed it in his own new tomb, which he had cut out of the rock. After rolling a large stone across the door of the tomb, he left.”

**Isaiah 61:1-2** - "The Spirit of the LORD is upon me, because the LORD has anointed me; he has sent me to bring good news to the oppressed and to bind up the brokenhearted, to proclaim freedom for the captives, and release from darkness for the prisoners; to proclaim the year of the LORD's favor,"

**Luke 4:16-19: 21** – “And He came to Nazareth, where He had been brought up; and as was His custom, He entered the synagogue on the Sabbath, and stood up to read. And the book of the prophet Isaiah was handed to Him. And He opened the book and found the place where it was written:

‘The spirit of the lord is upon me, because he anointed me to preach the gospel to the poor. He has sent me to proclaim release to the captives, and recovery of sight to the blind, to set free those who are oppressed, to proclaim the favorable year of the lord.’

“Today this Scripture has been fulfilled in your hearing.”

#### Questions

1. There are over 60 prophecies about the Messiah.  
True \_\_\_ False \_\_\_
2. The probability of prophecies about the Messiah being fulfilled in one person is astronomical.  
True \_\_\_ False \_\_\_
3. In Nazareth Jesus said the prophecies were fulfilled in Him.  
True \_\_\_ False \_\_\_

#### Chapter 3

### Birth and Early Life of Jesus

God through the prophet Isaiah stated *"The Lord himself will give you a sign: The virgin will be with child and will give birth to a son, and will call him Immanuel."* (Isaiah 7:14)

God did not manifest Himself as the promised Messiah, instead He came in human form by action of the Spirit of God.

दिया। फिर उस ने उसे अपक्की नई कब्र में रखा, जिसे उस ने चट्टान में से काटकर बनाया था। कब्र के द्वार पर एक बड़ा पत्थर लुढ़क कर वह चला गया।”

**यशायाह 61:1-2** - "यहोवा का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि यहोवा ने मेरा अभिषेक किया है; उसने मुझे दीन लोगों को सुसमाचार सुनाने, और टूटे मनवालों को बान्धने, और बन्धुओं को स्वतन्त्रता का प्रचार करने, और बन्दियों को अन्धकार से छुड़ाने के लिए भेजा है।, यहोवा के अनुग्रह के वर्ष का प्रचार करने के लिथे,”

**लुका 4:16-19; 21** - "और वह नासरत में आया, जहां उसका पालन-पोषण हुआ था; और अपनी रीति के अनुसार सब्त के दिन आराधनालय में जा कर पढ़ने को खड़ा हुआ। और यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक उसे सौंप दी गई। और उस ने पुस्तक खोली, और वह स्थान पाया जहां लिखा था:

‘प्रभु की आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उसने गरीबों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है। उस ने मुझे बन्धुओं को छुड़ाने का, और अन्धे को दृष्टि की प्राप्ति की घोषणा करने के लिथे भेजा है, कि उत्पीड़ितों को छुड़ाऊं, और प्रभु के अनुकूल वर्ष का प्रचार करूं।’

“आज यह पवित्रशास्त्र तुम्हारे सुनने में पूरा हुआ है।”

#### प्रश्न

4. मसीहा के बारे में 60 से अधिक भविष्यवाणियां हैं।  
सही गलत \_\_\_
5. एक व्यक्ति में मसीहा के पूरा होने के बारे में भविष्यवाणियों की संभावना खगोलीय है।  
सही गलत \_\_\_
6. नासरत में यीशु ने कहा कि भविष्यवाणियाँ उसमें पूरी हुईं।  
सही गलत \_\_\_

#### अध्याय 3

### यीशु का जन्म और प्रारंभिक जीवन

भविष्यद्वक्ता यशायाह के माध्यम से परमेश्वर ने कहा, "यहोवा स्वयं तुम्हें एक चिन्ह देगा: कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी, और उसे इम्मानुएल कहेगी।" (यशायाह 7:14)

परमेश्वर ने स्वयं को प्रतिज्ञा किए हुए मसीहा के रूप में प्रकट नहीं किया, बल्कि वह परमेश्वर की आत्मा के कार्य के द्वारा मानव रूप में आया।

“छठे महीने में, परमेश्वर ने स्वर्गदूत जिब्राईल को गलील के एक नगर नासरत में एक कुंवारी कन्या के पास भेजा, जो दाऊद के वंशज यूसुफ नाम के एक व्यक्ति से विवाह करने की प्रतिज्ञा की थी। कुंवारी का नाम मरियम था। फ़रिश्ता उसके पास गया और कहा, “नमस्कार, हे अति कृपालु! यहोवा तुम्हारे साथ है।” मैरी उसकी बातों से बहुत परेशान थी और सोच रही थी कि यह किस तरह का अभिवादन हो सकता है। परन्तु स्वर्गदूत ने उस से कहा, मत डर, मरियम, तू पर परमेश्वर का अनुग्रह पाया गया है। तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा, और तू उसका नाम यीशु रखना। वह महान होगा, और

*"In the sixth month, God sent the angel Gabriel to Nazareth, a town in Galilee, to a virgin pledged to be married to a man named Joseph, a descendant of David. The virgin's name was Mary. The angel went to her and said, "Greetings, you who are highly favored! The Lord is with you." Mary was greatly troubled at his words and wondered what kind of greeting this might be. But the angel said to her, "Do not be afraid, Mary, you have found favor with God. You will be with child and give birth to a son, and you are to give him the name Jesus. He will be great and will be called the Son of the Most-High. The Lord God will give him the throne of his father David, and he will reign over the house of Jacob forever; his kingdom will never end." "How will this be," Mary asked the angel, "since I am a virgin?" The angel answered, "The Holy Spirit will come upon you, and the power of the Most-High will overshadow you. So, the holy one to be born will be called the Son of God." (Luke 1:26-35)*

*"In those days Caesar Augustus issued a decree that a census should be taken of the entire Roman world. (This was the first census that took place while Quirinius was governor of Syria.) And everyone went to his own town to register. So, Joseph also went up from the town of Nazareth in Galilee to Judea, to Bethlehem the town of David, because he belonged to the house and line of David. He went there to register with Mary, who was pledged to be married to him and was expecting a child. While they were there, the time came for the baby to be born, and she gave birth to her firstborn, a son. She wrapped him in cloths and placed him in a manger, because there was no room for them in the inn." (Luke 2:1-7)*

*"His mother Mary was pledged to be married to Joseph, but before they came together, she was found to be with child through the Holy Spirit. Because Joseph her husband was a righteous man and did not want to expose her to public disgrace, he had in mind to divorce her quietly. But after he had considered this, an angel of the Lord appeared to him in a dream and said, 'Joseph son of David, do not be afraid to take Mary home as your wife, because what is conceived in her is from the Holy Spirit. She will give birth to a son, and you are to give him the name Jesus, because he will save his people from their sins. All this took place to fulfill what the Lord had said through the prophet:*

करेगा परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा। यहोवा परमेश्वर उसे उसके पिता दाऊद का सिंहासन देगा, और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; उसका राज्य कभी समाप्त न होगा। "यह कैसे होगा," मैरी ने स्वर्गदूत से पूछा, "जब से मैं कुंवारी हूँ?" (लूका 1:26-35)

"उन दिनों सीज़र ऑगस्टस ने एक फरमान जारी किया कि पूरे रोमन दुनिया की जनगणना की जानी चाहिए। (यह पहली जनगणना थी जो सीरिया के राज्यपाल के समय हुई थी।) और सभी अपने-अपने शहर में पंजीकरण कराने गए। सो यूसुफ भी गलील के नासरत नगर से यहूदिया को गया, और दाऊद के नगर बेतलेहेम को गया, क्योंकि वह दाऊद के घराने और वंश का था। वह वहाँ मरियम के साथ पंजीकरण कराने गया, जिसने उससे शादी करने का वचन दिया था और एक बच्चे की उम्मीद कर रही थी। जब वे वहाँ थे, तब बच्चे के जन्म का समय आया, और उसने अपने पहलौठे पुत्र को जन्म दिया। उसने उसे कपड़े में लपेटा और एक चरनी में रखा, क्योंकि सराय में उनके लिए कोई जगह नहीं थी। (लूका 2:1-7)

"उसकी माता मरियम को यूसुफ से ब्याह करने का वचन दिया गया था, परन्तु उनके इकट्ठे होने से पहिले ही, वह पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भवती पाई गई। क्योंकि यूसुफ उसका पति एक धर्मी व्यक्ति था और वह उसे सार्वजनिक अपमान के लिए बेनकाब नहीं करना चाहता था, उसके मन में उसे चुपचाप तलाक देने का था। परन्तु यह सोचकर, यहोवा का एक दूत उसे स्वप्न में दिखाई दिया, और कहा, हे दाऊद के पुत्र यूसुफ, मरियम को अपक्की पत्नी होने के लिये घर ले जाने से मत डर, क्योंकि जो उसके गर्भ में है वह पवित्र आत्मा की ओर से है। वह एक पुत्र को जन्म देगी, और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा। यह सब उस बात को पूरा करने के लिए हुआ जो प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के माध्यम से कही थी: "कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी, और वे उसे इम्मानुएल कहेंगे - जिसका अर्थ है, भगवान हमारे साथ।" (मत्ती 1:18-23) भविष्यवाणियों के लिए परिशिष्ट ए देखें।

### जन्म

"उन दिनों सीज़र ऑगस्टस ने एक फरमान जारी किया कि पूरे रोमन दुनिया की जनगणना की जानी चाहिए। (यह पहली जनगणना थी जो सीरिया के राज्यपाल के समय हुई थी।) और सभी अपने-अपने शहर में पंजीकरण कराने गए। सो यूसुफ भी गलील के नासरत नगर से यहूदिया को गया, और दाऊद के नगर बेतलेहेम को गया, क्योंकि वह दाऊद के घराने और वंश का था। वह वहाँ मरियम के साथ पंजीकरण कराने गया, जिसने उससे शादी करने का वचन दिया था और एक बच्चे की उम्मीद कर रही थी। जब वे वहाँ थे, तब बच्चे के जन्म का समय आया, और उसने अपने पहलौठे पुत्र को जन्म दिया। उसने उसे कपड़े में लपेटा और एक चरनी में रखा, क्योंकि सराय में उनके लिए कोई जगह नहीं थी। (लूका 2:1-7)



“The virgin will be with child and will give birth to a son, and they will call him Immanuel’ - which means, God with us.” (Matthew 1:18-23) Refer to Appendix A for prophecies.

### Birth

“In those days Caesar Augustus issued a decree that a census should be taken of the entire Roman world. (This was the first census that took place while Quirinius was governor of Syria.) And everyone went to his own town to register. So, Joseph also went up from the town of Nazareth in Galilee to Judea, to Bethlehem the town of David, because he belonged to the house and line of David. He went there to register with Mary, who was pledged to be married to him and was expecting a child. While they were there, the time came for the baby to be born, and she gave birth to her firstborn, a son. She wrapped him in cloths and placed him in a manger, because there was no room for them in the inn.” (Luke 2:1-7)

### Escape to Egypt

“After Jesus was born in Bethlehem in Judea, during the time of King Herod, Magi (wise men) from the east came to Jerusalem and asked, ‘Where is the one who has been born king of the Jews? We saw his star in the east and have come to worship him.’ When King Herod heard this he was disturbed, and all Jerusalem with him.” (Matthew 2:1-3)

“And having been warned in a dream not to go back to Herod, they returned to their country by another route. When they had gone, an angel of the Lord appeared to Joseph in a dream. ‘Get up,’ he said, “take the child and his mother and escape to Egypt. Stay there until I tell you, for Herod is going to search for the child to kill him.” (Matthew 2:12-13)

### Returning Home to Nazareth

“After Herod died, an angel of the Lord appeared in a dream to Joseph in Egypt and said, ‘Get up, take the child and his mother and go to the land of Israel, for those who were trying to take the child's life are dead.’ So, he got up, took the child and his mother and went to the land of Israel. But when he heard that Archelaus was reigning in Judea in place of his father Herod, he was afraid to go there. Having been warned in a dream, he withdrew to the district of Galilee, and he went and lived in a town called Nazareth. So was fulfilled what was said through the prophets: “He will be called a Nazarene.” (Matthew 2:19-23)

### Youth

“Every year his parents went to Jerusalem for the

### मिस्र के लिए पलायन

“यीशु के यहूदिया में बेटलेहेम में पैदा होने के बाद, राजा हेरोदेस के समय में, पूर्व से मागी (बुद्धिमान पुरुष) यरूशलेम आए और पूछा, 'यहूदियों के राजा का जन्म कहां हुआ है? हमने पूर्व में उसका तारा देखा और उसकी पूजा करने आए हैं।' जब हेरोदेस राजा ने यह सुना तो वह और उसके साथ सारा यरूशलेम घबरा गया।” (मत्ती 2:1-3)

“और स्वप्न में चितौनी पाकर कि हेरोदेस के पास फिर न जाना, वे दूसरे मार्ग से अपने देश को लौट गए। जब वे चले गए, तब यहोवा का एक दूत यूसुफ को स्वप्न में दिखाई दिया। 'उठ,' उसने कहा, 'बच्चे और उसकी माँ को ले जाओ और मिस्र को भाग जाओ। जब तक मैं तुझ से न कहूँ, तब तक वहीं रहना, क्योंकि हेरोदेस उस बालक को घात करने के लिये ढूँढ़ने पर है।’” (मत्ती 2:12-13)

### नासरत में घर वापसी

“हेरोदेस के मरने के बाद, यहोवा का एक दूत मिस्र में यूसुफ को स्वप्न में दिखाई दिया, और कहा, उठ, बालक और उसकी माता को लेकर इस्राएल देश में चला जा, क्योंकि जो बालक का प्राण लेना चाहते थे वे हैं मृत।’ सो वह उठा, और बालक और उसकी माता को लेकर इस्राएल देश को चला गया। परन्तु जब उसने सुना कि अखिलौस अपने पिता हेरोदेस के स्थान पर यहूदिया में राज्य कर रहा है, तो वह वहाँ जाने से डर गया। स्वप्न में चितौनी पाकर वह गलील देश को चला गया, और जाकर नासरत नाम के नगर में रहने लगा। भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा जो कहा गया था, वह पूरा हुआ: “वह नासरी कहलाएगा।” (मत्ती 2:19-23)

### युवा

“हर वर्ष उसके माता-पिता फसह के पर्व के लिये यरूशलेम जाते थे। जब वह बारह वर्ष का हुआ, तब वे रीति के अनुसार पर्व पर गए। पर्व समाप्त होने के बाद, जब उसके माता-पिता घर लौट रहे थे, लड़का यीशु पीछे यरूशलेम में रहा, लेकिन वे इससे अनजान थे। यह सोचकर कि वह उनकी कंपनी में है, उन्होंने एक दिन के लिए यात्रा की। फिर वे उसे अपने सम्बन्धियों और मित्रों के बीच ढूँढ़ने लगे। जब वे उसे न पा सके, तो उसे ढूँढ़ने के लिए यरूशलेम को लौट गए। तीन दिन के बाद उन्होंने उसे मन्दिर के आंगनों में शिक्षकों के बीच बैठे, उनकी बातें सुनते और उनसे प्रश्न करते हुए पाया। हर कोई जिसने उसे सुना वह उसकी समझ और उसके उत्तरों से चकित था। जब उसके माता-पिता ने उसे देखा, तो वे चकित रह गए। उसकी माँ ने उससे कहा, 'बेटा, तुमने हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया? तुम्हारे पिता और मैं बड़ी उत्सुकता से तुम्हें ढूँढ़ रहे थे।' 'तुम मुझे क्यों ढूँढ़ रहे थे?' उसने पूछा। 'क्या आप नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के घर (व्यवसाय) में रहना है?' तब वह उनके साथ नासरत को गया और उनकी आज्ञा मानता रहा। लेकिन उसकी माँ ने इन सब बातों को अपने दिल में संजो कर रखा था। और यीशु बुद्धि और डील-डौल में, और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया।” (लूका 2:41-52)

### निष्कर्ष

*Feast of the Passover. When he was twelve years old, they went up to the Feast, according to the custom. After the Feast was over, while his parents were returning home, the boy Jesus stayed behind in Jerusalem, but they were unaware of it. Thinking he was in their company, they traveled on for a day. Then they began looking for him among their relatives and friends. When they did not find him, they went back to Jerusalem to look for him. After three days they found him in the temple courts, sitting among the teachers, listening to them and asking them questions. Everyone who heard him was amazed at his understanding and his answers. When his parents saw him, they were astonished. His mother said to him, 'Son, why have you treated us like this? Your father and I have been anxiously searching for you'. 'Why were you searching for me?' he asked. 'Didn't you know I had to be in my Father's house (business)?' Then he went down to Nazareth with them and was obedient to them. But his mother treasured all these things in her heart. And Jesus grew in wisdom and stature, and in favor with God and men." (Luke 2:41-52)*

### **Conclusion**

One of the most profound truths revealed in the Bible is that Jesus of Nazareth, born over 2,000 years ago in Bethlehem, was and is God! When he was born it was to a virgin and the angel who announced his conception said he would be called Immanuel, meaning, "God with us". Of his entrance into the world, it was written: "In the beginning was the Word, and the Word was with God, and the Word was God ... And the Word became flesh and dwelt among us, and we beheld His glory, the glory as of the only begotten of the Father, full of grace and truth." (1 John 1:1, 14) When Philip asked him "Lord, show us the Father", Jesus replied: "Have I been with you so long, and yet you have not known Me, Philip? He who has seen Me has seen the Father." Surely, we recognize our fragile and humble state as human beings, but God considered us to be of such great value that He visited us! Do you want to see God? Look at Jesus! Jesus was God who came to be with us in a very personal and comforting way.

But Jesus went away. Can it be that God is still with us? The Bible answer is a clearly - Yes! But how so? It is through his Spirit. Listen to Jesus' words from John 14: "And I will pray the Father, and He will give you another Helper, that He may abide with you forever; the Spirit of truth ... you know Him, for He dwells with you and will be in you." "If anyone loves Me, he will keep My word; and My Father will love him, and We will come to him and make Our home with him."

बाइबल में प्रकट किए गए सबसे गहरे सत्यों में से एक यह है कि नासरत का यीशु, 2,000 साल पहले बेथलहम में पैदा हुआ, परमेश्वर था और है! जब वह पैदा हुआ था तो वह एक कुंवारी थी और उसके गर्भाधान की घोषणा करने वाले स्वर्गदूत ने कहा कि उसे इम्मानुएल कहा जाएगा, जिसका अर्थ है, "भगवान हमारे साथ"। संसार में उसके प्रवेश के बारे में लिखा था: "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था ... और वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में रहा, और हम ने उसकी महिमा, महिमा को देखा पिता के एकलौते के रूप में, अनुग्रह और सच्चाई से भरा हुआ।" (1 यूहन्ना 1:1, 14) जब फिलिप्पुस ने उससे पूछा, "हे प्रभु, हमें पिता दिखा", यीशु ने उत्तर दिया: "क्या मैं तुम्हारे साथ इतने लंबे समय तक रहा, और तौभी तुम ने मुझे नहीं जाना, फिलिप्पुस? जिसने मुझे देखा है, उसने पिता को देखा।" निश्चय ही हम अपनी नाजुक और विनम्र अवस्था को मनुष्य के रूप में पहचानते हैं, लेकिन भगवान ने हमें इतना बड़ा मूल्य माना कि उन्होंने हमसे मुलाकात की! क्या आप भगवान को देखना चाहते हैं? यीशु को देखो! यीशु परमेश्वर थे जो हमारे साथ एक बहुत ही व्यक्तिगत और दिलासा देने वाले तरीके से आए।

लेकिन यीशु चला गया। क्या ऐसा हो सकता है कि भगवान अभी भी हमारे साथ है? बाइबल का उत्तर स्पष्ट है - हाँ! लेकिन ऐसा कैसे? यह उसकी आत्मा के माध्यम से है। यूहन्ना 14 से यीशु के शब्दों को सुनें: "और मैं पिता से प्रार्थना करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह तुम्हारे साथ सदा बना रहे; सत्य की आत्मा ... तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और रहेगा मे तुम्हें।" "यदि कोई मुझ से प्रेम रखता है, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उस से प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएं, और उसके साथ अपना घर बनाएं।"

निष्कर्ष अपरिहार्य है। हमारे सृष्टिकर्ता परमेश्वर ने हमारे बारे में इतना सोचा कि वह हमारी मदद करने के लिए मानव रूप में पृथ्वी पर आए। हमने उसे नासरत का यीशु कहा। वह यहां अपना मिशन पूरा करने के बाद स्वर्ग लौट आया लेकिन हमारी मदद करने के लिए पवित्र आत्मा को भेजा। और इसलिए आज, परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा हमारे भीतर अपना घर बनाना चाहते हैं। वे व्यक्तिगत रूप से आप में निवास करना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि हम उनके जीवन में भाग लें।

मसीह का जीवन वह जीवन है जिसे यीशु जीया और जिस तरह का जीवन हम भी उसकी सहायता से जी सकते हैं, यदि हम चाहें। मत्ती 5 में, यीशु हमें एक आत्म-चित्रण के बराबर बताते हैं। ये ऐसे गुण हैं जो हर ईसाई में होने चाहिए और उनमें हो सकते हैं: नम्रता, करुणा, नम्रता, धार्मिकता, दया, शांति और विश्वास। यह कोई सूची नहीं है जहां आप अपनी व्यक्तिगत पसंद या झुकाव के अनुसार चुन सकते हैं और चुन सकते हैं।

### **प्रश्न**

6. परमेश्वर ने स्वयं को मसीहा के रूप में प्रकट नहीं किया बल्कि वह मानव बन गया।  
सही गलत \_\_\_\_\_
7. पवित्र आत्मा की शक्ति ने कुंवारी मरियम को ढाँक दिया जिससे वह यीशु को धारण कर सकी।  
सही गलत \_\_\_\_\_

The conclusion is inescapable. God our Creator thought so much of us that He came to earth in human form to help us. We called him Jesus of Nazareth. He returned to heaven after completing his mission here but sent the Holy Spirit to help us. And so today, God the Father, the Son and the Holy Spirit want to make their home within us. They want to personally reside in you. They want us to participate in their life. The life of Christ is the life that Jesus lived and the kind of life we also can live with His help, if we want to.

In Matthew 5, Jesus gives us what amounts to a self-portrait. These are traits every Christian should and could possess: humility, compassion, meekness, righteousness, mercy, peacemaking and faithfulness. This is not a list where you can pick and choose, according to your personal preference or inclination.

#### Questions

1. God did not manifest Himself as the Messiah instead He became human.  
True \_\_\_ False\_\_\_
2. The power of the Holy Spirit overshadowed the virgin Mary causing her to bear Jesus.  
True \_\_\_ False\_\_\_
3. Jesus was born in Bethlehem as prophesied.  
True \_\_\_ False\_\_\_
4. Jesus told Philip "he who has seen Me has seen the Father".  
True \_\_\_ False\_\_\_
5. Every Christian, His church, should possess humility, meekness, righteousness, mercy and faithfulness.  
True \_\_\_ False\_\_\_

#### Chapter 4

### Growing in Favor with God and Man

By the life Jesus lived all could see the nature of God in Him.

#### Jesus was Humble

The opposite of humility is self-centeredness, or pride. This is the basic characteristic of a mindset influenced and controlled by Satan: e.g., "a proud look is an abomination to the LORD." God promises to "destroy the house of the proud," ... "A haughty look, a proud heart ... are sin." (Proverbs 5:16-17 ... 15:25)

Pride says: "Don't tell me anything. I already know it all." Humility says: "Thanks for your advice and help."

8. भविष्यवाणी के अनुसार यीशु का जन्म बेतलेहेम में हुआ था।  
सही गलत\_\_\_
9. यीशु ने फिलिप्पुस से कहा, "जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है।"  
सही गलत\_\_\_
10. प्रत्येक ईसाई, उसके चर्च में विनम्रता, नम्रता, धार्मिकता, दया और विश्वास होना चाहिए।  
सही गलत\_\_\_

#### अध्याय 4

### भगवान और मनुष्य के पक्ष में बढ़ रहा है

यीशु के जीवन से सभी उसमें परमेश्वर के स्वरूप को देख सकते थे।

#### यीशु विनम्र था

नम्रता के विपरीत आत्मकेंद्रितता, या अभिमान है। यह शैतान द्वारा प्रभावित और नियंत्रित मानसिकता की मूल विशेषता है: उदाहरण के लिए, "एक अभिमानी नज़र यहोवा के लिए घृणित है।" परमेश्वर "अभिमानियों के घर को नाश" करने की प्रतिज्ञा करता है... "घमण्डी दृष्टि, घमण्डी मन... पाप हैं।" (नीतिवचन 5:16-17 ... 15:25)

गौरव कहता है: "मुझे कुछ मत कहो। मुझे यह सब पहले से ही पता है।" नम्रता कहती है: "आपकी सलाह और मदद के लिए धन्यवाद।"

गौरव कहता है: "मुझे चाहिए, मुझे चाहिए, मैं लायक हूँ।" नम्रता कहती है: "उसे चाहिए, वे चाहते हैं, आप योग्य हैं।"

घमण्ड कहता है: "परमेश्वर, मैं अपने संगी मनुष्य से बहुत बेहतर हूँ।" नम्रता कहती है: "हे पापी, यहोवा मुझ पर दया कर।"

गर्व दूसरों को नीचा दिखाने के लिए उनकी आलोचना करता है। नम्रता दूसरों का निर्माण करने के लिए उनकी प्रशंसा करती है।

गौरव कहता है: "मैं सब कुछ कर सकता हूँ।" नम्रता कहती है: "जो मुझे सामर्थ देता है, उसके द्वारा मैं सब कुछ कर सकता हूँ।"

यीशु में हम एक ऐसे व्यक्ति को देखते हैं जिसने अपने आप को अपने युग के पददलितों के लिए दे दिया। वह कार्यकर्ताओं और मछुआरों से जुड़े। उसने मिश्रित जाति की महिला के उसी प्याले से पिया जो धार्मिक लोगों द्वारा इतनी तिरस्कृत और अस्वीकार की गई थी। यीशु ने नम्रता की अपनी आत्मा तब दिखाई, जब उसने प्रत्येक नगर में प्रवेश करके कोढ़ियों के अशुद्ध शरीरों और गूंगा बहरों की जीभों को छुआ। वह उन लोगों की देखभाल करता था जिनके पास दुष्टात्माएँ थीं जिनके

Pride says: "I need, I want, I deserve." Humility says: "He needs, they want, you deserve."

Pride says: "God, I am so much better than my fellow man." Humility says: "Lord have mercy on me, a sinner."

Pride criticizes others to tear them down. Humility praises others in order to build them up.

Pride says: "I can do all things." Humility says: "I can do all things through Christ who strengthens me."

In Jesus we see a man who gave himself to the downtrodden of his age. He associated with workers and fishermen. He drank from the same cup of the mixed-race woman who was so despised and rejected by religious people. Jesus showed his spirit of humility when, entering in each city, he touched the unclean bodies of the lepers and the tongues of the deaf mutes. He cared for the demon possessed ones to whom others were so afraid to get near. He accepted the invitations to eat in the houses of "sinners" and "publicans" as well as Pharisees and hypocrites.

#### Jesus was dependent:

"The Son can do nothing of Himself, but what He sees the Father do." (John 5:19)

"I can of Myself do nothing." (John 5:30)

"For I have come down from heaven, not to do My own will, but the will of Him who sent Me." (John 6:38)

"I do not seek My own glory; there is One who seeks and judges." (John 8:50)

#### Jesus was a servant:

The Lord of all, taking a towel and water basin, kneeling before unworthy men to wash their dirty feet, including the friend who would soon betray him.

#### Jesus's life was simple:

They say that Alexander the Great entered India in a grand procession of 200 painted elephants, 200 soldiers on black horses and 200 lions surrounding him as he sat on a golden throne atop an ivory chariot proclaiming "I am the Lord of the universe. I conquered the world. Now I will conquer the stars". Alexander died at 33 and today owns nothing. But the King of kings and Lord of lords entered Jerusalem on a borrowed donkey.

#### Jesus was compassionate

The religious leaders of the Jews were mostly

पास जाने से दूसरे इतने डरते थे। उसने "पापियों" और "चुनाव लेने वालों" के साथ-साथ फरीसियों और पाखंडियों के घरों में खाने के निमंत्रण को स्वीकार किया।

#### यीशु निर्भर था:

"पुत्र अपने आप से कुछ नहीं कर सकता, परन्तु जो वह पिता को करते देखता है।" (यूहन्ना 5:19)

"मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता।" (यूहन्ना 5:30)

"क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजने वाले की इच्छा पूरी करने के लिए स्वर्ग से नीचे आया हूँ।" (यूहन्ना 6:38)

"मैं अपनी महिमा की खोज नहीं करता, एक है जो दृढ़ता और न्याय करता है।" (यूहन्ना 8:50)

#### यीशु एक सेवक था:

सब का प्रभु, एक तौलिया और पानी का कटोरा लेकर, अयोग्य पुरुषों के सामने घुटने टेककर अपने गंदे पैर धोता है, जिसमें वह दोस्त भी शामिल है जो जल्द ही उसे धोखा देगा।

#### यीशु का जीवन सरल था:

वे कहते हैं कि सिकंदर महान ने 200 चित्रित हाथियों, काले घोड़ों पर 200 सैनिकों और उसके चारों ओर 200 शेरों के एक भव्य जुलूस में भारत में प्रवेश किया, क्योंकि वह एक हाथी दांत के रथ के ऊपर एक स्वर्ण सिंहासन पर बैठा था और यह घोषणा कर रहा था कि "मैं ब्रह्मांड का भगवान हूँ। मैंने दुनिया को जीत लिया। अब मैं सितारों को जीत लूंगा"। सिकंदर की 33 वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई और आज उसके पास कुछ भी नहीं है। परन्तु राजाओं का राजा और प्रभुओं का यहोवा उधार के गदहे पर सवार होकर यरूशलेम में आया।

#### यीशु दयालु था

यहूदियों के धार्मिक नेता ज्यादातर फरीसी थे, एक ऐसा समूह जो अपने गर्व और आत्म-धार्मिकता के लिए जाना जाता था। क्या आपको मंदिर में फरीसी की प्रार्थना याद है? "भगवान, मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि मैं यहां मेरे बगल में इस सार्वजनिक पापी की तरह नहीं हूँ।" फरीसी "पवित्र किए हुए" थे। वे खुद को दूसरों से इतना श्रेष्ठ मानते थे कि वे एक "पापी" को भी नहीं छूते थे। हालाँकि, यीशु "पापियों का मित्र" कहने आया: "धन्य हैं वे जो रोते हैं"; अर्थात् जो करुणा से भरे हुए हैं, संवेदनशील हृदय वाले हैं, दुःखी हैं, जिनके हृदय दूसरों के दुखों से स्पर्शित हैं।

रोमन साम्राज्य "शायद सही करता है" के शासन से रहता था और जो आवाज सबसे जोर से बोलती थी वह थी तलवार। हमारे यीशु ने सिखाया: "धन्य हैं वे, जो नम्र हैं।"

फरीसियों ने विधवाओं के घर लूट लिए और ढोंग के लिए लंबी प्रार्थना की लेकिन यीशु ने कहा: "धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं।" वह हमेशा दुखी की हताश स्थिति से छुआ था। एक कोढ़ी उसके पास रोते हुए आया, "यदि तुम चाहो, तो तुम मुझे शुद्ध कर सकते हो।" (मरकुस 1:40) यीशु ने कोढ़ी की विनती सुनी, वह "गहराई से हिल

Pharisees, a group known for their pride and self-righteousness. Do you remember the prayer of the Pharisee in the temple? "*Lord, I thank you that I am not like this publican sinner here beside me.*"

The Pharisees were the "sanctified ones." They considered themselves so superior to others that they would not even touch a "sinner." Jesus, though, "the friend of sinners" came telling: "*Blessed are those who weep*"; that is, those filled with compassion, a sensitive heart, the contrite, those whose hearts are touched with the sorrows of others.

The Roman Empire lived by the rule of "might makes right" and the voice that spoke the loudest was the sword. Our Jesus taught: "Blessed are the meek."

The Pharisees robbed widows' houses and for pretense prayed long prayers but Jesus said: "*Blessed are those who hunger and thirst for righteousness.*"

He was always touched by the desperate situation of the sorrowful. A leper came to him crying, "*If you will, you can purify me.*" (Mark 1:40) Jesus heard the leper's plea, he was "deeply moved", he extended his hand, touched him and said: 'Be clean!'

He saw a widow at the burial of her only son. Seeing her grief, he had compassion on her and said, "Do not weep." He then proceeded to bring her son back to life. (Luke 7:13)

Jesus saw two blind men, "*touched their eyes and they immediately they received their sight.*" (Matthew 20:34)

Jesus' greatest compassion, though, is not for sick bodies but for sick souls. We read in Matthew 9:35-36 how Jesus felt compassion for the multitude who were like sheep without a shepherd, lost people, aimlessly wandering, not knowing what they were looking for, nor where they were headed.

Jesus, coming into his beloved city, Jerusalem, also wept. He looked into the future of that city and it was dark. The Jews rejected Jesus and refused to repent of their sins and for that, they would suffer a terrible punishment. Enemy armies would invade and destroy the city. Most the inhabitants would be killed or sold as slaves to other countries. Their glorious temple, symbol of their privilege and the presence of God among them would be torn down, leaving not one stone on top of another. Their genealogical records were destroyed preventing them from selecting a High Priest as required by the "Law of Moses." They could no longer prove they were "the Children of Abraham." All this happen 40 years later in 70 AD. Jesus loved

गया", उसने अपना हाथ बढ़ाया, उसे छुआ और कहा: 'शुद्ध रहो!'

उसने एक विधवा को उसके इकलौते बेटे की कब्रगाह पर देखा। उसका दुःख देखकर उसे उस पर दया आई और कहा, "मत रो।" फिर वह अपने बेटे को वापस जीवन में लाने के लिए आगे बढ़ा। (लूका 7:13)

यीशु ने दो अंधों को देखा, "उनकी आँखों को छुआ, और वे तुरंत देखने लगे।" (मत्ती 20:34)

हालाँकि, यीशु की सबसे बड़ी करुणा बीमार शरीरों के लिए नहीं बल्कि बीमार आत्माओं के लिए है। हम मत्ती 9:35-36 में पढ़ते हैं कि कैसे यीशु ने उस भीड़ पर दया की जो बिना चरवाहे की भेड़ों की तरह थी, खोए हुए लोग, लक्ष्यहीन रूप से भटक रहे थे, न जाने कि वे क्या ढूँढ रहे थे, और न ही वे किधर जा रहे थे।

यीशु, अपने प्रिय नगर, यरूशलेम में आकर, भी रोया। उसने उस शहर के भविष्य को देखा और वह अंधेरा था। यहूदियों ने यीशु को अस्वीकार कर दिया और अपने पापों का पश्चाताप करने से इनकार कर दिया और इसके लिए उन्हें एक भयानक दंड भुगतना पड़ा। दुश्मन सेनाएं शहर पर आक्रमण और नष्ट कर देंगी। अधिकांश निवासियों को मार दिया जाएगा या दूसरे देशों में गुलामों के रूप में बेच दिया जाएगा। उनके गौरवशाली मंदिर, उनके विशेषाधिकार का प्रतीक और उनके बीच भगवान की उपस्थिति को तोड़ दिया जाएगा, एक पत्थर को दूसरे के ऊपर नहीं छोड़ा जाएगा। उनके वंशावली अभिलेखों को नष्ट कर दिया गया और उन्हें "मूसा की व्यवस्था" के अनुसार एक महायाजक का चयन करने से रोक दिया गया। वे अब यह साबित नहीं कर सकते थे कि वे "इब्राहीम की सन्तान" थे। यह सब 40 साल बाद 70 ई. में होता है। यीशु ने उनसे प्रेम किया और विद्रोही और अवज्ञाकारी के भाग्य के बारे में सोचकर रोया। (लूका 19:41-44)

### यीशु नम्र थे

विनम्र होने का क्या मतलब है? हमारे शब्दकोश के अनुसार, नम्र का अर्थ है कि आप "धैर्य और नम्रता दिखा रहे हैं, नम्रता ... आसानी से थोपे गए, विनम्र"। नम्र व्यक्ति दबाव में न तो फिट बैठता है और न ही हैंडल से उड़ता है। एक अच्छा पर्यायवाची शब्द "कोमल" है। नम्र व्यक्ति नियंत्रण में होता है।

शायद मसीह के जीवन का सबसे गलत समझा जाने वाला गुण उसकी नम्रता या नम्रता है। वह कमजोर नहीं बल्कि मजबूत था। याद कीजिए कि कैसे उसे गिरफ्तार किया गया था, डंडों से पीटा गया था, कोड़े से पीटा गया था, उस पर थूका गया था और उसका मज़ाक उड़ाया गया था। भीड़ ने उसकी मृत्यु का आह्वान किया और उसे रोमन क्रॉस पर कीलों से ठोक दिया गया। भीड़ ने उसे चुनौती दी, "यदि तुम परमेश्वर के पुत्र हो, तो नीचे आओ!"

क्रूस पर वह उसे मुक्त करने और उस कृतघ्न पीढ़ी को नष्ट करने के लिए 10,000 स्वर्गदूतों को बुला सकता था। लेकिन उसने नहीं किया। यीशु, "न पाप किया, और न उसके मुंह से छल की बात निकली ...

them and cried thinking about the destiny of the rebellious and disobedient. (Luke 19:41-44)

### Jesus was meek

What does it mean to be meek? According to our dictionary, meek means you are "showing patience and humility, gentleness ... easily imposed upon, submissive". The meek one doesn't throw fits or fly off the handle under pressure. A good synonym is "gentle." A meek person is under control.

Perhaps the most misunderstood quality of the life of Christ is his gentleness or meekness. He wasn't weak but strong. Remember how he was arrested, beaten with rods, scourged with a whip, spit on and mocked. The multitude called for his death and he was nailed to a Roman cross. The crowd challenged him, "*If you are the Son of God, come down!*"

On the cross he could have called 10,000 angels to set him free and destroy that ungrateful generation. But he didn't do it. Jesus, "*committed no sin, nor was deceit found in His mouth ... when He was reviled, did not revile in return; when He suffered, He did not threaten, but committed Himself to Him who judges righteously.*" (1 Peter 2:22,23) Listen to what he did say on that cross: "*Father, forgive them for they do not know what they do.*" Now that is meekness, properly defined as strength under control, calmness in the midst of trials and tranquility of soul even in difficult circumstances.

Jesus did not promote weakness but tolerance and so was able to help the weak become strong. He did not load them down with burdens too heavy for them to bear. He always called people to behave well and to be of good character but, at the same time, he understood and put up with the silliness and immaturities of the weak. Jesus was on the side of the weak. He never stopped being gentle.

He didn't stop being meek in Matthew 23 when he denounced the hypocrites: "Serpents, brood of vipers! How can you escape the condemnation of hell?" Nor will he cease to be meek when, one day, he "*is revealed from heaven with His mighty angels, in flaming fire taking vengeance on those who do not know God, and on those who do not obey the gospel of our Lord Jesus Christ.*" (2 Thessalonians 1:7, 8) To be meek doesn't mean you don't fight against evil, rebuke the sinner or try to correct an injustice. Sometimes force must be used. We must take action, speak out, resist, but we just do it the right way, Jesus' way, the controlled way.

जब उसकी निन्दा की गई, तो बदले में उसकी निन्दा नहीं की; जब उसने दुख उठाया, तो उसने धमकी नहीं दी, परन्तु अपने आप को उसके लिए समर्पित कर दिया जो धर्मि न्याय करता है।" (1 पतरस 2:22,23) सुनिए उसने उस क्रूस पर क्या कहा: "हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या करते हैं।" अब वह नम्रता है, जिसे ठीक से नियंत्रण में शक्ति, परीक्षणों के बीच शांति और कठिन परिस्थितियों में भी आत्मा की शांति के रूप में परिभाषित किया गया है।

यीशु ने कमजोरी नहीं बल्कि सहनशीलता को बढ़ावा दिया और इसलिए कमजोरों को मजबूत बनने में मदद करने में सक्षम थे। उसने उन पर इतना भारी बोझ नहीं डाला कि वे वहन न कर सकें। उन्होंने हमेशा लोगों को अच्छा व्यवहार करने और अच्छे चरित्र का होने का आह्वान किया, लेकिन साथ ही, उन्होंने कमजोरों की मूर्खता और अपरिपक्वता को समझा और उनके साथ काम किया। यीशु कमजोरों की तरफ था। उन्होंने कभी विनम्र होना बंद नहीं किया।

उसने मत्ती 23 में नम्र होना बंद नहीं किया जब उसने पाखंडियों की निंदा की: "सर्प, सांपों के बच्चे! आप नरक की निंदा से कैसे बच सकते हैं?" न ही वह नम्र होना बंद कर देगा, जब एक दिन, वह "अपने शक्तिशाली स्वर्गदूतों के साथ स्वर्ग से प्रकट होता है, जो आग की आग में उन लोगों से बदला लेते हैं जो भगवान को नहीं जानते हैं, और जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार का पालन नहीं करते हैं।" (2 थिस्सलुनीकियों 1:7, 8) नम्र होने का अर्थ यह नहीं है कि आप बुराई से न लड़ें, पापी को डांटें या अन्याय को सुधारने का प्रयास न करें। कभी-कभी बल का प्रयोग करना चाहिए। हमें कार्रवाई करनी चाहिए, बोलना चाहिए, विरोध करना चाहिए, लेकिन हम इसे सही तरीके से करते हैं, यीशु के तरीके से, नियंत्रित तरीके से।

### यीशु धर्मी था

लोग जीवन में कुछ ऐसा खोज रहे हैं जो उनकी इच्छाओं और जरूरतों को पूरा करे। वे भूखे-प्यासे हैं लेकिन केवल रोटी और पानी के लिए नहीं। वे चीजें, भौतिक संपत्ति, घनिष्ठ संबंध, जीवन और शांति के लिए अर्थ चाहते हैं। वे खुश रहना चाहते हैं। हालाँकि, एक अधिक महत्वपूर्ण भूख है जिसे परमेश्वर चाहता है कि हम अनुभव करें और हमेशा संतुष्ट करने के लिए तैयार रहें। यह धार्मिकता की भूख और प्यास है। यह याद रखना कि "धन्य" का अनुवाद कभी-कभी "खुश" किया जाता है, ध्यान दें कि यीशु ने क्या नहीं कहा। उन्होंने यह नहीं कहा कि जो सुख चाहते हैं वे सुखी होंगे। इसके बजाय, उसने कहा कि जो धार्मिकता के खोजी हैं वे सुखी होंगे। जो लोग ईश्वर और उनकी इच्छा को खोजते हैं, जो सही ढंग से सोचना और कार्य करना चाहते हैं, उन्हें खुशी मिलेगी। क्या आप जानते हैं कि धार्मिकता क्या है? यह न्याय के समान ही है, केवल व्यक्तिगत स्तर पर। यह न केवल दूसरों के साथ उचित या सही व्यवहार करना है बल्कि स्वयं को सही करना भी है। यहाँ अपने जीवन

### Jesus was righteous

People are searching for something in life that satisfies their desires and needs. They are hungry and thirsty but not only for bread and water. They want things, material possessions, close relationships, meaning for life and peace. They want to be happy. There is, though, a more vital hunger that God wants us to experience and always stands ready to satisfy. It is hunger and thirst for righteousness. Remembering that "blessed" is sometimes translated "happy", notice what Jesus did not say. He didn't say that those who seek happiness will be happy. Instead, he said that those who seek righteousness will be happy. Those who seek God and His will, those who want to think and act rightly, will find happiness.

Do you know what righteousness is? It is the same thing as justice, only on a personal level. It is not just treating others fairly or rightly but also doing right yourself. In his life here, Christ treated people fairly, did what was right, judged evil and defended the innocent. His righteousness includes retribution for evil committed. He is a just judge who is involved in the fight between good and evil. In this sense he is not impartial. He wants good to prevail over evil. Jesus loves what is right but hates what is wrong. It ought to be important for us to know that Jesus always did and will always do what is right.

Jesus never rejected a person because of his past mistakes (Matthew 9:13) nor abandoned truth for traditions that would deny help to the needy (Matthew 12:1-2). In every word and deed, Jesus showed us the perfect example of what it means to be righteous.

Jesus is our example of maturity (Ephesians 4:15). He is the source of our strength and fruit (John 15:1-5). As he did, we must desire the fellowship of the family of God (Hebrew 10:23-27), feeding ourselves on the Word of God (2 Timothy 3:16, 17), sharing our possessions with others (2 Corinthians 9:7-10). We must obey God instead of men. (Acts 4:19) This is the life that Jesus revealed to us.

Christ's righteousness is also seen in his role of Judge. **"God has established a day when He will judge the world with righteousness through Jesus."** (Acts 17:31) When he comes in judgment, he will divide the sheep from the goats, the righteous from the wicked. *"We must all appear before the judgment seat of Christ, that each one may receive the things done in the body, according to what he has done, whether good*

में, मसीह ने लोगों के साथ उचित व्यवहार किया, जो सही था, किया, बुराई का न्याय किया और निर्दोषों का बचाव किया। उसकी धार्मिकता में की गई बुराई का प्रतिशोध शामिल है। वह एक न्यायी न्यायाधीश है जो अच्छाई और बुराई के बीच लड़ाई में शामिल है। इस लिहाज से वह निष्पक्ष नहीं है। वह बुराई पर अच्छाई की जीत चाहता है। यीशु जो सही है उससे प्यार करता है लेकिन जो गलत है उससे नफरत करता है। हमारे लिए यह जानना महत्वपूर्ण होना चाहिए कि यीशु ने हमेशा वही किया है और हमेशा वही करेगा जो सही है।

यीशु ने कभी किसी व्यक्ति को उसकी पिछली गलतियों (मत्ती 9:13) के कारण अस्वीकार नहीं किया और न ही परंपराओं के लिए सत्य को त्यागा जो जरूरतमंदों की मदद से इनकार करेगा (मत्ती 12:1-2)। प्रत्येक शब्द और कार्य में, यीशु ने हमें धर्म होने के अर्थ का आदर्श उदाहरण दिखाया।

यीशु हमारी परिपक्वता का उदाहरण है (इफिसियों 4:15)। वह हमारी शक्ति और फल का स्रोत है (यूहन्ना 15:1-5)। जैसा उसने किया था, हमें परमेश्वर के परिवार की सहभागिता की इच्छा करनी चाहिए (इब्रानियों 10:23-27), परमेश्वर के वचन पर स्वयं को खिलाना (2 तीमुथियुस 3:16, 17), अपनी संपत्ति को दूसरों के साथ बांटना (2 कुरिन्थियों 9: 7-10)। हमें पुरुषों के बजाय भगवान का पालन करना चाहिए। (प्रेरितों 4:19) यही वह जीवन है जिसे यीशु ने हम पर प्रकट किया।

न्यायाधीश की भूमिका में मसीह की धार्मिकता भी दिखाई देती है। "परमेश्वर ने एक दिन ठहराया है, जब वह यीशु के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा।" (प्रेरितों 17:31) जब वह न्याय के समय आएगा, तब वह भेड़ों को बकरियों में से, धर्मियों को दुष्टों में से अलग करेगा। "हम सभी को मसीह के न्याय आसन के साम्हने हाजिर होना चाहिए, कि हर एक अपने भले या बुरे कामों के अनुसार देह के द्वारा किए गए कामों को प्राप्त करे।" (2 कुरिन्थियों 5:10) उस दिन धर्म न्यायी तुम से क्या कहेगा?

### यीशु दयालु था

दयालु व्यक्ति ने अपनी प्राथमिकता के रूप में पुरुषों की जरूरतों को परिभाषित किया। दया मानव निर्मित नियमों और रीति-रिवाजों से आगे लोगों की जरूरतों को पूरा करती है।

न्याय में, मसीह निर्दयी से कहेगा: "मेरे पास से चले जाओ, तुम शापित हो, शैतान और उसके स्वर्गदूतों के लिए तैयार की गई अनन्त आग में: क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे कुछ नहीं दिया; मैं प्यासा था और तुमने मुझे दिया पीया नहीं, मैं परदेशी था, और तू ने मुझे नंगा न ले लिया, और न रोगी और बन्दीगृह में मुझे पहिनाया, और न तूने मुझ से भेंट की।" तब वे भी उसे उत्तर देंगे, कि हे प्रभु, हम ने तुझे कब भूखा या प्यासा या परदेशी या नंगा या रोगी या बन्दीगृह में देखा, और तेरी सेवा टहल नहीं की? तब वह उनको उत्तर देगा, कि मैं तुम से सच सच

or bad." (2 Corinthians 5:10) What will the Righteous Judge say to you on that day?

### Jesus was merciful

The merciful One defined as his priority the needs of men. Mercy attends to the needs of people ahead of man-made rules and customs.

In the judgment, Christ will say to the unmerciful: *"Depart from Me, you cursed, into the everlasting fire prepared for the devil and his angels: for I was hungry and you gave Me no food; I was thirsty and you gave Me no drink; I was a stranger and you did not take Me in, naked and you did not clothe Me, sick and in prison and you did not visit Me." Then they also will answer Him, saying, 'Lord, when did we see You hungry or thirsty or a stranger or naked or sick or in prison, and did not minister to You?' Then He will answer them, saying, 'Assuredly, I say to you, inasmuch as you did not do it to one of the least of these, you did not do it to Me.'"* (Matthew 25:41-45)

**Comment:** Mercy is an essential part of true Christianity.

Mercy is when we feel the pain of someone in a bad situation. It is not, though, only feeling the pain, but acting to alleviate and help.

Coming down from the mountain after delivering a powerful sermon, he met a leper who said, *"Lord, if You are willing, You can make me clean."* Jesus put out His hand and touched him, saying, *"I am willing; be cleansed."* (Matthew 8:3)

To at the very end, we see Christ, crucified on the cross of Calvary, dying in anguish between two thieves. He had his hands full with his own problems but, hearing the thief's request, he felt great compassion.

### Jesus was pure

Many people have a wrong idea about what it means to be a believer: "Yes, I am a believer because I don't drink, smoke, dance or gamble." What mattered to him was a list of prohibitions, but the law of Christ always emphasized more what you do and what you are on the inside than things you don't do. Your behavior should be and will be a simple reflection of what exists in your heart – pure heart or pure in heart.

कहता हूँ, कि यदि तुम ने इनमें से छोटे से किसी एक के साथ ऐसा नहीं किया, तो मेरे साथ नहीं किया।" (मत्ती 25:41-45)

**टिप्पणी:** दया सच्ची ईसाइयत का एक अनिवार्य हिस्सा है।

दया तब होती है जब हम किसी की बुरी स्थिति में दर्द महसूस करते हैं। हालांकि, यह केवल दर्द महसूस नहीं कर रहा है, बल्कि कम करने और मदद करने के लिए कार्य कर रहा है।

एक शक्तिशाली उपदेश देने के बाद पहाड़ से नीचे आकर, वह एक कोढ़ी से मिला, जिसने कहा, "हे प्रभु, यदि आप चाहें, तो आप मुझे शुद्ध कर सकते हैं।" यीशु ने अपना हाथ बढ़ाकर उसे छुआ, और कहा, "मैं चाहता हूँ; शुद्ध हो जाओ।" (मत्ती 8:3)

अंत में, हम मसीह को कलवारी के क्रूस पर क्रूस पर चढ़ाए गए, दो चोरों के बीच पीड़ा में मरते हुए देखते हैं। उसके हाथ अपनी ही समस्याओं से भरे हुए थे, लेकिन चोर की विनती सुनकर उसे बड़ी दया आई।

### यीशु शुद्ध था

आस्तिक होने का क्या अर्थ है, इसके बारे में बहुत से लोगों का गलत विचार है: "हां, मैं आस्तिक हूँ क्योंकि मैं शराब नहीं पीता, धूम्रपान नहीं करता, नृत्य या जुआ नहीं करता।" उसके लिए जो मायने रखता था वह निषेधों की एक सूची थी, लेकिन मसीह की व्यवस्था ने हमेशा उन चीजों पर अधिक जोर दिया जो आप करते हैं और जो आप अंदर से करते हैं उन चीजों की तुलना में जो आप नहीं करते हैं। आपका व्यवहार आपके हृदय में जो मौजूद है उसका एक सरल प्रतिबिंब होना चाहिए और होना चाहिए - शुद्ध हृदय या हृदय में शुद्ध।

पवित्रता विचारों से शुरू होती है। "क्योंकि जैसा मनुष्य अपने मन में सोचता है वैसा ही वह भी होता है" (नीतिवचन 23:7)। अधिनियम सबसे महत्वपूर्ण चीज नहीं हैं। निश्चित रूप से, आपके कार्य महत्वपूर्ण हैं, लेकिन तथ्य यह है कि "एक अच्छा आदमी अपने दिल के अच्छे खजाने से अच्छाई निकालता है, और एक बुरा आदमी अपने दिल के बुरे खजाने से बुराई निकालता है। हृदय उसका मुँह बोलता है" (लूका 6:45)। आध्यात्मिक विकास का मुख्य जोर हमेशा आंतरिक व्यक्ति होना चाहिए; यानी दिल।

यहाँ जिस शब्द का अनुवाद "शुद्ध" किया गया है, वह यूनानी शब्द हैकथारोसी, जिसे शुद्ध, स्वच्छ, अशुद्ध, दूषित, ईमानदार, ईमानदार और बुराई से रहित के रूप में परिभाषित किया गया है। यीशु ने मत्ती 15:19 में कहा, कि "... बुरे विचार, हत्या, व्यभिचार, व्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही, और निन्दा मन से निकलती है। ये वही बातें हैं जो मनुष्य को अशुद्ध करती हैं।"



Purity starts with thoughts. "For as a man thinks in his heart, so is he" (Proverbs 23:7). Acts are not the most important thing. Sure, your actions are important, but the fact is that "A good man out of the good treasure of his heart brings forth good; and an evil man out of the evil treasure of his heart brings forth evil. For out of the abundance of the heart his mouth speaks" (Luke 6:45). The main emphasis of spiritual development must always be the inner person; that is, the heart.

The word here translated "pure" is the Greek word *katharos*, which is defined as pure, clean, unsoiled, uncontaminated, sincere, upright, and void of evil. Jesus said in Matthew 15:19, that " ... out of the heart proceed evil thoughts, murders, adulteries, fornications, thefts, false witness, blasphemies. These are the things which defile a man."

"The Lord does not see as man sees; for man looks at the outward appearance, but the LORD looks at the heart." (1 Samuel 16:7)

#### Jesus was a peacemaker

To most people, peace is simply "the absence of strife." If there are no wars, we say the world is at peace; or if we aren't fighting with our neighbors, we have neighborhood peace. But peace in the scriptures is far more than that. In the Old Testament, the Hebrew word for peace is *shalom*, which means "wholeness, completeness, harmony of life." In the New Testament the Greek word for peace is *eirene* meaning "inner well-being." Putting them all together, peace can be defined as "inner calm, even in the midst of outward turmoil or calamity." To enjoy peace is to be in harmony with God, self and others.

There is only true peace when love takes the place of hatred. The peacemaker is the one who works to replace hatred and strife with love and unity.

Jesus is the great peacemaker he destroyed the enmity that separated Jews and Gentiles in one body. Jesus' effect on these natural enemies was fantastic. People of different cultures, languages, races, religions, customs, etc., who had centuries of history full of war after war - Jesus caused them to become beloved brothers. The instrument he used to make peace was the cross of Calvary. The vision is of Jesus walking through the desert. In front of him all is dead and brown. But on he walks and wherever he passes, he

"यहोवा मनुष्य का सा नहीं देखता; क्योंकि मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है।" (1 शमूएल 16:7)

#### यीशु एक शांतिदूत थे

अधिकांश लोगों के लिए, शांति केवल "संघर्ष की अनुपस्थिति" है। अगर युद्ध नहीं होते हैं, तो हम कहते हैं कि दुनिया में शांति है; या अगर हम अपने पड़ोसियों से नहीं लड़ रहे हैं, तो हमारे पास पड़ोस में शांति है। लेकिन शास्त्रों में शांति इससे कहीं ज्यादा है। पुराने नियम में शांति के लिए इब्रानी शब्द है शालोम, जिसका अर्थ है "पूर्णता, पूर्णता, जीवन का सामंजस्य।" नए नियम में शांति के लिए यूनानी शब्द है आइरीन जिसका अर्थ है "आंतरिक कल्याण।" उन सभी को एक साथ रखकर, शांति को "आंतरिक शांति, यहां तक कि बाहरी उथल-पुथल या आपदा के बीच भी" के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। शांति का आनंद लेने के लिए भगवान, स्वयं और दूसरों के साथ सद्भाव में रहना है।

सच्ची शांति तभी मिलती है जब नफरत की जगह प्यार ले लेता है। शांतिदूत वह है जो घृणा और संघर्ष को प्रेम और एकता से बदलने का काम करता है।

यीशु महान शांतिदूत हैं उन्होंने उस दुश्मनी को नष्ट कर दिया जिसने यहूदियों और अन्यजातियों को एक शरीर में अलग कर दिया था। इन प्राकृतिक शत्रुओं पर यीशु का प्रभाव अद्भुत था। विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं, नस्लों, धर्मों, रीति-रिवाजों आदि के लोग, जिनका सदियों का इतिहास युद्ध के बाद युद्ध से भरा था - यीशु ने उन्हें प्रिय भाई बना दिया। वह शांति बनाने के लिए जिस उपकरण का इस्तेमाल करता था वह कलवारी का क्रॉस था। दर्शन यीशु के रेगिस्तान में चलते हुए है। उसके सामने सब मरा हुआ और भूरा है। लेकिन वह चलते-फिरते और जहां भी जाते हैं, प्रेम, शांति और सद्भाव छोड़ जाते हैं। रेगिस्तान जीवन में आता है और एक सुंदर, हरे-भरे बगीचे में बदल जाता है: पक्षी गाते हैं, फूल खिलते हैं, पानी बहता है, हरा चारागाह। वास्तव में, ठीक वैसा ही यीशु ने किया था, परन्तु आध्यात्मिक दृष्टि से। (इफिसियों 2:11-16)

यीशु ने सबसे बुरे पापी को गले लगाया, सबसे नीच कोढ़ी को छुआ, सबसे घृणित वेश्या को शुद्ध किया, सभी प्रकार के लोगों को लिया और उन्हें एक साथ भगवान के एक सुंदर परिवार में मिला दिया। उन्होंने एक उच्च कीमत चुकाई लेकिन शांतिदूत के रूप में अपने मिशन को अपने जीवन में प्राथमिकता के रूप में देखा।

#### यीशु वफादार था

leaves love, peace and harmony. The desert comes to life and is transformed into a beautiful, lush garden: birds singing, flowers blooming, water running, green pastures. In reality, that's exactly what Jesus did, but in spiritual terms. (Ephesians 2:11-16)

Jesus embraced the worst sinner, touched the vilest leper, purified the most despicable prostitute, took all types of people and joined them together into one beautiful family of God. He paid a high price but saw his mission as a peacemaker as a priority in his life.

### Jesus was faithful

A person's true character is most clearly revealed when that person is feeling the pressures of life. When everything is pleasant and easy, free of irritations, insults and injuries, it isn't very hard to be good and kind, patient and agreeable. But in the midst of persecution, pain, illness, criticism and rejection, a man's true colors come to the surface. It is in these moments that some appear as light in the darkness and others just blend into that darkness. It is in these moments that some give up and others keep going.

Jesus Christ is our best example of faithfulness. Satan threw his most fiery darts at Jesus. His enemies tried to kill him. Religious leaders falsely accused him. His own people rejected him.

Arrested and tortured, Jesus did not turn back. Abandoned by his closest friends, he did not turn back. Is it worthwhile to surrender ourselves to Christ? The answer is a resounding "Yes!" We may be weak and frail but Jesus is faithful to those who want to follow him. The sorrows of this life do not compare to the future glory that God will give to those who are faithful to Him. This chapter Adapted from The Life of Jesus by Joe McKinney, thebiblewayonline.com

#### Questions

1. Jesus showed God's nature as He was:
  - a. \_\_\_ Humble
  - b. \_\_\_ Dependent
  - c. \_\_\_ Compassionate
  - d. \_\_\_ Meek
  - e. \_\_\_ Righteous
  - f. \_\_\_ Merciful
  - g. \_\_\_ All the above
  - h. \_\_\_ He did not display any of God's nature

किसी व्यक्ति का वास्तविक चरित्र सबसे स्पष्ट रूप से तब प्रकट होता है जब वह व्यक्ति जीवन के दबावों को महसूस कर रहा होता है। जब सब कुछ सुखद और आसान हो, जलन, अपमान और चोटों से मुक्त हो, तो अच्छा और दयालु, धैर्यवान और सहमत होना बहुत कठिन नहीं है। लेकिन उत्पीड़न, दर्द, बीमारी, आलोचना और अस्वीकृति के बीच मनुष्य का असली रंग सतह पर आ जाता है। इन क्षणों में ही कुछ अंधेरे में प्रकाश के रूप में प्रकट होते हैं और अन्य बस उस अंधेरे में विलीन हो जाते हैं। इन क्षणों में ही कुछ हार मान लेते हैं और अन्य चलते रहते हैं।

यीशु मसीह हमारी वफादारी का सबसे अच्छा उदाहरण है। शैतान ने अपने सबसे उग्र डार्ट्स यीशु पर फेंके। उसके दुश्मनों ने उसे मारने की कोशिश की। धार्मिक नेताओं ने उन पर झूठा आरोप लगाया। अपनों ने ही उसे ठुकरा दिया।

गिरफ्तार और प्रताड़ित किया गया, यीशु पीछे नहीं हटे। अपने करीबी दोस्तों द्वारा छोड़े गए, वह वापस नहीं लौटा। क्या स्वयं को मसीह के प्रति समर्पण करना उचित है? इस जवाब से हां का गुंजायमान हो रहा है!" हम कमजोर और कमजोर हो सकते हैं लेकिन यीशु उनके प्रति वफादार हैं जो उनका अनुसरण करना चाहते हैं। इस जीवन के दुखों की तुलना उस भविष्य की महिमा से नहीं की जा सकती जो परमेश्वर उन लोगों को देगा जो उसके प्रति विश्वासयोग्य हैं। यह अध्याय जो मैककिनी द्वारा द लाइफ ऑफ जीसस से अनुकूलित, thebiblewayonline.com

#### प्रश्न

2. यीशु ने परमेश्वर के स्वभाव को दिखाया जैसे वह था:
  - i. \_\_\_ विनीत
  - j. \_\_\_ आश्रित
  - k. \_\_\_ करुणामय
  - l. \_\_\_ नम्र
  - m. \_\_\_ न्याय परायण
  - n. \_\_\_ दयालु
  - o. \_\_\_ सब से ऊपर
  - p. \_\_\_ उन्होंने भगवान के किसी भी स्वभाव का प्रदर्शन नहीं किया

### अध्याय 5

## पिता की इच्छा

ब्रह्मांड के निर्माण के बाद भगवान ने अपनी समानता में एक सृजन की इच्छा की। इसलिए, उसने मनुष्य को बनाया और उसे निर्णय लेने की क्षमता दी। उसने उसे पृथ्वी के तत्वों, धूल से, लेकिन अपनी छवि, समानता और प्रकृति में भी बनाया। मनुष्य ईश्वर का सटीक प्रतिनिधित्व नहीं है, बल्कि एक समानता है, जैसा कि नीचे दर्शाया गया है।

## The Father's Will

Following the creation of the cosmos God desired a creation in His likeness. So, He created man and gave him the ability to make decisions. He created him from the elements of the earth, dust, but also in His image, likeness and nature. Man is not the exact representation of God but a likeness, as depicted below.

There are many references in the scriptures that describe God, the Father; God, the Son and God, the Spirit. Mortal man has many of these attributes but not to the same degree as God. The following is a comparison of some attributes of God and man.

GOD	MAN
God loves 1 John 4:8 but hates sin	Man can love and hate fellowman
God is life. John 1:4	Man lives but will die
God is truth. John 14:6	Man can know some truth
God is just (holy, righteous) 2 Thessalonians 1:6	Man tends to put self ahead of what is just and right
God is mercy. Luke 6:36	Man seeks revenge
God is peace. 2 John 3 and John 14:7	Man wars and strives against each other
God is faithful. 1 Corinthians 10:13	Man struggles to be faithful but breaks covenants
God is without sin. 2 Corinthians 5:21	Man yields to temptation and sins

Following the creation God placed man in a paradise with the instruction to:

- be fruitful and multiply,
- tend the Garden of Eden,
- not to eat of the tree of knowledge of good and evil.

For an unknown period of time God walked and talked with man as he was a perfect creation, righteous.

But at just the right time or perfect situation, God came to the earth in the fleshly body of Jesus of Nazareth to become the only sacrifice to atone for man's sins. In doing so He provided the only way for man's deliverance from the bondage of sin, e.g., salvation and reconciliation with God.

Throughout the Gospels we constantly read statements from Jesus about why He left His abode in Heaven with God. His actions and statements show His purpose was to glorify God by completing the work He was sent to do as He stated:

I had to be in My Father's House

I must do the work that the Father gave me to finish,

शास्त्रों में ऐसे बहुत से सन्दर्भ हैं जो परमात्मा बाप का वर्णन करते हैं; ईश्वर, पुत्र और ईश्वर, आत्मा। नश्वर मनुष्य में इनमें से बहुत से गुण होते हैं लेकिन उस स्तर तक नहीं जो परमेश्वर के पास है। निम्नलिखित भगवान और मनुष्य के कुछ गुणों की तुलना है।

### भगवान मनु

परमेश्वर 1 यूहन्ना 4:8 से प्रेम करता है परन्तु पाप से घृणा करता है	आदमी साथी से प्यार और नफरत कर सकता है
ईश्वर जीवन है। यूहन्ना 1:4	आदमी रहता है लेकिन मर जाएगा
सात श्री अकाल जी। यूहन्ना 14:6	मनुष्य कुछ सच्चाई जान सकता है
परमेश्वर न्यायी है (पवित्र, धर्मी) 2 थिस्सलुनीकियों 1:6	मनुष्य स्वयं को उचित और सही के आगे रखने की प्रवृत्ति रखता है
ईश्वर दया है। लूका 6:36	आदमी बदला चाहता है
ईश्वर शांति है। 2 यूहन्ना 3 और यूहन्ना 14:7	मनुष्य युद्ध करता है और एक दूसरे के विरुद्ध प्रयास करता है
भगवान पर भरोसा करो। 1 कुरिन्थियों 10:13	मनुष्य वफादार होने के लिए संघर्ष करता है लेकिन अनुबंध तोड़ता है
ईश्वर पाप रहित है। 2 कुरिन्थियों 5:21	मनुष्य प्रलोभन और पापों के आगे झुक जाता है

सृष्टि के बाद परमेश्वर ने मनुष्य को एक परादीस में इस निर्देश के साथ रखा:

- फलदायी बनो और गुणा करो,
- अदन के बगीचे की रखवाली करो,
- भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल न खाना।

एक अज्ञात अवधि के लिए भगवान चले गए और मनुष्य के साथ बात की क्योंकि वह एक परिपूर्ण सृष्टि, धर्मी था।

लेकिन बिल्कुल सही समय या सही स्थिति में, परमेश्वर नासरत के यीशु के शरीर में पृथ्वी पर आया ताकि मनुष्य के पापों का प्रायश्चित्त करने के लिए एकमात्र बलिदान हो। ऐसा करने में उसने मनुष्य को पाप के बंधन से मुक्ति का एकमात्र मार्ग प्रदान किया, जैसे, मुक्ति और परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप।

पूरे सुसमाचार में हम लगातार यीशु के बयानों को पढ़ते हैं कि उसने परमेश्वर के साथ स्वर्ग में अपना निवास क्यों छोड़ा। उसके कार्यों और कथनों से पता चलता है कि उसका उद्देश्य उस कार्य को पूरा करके परमेश्वर की महिमा करना था जिसे करने के लिए उसे भेजा गया था जैसा उसने कहा था:

मुझे अपने पिता के घर में रहना था

जो काम पिता ने मुझे पूरा करने को दिया है, वह मुझे करना ही है,

मैं ने तेरा काम पूरा करके तुझे पृथ्वी पर महिमा दी है।

I have brought you glory on earth by completing Your work.

This was emphasized by Matthew when Jesus stated **“come unto me, all ye that labor and are heavy laden, and I will give you rest. Take my yoke upon you, and learn of me”** (Matthew 11:28-29). For them to come and “learn of Me” Jesus had to **do His Fathers will** (John 6:38) which was doing **the work that God sent Him to do.** (John 9:4)

### **Work Jesus Came To Do**

“You see, at just the right time, when we were still powerless, Christ died for the ungodly.” ... “But God demonstrates his own love for us in this: While we were still sinners, Christ died for us” (Romans 5:6, 8) because he wanted to **seek and save the lost.** (Luke 19:10)

“The Lord is not slow in keeping his promise, as some understand slowness. He is patient with you, **not wanting anyone to perish**, but everyone to come to repentance [a change from a life of sin and self to one of righteousness reflecting God.” (2 Peter 3:9)

Therefore, **God’s will was to provide a way for His creation to be reconciled unto Him.** “God ... wants all men to be saved and to come to a knowledge of the truth. For there is one God and one mediator between God and men, the man of flesh - Christ Jesus, who gave himself as a ransom for all men (1 Timothy 2:4-6 also Matthew 20:28; Mark 10:25 and Hebrews 9:15). John put it this way “For God so loved the world that **he gave his one and only Son, that whoever believes [pisteuo – commits to] in him shall not perish but have eternal life.**” (John 3:16)

“For the grace of God (Jesus, the Christ) that brings salvation has appeared to all men” (Titus 2:11). But “Not everyone who says to me, ‘Lord, Lord,’ will enter the kingdom of heaven, but only **he who does the will of my Father who is in heaven**” (Matthew 7:21). So “Why do you call me, ‘Lord, Lord’ and do not do what I say” (Luke 6:46)?

One who hears His Words, the way unto salvation, and fails to accept and obey them is “like a man who built a house on the ground (earth, sand or dirt as opposed to stone) without a solid foundation, consequently, like the house, his destruction will be complete” (Luke 6:49).

“My Father is always at his work to this very day, and I, too, am working” (John 5:17). Jesus did His Father’s work as he lived a sinless life pleasing God in order to offer His life and body as the only and perfect sacrifice

इस पर मत्ती द्वारा जोर दिया गया था जब यीशु ने कहा था “**cओमे टू मी**, हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे हुए लोगों, और मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर ले लो, और मुझ से सीखो” (मत्ती 11:28-29)। उनके आने और “मुझ से सीखो” के लिए यीशु को **क्या उसके पिता करेंगे** (यूहन्ना 6:38) जो उस कार्य को कर रहा था जिसे करने के लिए परमेश्वर ने उसे भेजा था। (यूहन्ना 9:4)

### **काम यीशु करने आया था**

“आप देखते हैं, ठीक समय पर, जब हम अभी भी शक्तिहीन थे, मसीह अधर्मियों के लिए मर गया।” ... “परन्तु परमेश्वर हम पर अपना प्रेम इस से प्रगट करता है: जब हम पापी ही थे, तो मसीह हमारे लिये मरा” (रोमियों 5:6, 8) क्योंकि वह खोए हुएों को खोजना और बचाना चाहता था। (लूका 19:10)

“यहोवा अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने में धीमा नहीं है, जैसा कि कुछ लोग धीमेपन को समझते हैं। वह तुम्हारे साथ सब रखता है, यह नहीं चाहता कि कोई नाश हो, परन्तु हर कोई पश्चाताप के लिए आए [जीवन से परिवर्तन यदि पाप और स्वयं एक धार्मिकता में जो परमेश्वर को प्रतिबिम्बित करता है। (2 पतरस 3:9)

इसलिए, परमेश्वर की इच्छा थी कि वह अपनी सृष्टि को उसके साथ मेल-मिलाप करने के लिए एक मार्ग प्रदान करे। “परमेश्वर... चाहता है कि सभी मनुष्य उद्धार पाएं और सत्य का ज्ञान प्राप्त करें। क्योंकि परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में एक ही परमेश्वर और एक बिचवई है, अर्थात् देहधारी मनुष्य-मसीह यीशु, जिसने अपने आप को सब मनुष्यों के छुड़ौती के रूप में दे दिया (1 तीमुथियुस 2:4-6 भी मत्ती 20:28; मरकुस 10:25 और इब्रानियों 9:15)। यूहन्ना ने इसे इस प्रकार रखा, “क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।” (जॉन 3:6)

“*भगवान की कृपा के लिए*” (यीशु, मसीह) जो उद्धार लाता है, वह सब मनुष्यों पर प्रकट हुआ है” (तीतुस 2:11)। परन्तु “हर कोई जो मुझ से, ‘हे प्रभु, हे प्रभु’ कहता है, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा, परन्तु केवल वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है” (मत्ती 7:21)। इसलिए “तू मुझे ‘प्रभु, प्रभु’ क्यों कहता है और जो मैं कहता हूँ वह नहीं करते” (लूका 6:46)?

जो उसके वचनों को सुनता है, उद्धार का मार्ग, और उन्हें स्वीकार करने और उनका पालन करने में विफल रहता है, वह “उस व्यक्ति की तरह है जिसने एक ठोस नींव के बिना जमीन पर एक घर बनाया (पृथ्वी। रेत या मिट्टी के रूप में पत्थर के विपरीत), फलस्वरूप, जैसे घर, उसका विनाश पूरा हो जाएगा” (लूका 6:49)।

“मेरा पिता आज तक सर्वदा अपने काम में लगा है, और मैं भी काम करता हूँ” (यूहन्ना 5:17)। यीशु ने अपने पिता का कार्य किया क्योंकि वह एक पापरहित जीवन व्यतीत कर रहा था जिससे परमेश्वर को प्रसन्न किया जा सके ताकि वह अपने जीवन और शरीर को परमेश्वर के लिए एकमात्र और सिद्ध बलिदान के रूप में प्रायश्चित्त कर सके, उसके पापों

to God to atone, cleanse man of his sins. He taught that all who believe, have obedient faith in Him would have eternal life with the Father (John 3:15, 16). He also said "I am the way and the truth and the life. No one comes to the Father except through me.

#### Questions

1. Man was made in God's likeness but not an exact representation.  
True \_\_\_ False\_\_\_
2. After creation man was given instructions, commands:
  - a. \_\_\_ Have offspring – be fruitful and multiply
  - b. \_\_\_ Take care of you home – tend the Garden of Eden
  - c. \_\_\_ Do Not eat of the tree of the knowledge of good and evil
  - d. \_\_\_ All the above
  - e. \_\_\_ No instructions were given
3. Jesus finished the work He came to earth to do.  
True \_\_\_ False\_\_\_
4. All mankind will be saved as God does not want any to perish.  
True \_\_\_ False\_\_\_
5. Jesus in quoted Isaiah then said Isaiah's prophesy was fulfilled in HIM.  
True \_\_\_ False\_\_\_

#### Chapter 6

##### The Beginning of His Ministry

*"Then Jesus came from Galilee to the Jordan to John, to be baptized by him. John would have prevented him, saying, 'I need to be baptized by you, and do you come to me?'" But Jesus answered him, "Let it be so now, for thus it is fitting for us to fulfill all righteousness.'" Then he consented. And when Jesus was baptized, immediately he went up from the water, and behold, the heavens were opened to him, and he saw the Spirit of God descending like a dove and coming to rest on him, and behold, a voice from heaven said, 'This is my beloved Son, with whom I am well pleased.'" (Matt 3:13-17)*

*"When all the people were being baptized, Jesus was baptized too. And as he was praying, heaven was*

से मनुष्य को शुद्ध कर सके। उसने सिखाया कि जो लोग विश्वास करते हैं, उनके पास उस पर आज्ञाकारी विश्वास है, उनके पास पिता के साथ अनन्त जीवन होगा (यूहन्ना 3:15, 16)। उन्होंने यह भी कहा "मैं ही मार्ग और सत्य और जीवन हूँ। मुझे छोड़कर पिता के पास कोई नहीं आया।

#### प्रश्न

6. मनुष्य को ईश्वर की समानता में बनाया गया था लेकिन सटीक प्रतिनिधित्व नहीं।  
सही गलत\_\_\_
7. सृष्टि के बाद मनुष्य को निर्देश, आदेश दिए गए:
  - a. \_\_\_ संतान उत्पन्न करें-फलदायी बनें और गुणा करें
  - b. \_\_\_ अपने घर की देखभाल करें - ईडन गार्डन की देखभाल करें
  - c. \_\_\_ अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल न खाना
  - d. \_\_\_ सब से ऊपर
  - e. \_\_\_ कोई निर्देश नहीं दिया गया
8. यीशु ने वह काम पूरा किया जिसे करने के लिए वह धरती पर आया था।  
सही गलत\_\_\_
9. सारी मानवजाति को बचाया जाएगा क्योंकि परमेश्वर नहीं चाहता कि कोई नाश हो।  
सही गलत\_\_\_
10. यीशु ने यशायाह को उद्धृत करते हुए कहा कि यशायाह की भविष्यवाणी उसी में पूरी हुई थी।  
सही गलत\_\_\_

#### अध्याय 6

##### उनके मंत्रालय की शुरुआत

*"तब यीशु गलील से यरदन के पास यूहन्ना से बपतिस्मा लेने को आया। यूहन्ना ने उसे यह कहकर रोक दिया होता, 'मुझे तुझ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और क्या तू मेरे पास आता है?'" परन्तु यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि अब ऐसा ही हो, क्योंकि यह हमारे लिये उचित है कि हम सब धार्मिकता को पूरा करें। तब उस ने हामी भरी: और जब यीशु ने बपतिस्मा लिया, तो तुरन्त जल में से ऊपर चढ़ गया, और क्या देखा, कि उसके लिये आकाश खुल गया, और उस ने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाई उतरते और उस पर विश्राम करने के लिये आते देखा, स्वर्ग से वाणी ने कहा, 'यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूँ!'" (मैट 3:13-17)*

*"जब सब लोग बपतिस्मा ले रहे थे, तब यीशु ने भी बपतिस्मा लिया। और जब वह प्रार्थना कर रहा था, तो स्वर्ग खुल गया और पवित्र आत्मा*

opened and the Holy Spirit descended on him in bodily form like a dove. And a voice came from heaven: "You are my Son, whom I love; with you I am well pleased." (Luke 3:21-22)

"And Jesus, full of the Holy Spirit, returned from the Jordan and was led by the Spirit in the wilderness for forty days, being tempted by the devil." ... "If you are the Son of God, throw yourself down from here, for it is written, "He will command his angels concerning you, to guard you,' and "On their hands they will bear you up, lest you strike your foot against a stone." And Jesus answered him, "It is said, 'You shall not put the Lord your God to the test.'" (Luke 4:1-2, 9-12)

**Comment:** God is not to be tested. But He will test man's faith by allowing him to be presented with choices. Man can choose his desires like Adam and Eve and the Pharisees or choose to do what God desires.

"Let no one say when he is tempted, 'I am being tempted by God,' for God cannot be tempted with evil, and he himself tempts no one. But each person is tempted when he is lured and enticed by his own desire." (James 1:13-14)

### His Mission

"When the devil had finished all this tempting, he left him until an opportune time. Jesus returned to Galilee in the power of the Spirit, and news about him spread through the whole countryside. He taught in their synagogues, and everyone praised him. He went to Nazareth, where he had been brought up, and on the Sabbath day he went into the synagogue, as was his custom. And he stood up to read. The scroll of the prophet Isaiah was handed to him. Unrolling it, he found the place where it is written: 'The Spirit of the Lord is on me, because he has anointed me to preach good news to the poor. He has sent me to proclaim freedom for the prisoners and recovery of sight for the blind, to release the oppressed, to proclaim the year of the Lord's favor'" (from Isaiah 61:1-2). Then he rolled up the scroll, gave it back to the attendant and sat down. The eyes of everyone in the synagogue were fastened on him, and he began by saying to them, "Today this scripture is fulfilled in your hearing." (Luke 4:13-21)

शारीरिक रूप से कबूतर की तरह उस पर उतर आया। और स्वर्ग से एक आवाज आई: "तू मेरा पुत्र है, जिसे मैं प्यार करता हूँ, मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ।" (लूका 3:21-22)

"और यीशु पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर यरदन से लौट आया, और आत्मा के द्वारा जंगल में चालीस दिन तक शैतान की परीक्षा में पड़ा रहा।" ... "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को यहां से नीचे गिरा दे, क्योंकि यह लिखा है, कि 'वह तेरे विषय में अपने दूतों को तेरी रक्षा करने की आज्ञा देगा,' और 'वे अपने हाथों से तुझे उठा लेंगे, ऐसा न हो कि तू अपने पांव पर पत्थर मारो।'" यीशु ने उसे उत्तर दिया, "कहा जाता है, 'तू अपने परमेश्वर यहोवा की परीक्षा न करना।'" (लूका 4:1-2, 9-12)

**टिप्पणी:** ईश्वर की परीक्षा नहीं होनी चाहिए। परन्तु वह मनुष्य के विश्वास की परीक्षा उसे विकल्पों के साथ प्रस्तुत करने की अनुमति देकर करेगा। मनुष्य आदम और हव्वा और फरीसियों की तरह अपनी इच्छाओं को चुन सकता है या वह करने का चुनाव कर सकता है जो परमेश्वर चाहता है।

"जब वह परीक्षा में पड़े, तो कोई यह न कहे, 'मैं परमेश्वर की परीक्षा में पड़ रहा हूँ,' क्योंकि परमेश्वर की परीक्षा बुराई से नहीं की जा सकती, और वह स्वयं किसी की परीक्षा नहीं लेता है। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति की परीक्षा तब होती है जब वह अपनी ही इच्छा से बहकाया और बहकाया जाता है।" (याकूब 1:13-14)

### उनका मिशन

"जब शैतान ने यह सब प्रलोभन समाप्त कर दिया, तो उसने उसे एक उपयुक्त समय तक छोड़ दिया। यीशु आत्मा की शक्ति में गलील लौट आया, और उसके बारे में पूरे देश में खबर फैल गई। वह उनकी सभाओं में उपदेश देता था, और सब लोग उसकी प्रशंसा करते थे। वह नासरत को गया, जहां उसका पालन-पोषण हुआ था, और सब के दिन अपनी रीति के अनुसार आराधनालय में गया। और वह पढ़ने के लिए खड़ा हो गया। यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक उसे सौंपी गई। उसे खोलकर, उसने वह स्थान पाया जहाँ लिखा है: 'प्रभु की आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उसने गरीबों को खुशखबरी सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है। उसने मुझे बंदियों के लिए स्वतंत्रता की घोषणा करने और अंधों के लिए दृष्टि की वसूली की घोषणा करने के लिए, उत्पीड़ितों को रिहा करने के लिए, प्रभु के अनुग्रह के वर्ष की घोषणा करने के लिए भेजा है'" (यशायाह 61: 1-2 से)। तब उस ने पुस्तक को लुढ़काकर सेवक को लौटा दिया और बैठ गया। (लूका 4:13-21)

**टिप्पणी:** परमेश्वर के लोगों को "प्रचार करना, मसीह, सुसमाचार का प्रचार करना" है क्योंकि यह पापों की क्षमा का संदेश था। यहूदी

**Comment:** God's people are to "Preach, proclaim Christ, the Good News" as it was the message of forgiveness of sins. The Jews looked forward to the forgiveness of their sins as their sacrifices could not remove them.

Their "sin offering, a special kind, first mentioned in the Mosaic legislation. It is essentially expiatory, intended to restore covenant relations with the Deity. The special features were: (1) the blood must be sprinkled before the sanctuary, put upon the horns of the altar of incense and poured out at the base of the altar of burnt offering; (2) the flesh was holy, not to be touched by worshipper, but eaten by the priest only. The special ritual of the Day of Atonement centers around the sin offering. (International Standard Bible Encyclopaedia) This foreshadowed Jesus' sin offering.

*"I tell you the truth, he who believes has everlasting life. I am the bread of life. Your forefathers ate the manna in the desert, yet they died. But here is the bread that comes down from heaven, which a man may eat and not die. I am the living bread that came down from heaven. If anyone eats of this bread, he will live forever. This bread is my flesh, which I will give for the life of the world."* (John 6:47-51)

**Comment:** Christ is the living bread to eternal life, the "Words of Life" which one must consume to live forever.

Jesus said *"I am the way and the truth and the life. No one comes to the Father except through me."* (John 14:6-7) Jesus came to them and said, *"All authority in heaven and on earth has been given to me. Therefore, go and make disciples of all nations, baptizing them in the name of the Father and of the Son and of the Holy Spirit, and teaching them to obey everything I have commanded you. And surely, I am with you always, to the very end of the age."* (Matthew 28:18-20)

Proof of all this was in prophecies fulfilled, miracles and ultimately in His public death, burial and His resurrection witnessed by hundreds of His disciples.

#### His Parables

Someone has said that a parable is an earthly story with a heavenly meaning. It appears that a lot of the teachings of Jesus were done in parables. Of course, it was to do the will of "The Father". It may be that the Jews who were trying to please God could understand many of these parables, while the religious leaders whose hearts were more concerned with position,

अपने पापों की क्षमा के लिए तत्पर थे क्योंकि उनके बलिदान उन्हें दूर नहीं कर सकते थे।

उनका "पापबलि, एक विशेष प्रकार का, जिसका जिक्र पहली बार मोज़ेक कानून में किया गया है। यह अनिवार्य रूप से प्रायश्चित है, जिसका उद्देश्य देवता के साथ वाचा संबंधों को बहाल करना है। विशेष लक्षण थे: (1) लोहू को पवित्रस्थान के साम्हने छिड़का जाना, और धूप की वेदी के सींगों पर लगाना, और होमबलि की वेदी के तल पर उंडेल देना; (2) मांस पवित्र था, उपासक के स्पर्श के लिए नहीं, बल्कि याजक के द्वारा ही खाया जाता था। प्रायश्चित के दिन का विशेष अनुष्ठान पापबलि के इर्द-गिर्द केन्द्रित होता है। (इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल इनसाइक्लोपीडिया) यह यीशु के पापबलि का पूर्वाभास देता है।

*"मैं तुम से सच सच कहता हूँ, जो विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है। मैं जीवन की रोटी हूँ। तेरे पुरखाओं ने जंगल में मन्ना खाया, तौभी वे मर गए। परन्तु यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरती है, जिसे मनुष्य खा सकता है और मर नहीं सकता। मैं वह जीवित रोटी हूँ जो स्वर्ग से उतरती है। यदि कोई इस रोटी में से खाए, तो वह सदा जीवित रहेगा। यह रोटी मेरा मांस है, जिसे मैं जगत के जीवन के लिये दूंगा।"* (यूहन्ना 6:47-51)

**टिप्पणी:** मसीह अनन्त जीवन के लिए जीवित रोटी है, "जीवन के वचन" जिसे हमेशा के लिए जीने के लिए उपभोग करना चाहिए। यीशु ने कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना 14:6-7) यीशु ने उनके पास आकर कहा, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए जाकर सब जातियों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और जो कुछ मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है उसका पालन करना सिखाओ। और निश्चय ही, मैं युग के अन्त तक सदैव तुम्हारे साथ हूँ।" (मत्ती 28:18-20)

इन सबका प्रमाण भविष्यवाणियों के पूरा होने, चमत्कारों और अंततः उनकी सार्वजनिक मृत्यु, दफनाने और उनके पुनरुत्थान में उनके सैकड़ों शिष्यों द्वारा देखा गया था।

#### उनके दृष्टान्त

किसी ने कहा है कि दृष्टान्त एक सांसारिक कहानी है जिसका एक स्वर्गीय अर्थ है। ऐसा प्रतीत होता है कि यीशु की बहुत सी शिक्षाओं को दृष्टान्तों में किया गया था। बेशक, यह "पिता" की इच्छा को पूरा करना था। हो सकता है कि जो यहूदी ईश्वर को प्रसन्न करने की कोशिश कर रहे थे, वे इनमें से कई दृष्टान्तों को समझ सकते थे, जबकि धार्मिक नेता जिनके दिल पद, शक्ति, प्रतिष्ठा और धन से अधिक चिंतित थे, दृष्टान्तों में उनके संदेश को समझ नहीं पाए या स्वीकार करने से इनकार कर दिया। बंद दिमाग के लिए स्पष्ट को पहचानना मुश्किल है।

#### उनके चमत्कार

चमत्कार का उद्देश्य क्या था? क्या यीशु अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने की कोशिश कर रहा था, चाहता था कि उसके देशवासी उसे

power, prestige and money could not comprehend or refused to accept His message in parables. It is difficult for a closed mind to recognize the obvious.

### His Miracles

What was the purpose of the Miracles? Was Jesus trying to draw attention to Himself, wanting His countrymen to make Him their king or fulfilling God's promise to send the anointed one? As with the parables, it was to "do the will of The Father."

Often great crowds followed Jesus, perhaps trying to see "what's in it for me?" or just curious or with desire for political power if He was to be their earthly king. Some may have believed He could be the Messiah. These witnesses can be divided into three groups:

### The Recipient of the Miracle

Surely all were filled with joy and gladness and most glorified God. The one notable exception was the cleansing of the ten lepers nine of which did not return to give God glory.

### Those Witnessing the Miracle

The witnesses not only observed the miracle; they recognized man's limitations noting that only through God's power could such miracles be performed. Most praised God and glorified Him – but not the pharisees. A list of Jesus' miracles is provided in Appendix B

### The Religious Leaders

The religious leaders were the Scribes and Pharisees having wealth, power, prestige and praise of men. They believed Jesus was going to destroy their nation, their position and their power if the common man continued to believe He was the Messiah. Consequently, they refused to acknowledge that He was from above or that any of the miracles He performed were from God. They attributed them to the power of the Devil. They wanted to kill Him but feared the people who believed He was from God. Finally, they violated many of their own traditions and laws; e.g., trial on the Sabbath, seeking false witnesses, paying money for his capture but refusing it when returned acknowledging it was "blood money." Ultimately, they said "Let Him come down from the cross and we will believe in Him". Instead of coming down from the cross He came back to life after dying and they still refused to believe in Him.

### His Enemies

अपना राजा बनायें या अभिषिक्त को भेजने के लिए परमेश्वर के वादे को पूरा कर रहे थे? दृष्टान्तों की तरह, यह "पिता की इच्छा पर चलना" था।

अक्सर बड़ी भीड़ यीशु के पीछे हो लेती थी, शायद यह देखने की कोशिश करती थी कि "इसमें मेरे लिए क्या है?" या सिर्फ जिज्ञासु या राजनीतिक सत्ता की इच्छा के साथ अगर वह उनका सांसारिक राजा होता। कुछ लोगों ने माना होगा कि वह मसीहा हो सकता है। इन गवाहों को तीन समूहों में विभाजित किया जा सकता है:

### चमत्कार के प्राप्तकर्ता

निश्चय ही सब आनन्द और आनन्द से भर गए और परमेश्वर की बड़ाई करने लगे। एक उल्लेखनीय अपवाद दस कोढ़ियों का शुद्धिकरण था, जिनमें से नौ परमेश्वर की महिमा करने के लिए वापस नहीं लौटे।

### चमत्कार के साक्षी

गवाहों ने न केवल चमत्कार देखा; उन्होंने यह देखते हुए मनुष्य की सीमाओं को पहचाना कि केवल परमेश्वर की शक्ति के द्वारा ही ऐसे चमत्कार किए जा सकते हैं। अधिकांश ने परमेश्वर की स्तुति की और उसकी महिमा की - लेकिन फरीसियों ने नहीं। परिशिष्ट बी में यीशु के चमत्कारों की सूची दी गई है

### धार्मिक नेता

धार्मिक नेता शास्त्री और फरीसी थे जिनके पास धन, शक्ति, प्रतिष्ठा और पुरुषों की प्रशंसा थी। उनका मानना था कि यीशु उनके राष्ट्र, उनकी स्थिति और उनकी शक्ति को नष्ट करने जा रहे थे यदि आम आदमी यह विश्वास करता रहा कि वह मसीहा है। नतीजतन, उन्होंने यह मानने से इनकार कर दिया कि वह ऊपर से था या उसके द्वारा किए गए चमत्कारों में से कोई भी भगवान से था। उन्होंने उन्हें शैतान की शक्ति के लिए जिम्मेदार ठहराया। वे उसे मारना चाहते थे, लेकिन उन लोगों से डरते थे जो मानते थे कि वह परमेश्वर की ओर से है। अंत में, उन्होंने अपनी कई परंपराओं और कानूनों का उल्लंघन किया; उदाहरण के लिए, सब्त के दिन मुकदमा चलाना, झूठे गवाहों की तलाश करना, उसे पकड़ने के लिए पैसे का भुगतान करना, लेकिन वापस आने पर यह स्वीकार करते हुए मना करना कि यह "रक्त का पैसा" था। अंत में, उन्होंने कहा, "उसे क्रूस पर से उतरने दो और हम उस पर विश्वास करेंगे"।

### उसके दुश्मन

धर्मग्रंथ उन लोगों की पहचान करते हैं जिन्होंने उसकी सांसारिक सेवकाई के दौरान मसीह का विरोध किया और उसके पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बाद उसके चर्च का विरोध किया।

### हेरोदेस (रोमन राजा)

"वह कहाँ है जो यहूदियों का राजा पैदा हुआ है? हमने पूर्व में उसका तारा देखा और उसकी पूजा करने आए हैं!"... जब राजा



The scriptures identify those opposed to Christ during His earthly ministry and opposed His church following His resurrection and ascension.

#### Herod (Roman king)

*“Where is the one who has been born king of the Jews? We saw his star in the east and have come to worship him”*. ... When King Herod heard this, he was disturbed ... *“He sent them to Bethlehem and said, ‘Go and make a careful search for the child. As soon as you find him, report to me, so that I too may go and worship him’”*. ... *“When Herod realized that he had been outwitted by the Magi, he was furious, and he gave orders to kill all the boys in Bethlehem and its vicinity who were two years old and under, in accordance with the time he had learned from the Magi.”* (Matthew 2:2-3; 8, 16)

#### The Devil (Satan)

*“Then Jesus was led by the Spirit into the desert to be tempted by the devil. After fasting forty days and forty nights, he was hungry. The tempter came to him and said, ‘If you are the Son of God,’ ... Again, the devil took him to a very high mountain and showed him all the kingdoms of the world and their splendor. ‘All this I will give you,’ he said, ‘if you will bow down and worship me’. Jesus said to him, ‘Away from me, Satan! For it is written: ‘Worship the Lord your God, and serve him only.’”* Then the devil left him, and angels came and attended him.” (Matthew 4:1-3; 8-11)

#### Citizens of Nazareth (Hometown folks)

*“When Jesus had finished these parables, he moved on from there. Coming to his hometown, he began teaching the people in their synagogue, and they were amazed. ‘Where did this man get this wisdom and these miraculous powers?’ they asked. ‘Isn’t this the carpenter’s son? Isn’t his mother’s name Mary, and aren’t his brothers James, Joseph, Simon and Judas? Aren’t all his sisters with us? Where then did this man get all these things?’ And they took offense at him.”* (Matthew 13:53-57)

#### Judas Iscariot (One of the Apostles)

*“Then one of the twelve, called Judas Iscariot, went to the chief priests and said, “What are you willing to give me if I deliver Him to you?” And they counted out to him thirty pieces of silver. So, from that time he sought opportunity to betray Him.”* (Matthew 26:14-16 26:3-4)

#### Pharisees, Chief Priests, Elders, Scribes and Council

*“As they went out, behold, they brought to Him a*

हेरोदेस ने यह सुना, तो वह परेशान हो गया ... "उसने उन्हें बेथलहम भेज दिया और कहा, 'जाओ और बच्चे की सावधानीपूर्वक खोज करो। जैसे ही तुम उसे पाओ, मुझे सूचना देना, कि मैं भी जाकर उसकी पूजा करूं'। ... "जब हेरोदेस को पता चला कि उसे जादूगरनी ने चकमा दे दिया है, तो वह क्रोधित हो गया, और उसने बेथलहम और उसके आसपास के सभी लड़कों को मारने का आदेश दिया, जो दो साल और उससे कम उम्र के थे, उस समय के अनुसार जो उसने सीखा था। मैगी से।" (मत्ती 2:2-3; 8, 16)

#### शैतान (शैतान)

*“तब यीशु को आत्मा के द्वारा जंगल में ले जाया गया, कि शैतान की परीक्षा हो। चालीस दिन और चालीस रात उपवास करने के बाद, वह भूखा था। परीक्षा देने वाला उसके पास आया और कहा, 'यदि तू परमेश्वर का पुत्र है,' ... फिर, शैतान उसे एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर ले गया और उसे दुनिया के सभी राज्य और उनका वैभव दिखाया। उसने कहा, 'यह सब मैं तुम्हें दूंगा,' उसने कहा, 'यदि आप झुककर मेरी पूजा करेंगे। यीशु ने उससे कहा, 'मुझ से दूर, शैतान! क्योंकि लिखा है, कि आपके परमेश्वर यहोवा की उपासना करो, और केवल उसी की उपासना करो।' तब शैतान उसके पास से चला गया, और स्वर्गद्वार आकर उसकी सुधि ली।" (मत्ती 4:1-3; 8-11)*

#### नाज़रेथ के नागरिक (गहनगर लोग)

*“जब यीशु ने इन दृष्टान्तों को समाप्त किया, तो वह वहाँ से चला गया। अपने नगर में आकर वह लोगों को उनके आराधनालय में उपदेश देने लगा, और वे चकित हुए। 'इस आदमी को यह ज्ञान और ये चमत्कारी शक्तियाँ कहाँ से मिलीं?' उन्होंने पूछा। 'क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं है? क्या उसकी माता का नाम मरियम नहीं है, और क्या उसके भाई याकूब, यूसुफ, शमौन और यहूदा नहीं हैं? क्या उसकी सभी बहनें हमारे साथ नहीं हैं? फिर इस आदमी को ये सब चीज़ें कहाँ से मिलीं?' और उन्होंने उस पर क्रोध किया।" (मत्ती 13:53-57)*

#### यहूदा इस्करियोती (पेरितों में से एक)

*“तब बारहों में से एक जो यहूदा इस्करियोती कहलाता है, महायाजकों के पास गया, और कहा, यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ में कर दूँ तो तुम मुझे क्या देना चाहते हो?" और उन्होंने उसके लिथे चान्दी के तीस टुकड़े गिने। इसलिए, उसी समय से उसने उसे धोखा देने का अवसर मांगा।" (मत्ती 26:14-16 26:3-4)*

#### फरीसी, मुख्य याजक, प्राचीन, शास्त्री और परिषद

*“जब वे बाहर गए, तो क्या देखा, कि वे एक गूंगा और दुष्टात्माओं से ग्रस्त मनुष्य को उसके पास ले आए। और जब दुष्टात्मा निकाल दी गई, तो गूंगा बोला। और भीड़ ने अचम्भा किया, और कहा, 'इस्राएल में ऐसा कभी नहीं देखा गया था!' ... परन्तु फरीसियों ने*

man, mute and demon-possessed. And when the demon was cast out, the mute spoke. And the multitudes marveled, saying, 'It was never seen like this in Israel!' ... But the Pharisees said, 'He casts out demons by the ruler of the demons.' ... behold, there was a man who had a withered hand. And they asked Him, saying, 'Is it lawful to heal on the Sabbath?' — that they might accuse Him. Then He said to them, 'What man is there among you who has one sheep, and if it falls into a pit on the Sabbath, will not lay hold of it and lift it out? Of how much more value then, is a man than a sheep? Therefore, it is lawful to do good on the Sabbath.' Then He said to the man, 'Stretch out your hand.' And he stretched it out, and it was restored as whole as the other. Then the Pharisees went out and plotted against Him, how they might destroy Him. ... Now when the chief priests and Pharisees heard His parables, they perceived that He was speaking of them. But when they sought to lay hands on Him, they feared the multitudes, because they took Him for a prophet." (Matthew 9:32-34; 12:10-14; 21:45-46)

"Then Jesus spoke to the multitudes and to His disciples, saying: 'The scribes and the Pharisees sit in Moses' seat. Therefore, whatever they tell you to observe, that observe and do, but do not do according to their works; for they say, and do not do' ... 'But woe to you, scribes and Pharisees, hypocrites! For you shut up the kingdom of heaven against men; for you neither go in yourselves, nor do you allow those who are entering to go in.' ... Then the chief priests, the scribes, and the elders of the people assembled at the palace of the high priest, who was called Caiaphas, and plotted to take Jesus by trickery and kill Him." (Matthew 23:1-3; 13-14)

"And those who had laid hold of Jesus led Him away to Caiaphas the high priest, where the scribes and the elders were assembled. But Peter followed Him at a distance to the high priest's courtyard. And he went in and sat with the servants to see the end. Now the chief priests, the elders, and all the council sought false testimony against Jesus to put Him to death, but found none. Even though many false witnesses came forward, they found none." (Matthew 26:57-60)

**The Antichrists** (Those who deny Christ is God)

"This is how you can recognize the Spirit of God:

कहा, 'वह दुष्टात्माओं के सरदार के द्वारा दुष्टात्माओं को निकालता है।' ... देखो, एक मनुष्य था जिसका हाथ सूख गया था। और उन्होंने उस से पूछा, क्या सब्त के दिन चंगा करना उचित है? - ताकि वे उस पर दोष लगा सकें। फिर उस ने उन से कहा, तुम में ऐसा कौन मनुष्य है जिसके पास एक भेड़ हो, और यदि वह सब्त के दिन किसी गड़हे में गिर जाए, तो उसे पकड़कर न निकाले? तो फिर मनुष्य का मूल्य भेड़ से कितना अधिक है? इसलिए सब्त के दिन भलाई करना उचित है।' तब उस ने उस पुरुष से कहा, 'अपना हाथ बढ़ा।' और उस ने उसे बढ़ाया, और वह दूसरे के समान चंगा हो गया। तब फरीसियों ने निकलकर उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचा, कि उसे किस रीति से नाश करें। ... अब जब महायाजकों और फरीसियों ने उसके दृष्टान्तों को सुना, तो उन्होंने जान लिया कि वह उन्हीं की बात कर रहा है। परन्तु जब उन्होंने उस पर हाथ रखना चाहा, तो भीड़ से डर गए, क्योंकि उन्होंने उसे भविष्यद्वक्ता बना लिया था।" (मत्ती 9:32-34; 12:10-14; 21:45-46)

"तब यीशु ने भीड़ और अपने चेलों से कहा, 'शास्त्री और फरीसी मूसा की गद्दी पर बैठे हैं। इसलिथे जो कुछ वे तुझ से कहने को कहें, कि मानना, और करना, परन्तु उनके कामोंके अनुसार न करना; क्योंकि वे कहते हैं, और करते नहीं हैं...' परन्तु, हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय! क्योंकि तू ने स्वर्ग के राज्य को मनुष्यों के साम्हने बन्द कर रखा है; क्योंकि न तो तुम अपने भीतर जाते हो, और न आनेवालोंको भीतर जाने देते हो।' ... तब महायाजक, शास्त्री, और प्रजा के पुरनिये कैफा नाम महायाजक के भवन में इकट्ठे हुए, और यीशु को छल से पकड़कर मार डालने की युक्ति की।" (मत्ती 23:1-3; 13-14)

"और जिन लोगों ने यीशु को पकड़ लिया था, वे उसे महायाजक कैफा के पास ले गए, जहां शास्त्री और पुरनिये इकट्ठे हुए थे। परन्तु पतरस उसके पीछे पीछे पीछे महायाजक के आंगन तक गया। और वह भीतर जाकर अन्त देखने को सेवकोंके संग बैठ गया। अब महायाजकों, पुरनियों, और सारी सभा ने यीशु को मार डालने के लिथे उसके विरुद्ध झूठी गवाही चाही, परन्तु कोई न मिला। हालाँकि बहुत से झूठे गवाह सामने आए, लेकिन उन्हें कोई नहीं मिला।" (मत्ती 26:57-60)

**मसीह विरोधी** (जो लोग मसीह को नकारते हैं, वे परमेश्वर हैं)

"इस प्रकार तुम परमेश्वर के आत्मा को पहचान सकते हो: हर एक आत्मा जो मानती है कि यीशु मसीह शरीर में आया है, वह परमेश्वर की ओर से है, परन्तु हर आत्मा जो यीशु को नहीं पहचानती, वह परमेश्वर की ओर से नहीं है। यह मसीह-विरोधी की आत्मा है, जिसके बारे में तुमने सुना है, आ रही है और अब भी दुनिया में है।" (1 यूहन्ना 4:2-3)

"बहुत से धोखेबाज, जो यीशु मसीह को शरीर में आकर नहीं मानते, जगत में निकल गए हैं। ऐसा कोई भी व्यक्ति धोखेबाज और

*Every spirit that acknowledges that Jesus Christ has come in the flesh is from God, but every spirit that does not acknowledge Jesus is not from God. This is the spirit of the antichrist, which you have heard is coming and even now is already in the world.” (1 John 4:2-3)*

*“Many deceivers, who do not acknowledge Jesus Christ as coming in the flesh, have gone out into the world. Any such person is the deceiver and the antichrist.” (2 John 7)*

### His Arrest

The physical passion of the Christ began in Gethsemane. Of the many aspects of this initial suffering, the one of greatest physiological interest is the bloody sweat. It is interesting that St. Luke, the physician, is the only one to mention this. He says, *“And being in Agony, He prayed the longer. And His sweat became as drops of blood, trickling down upon the ground.” (Luke 22:44)*

### Trial by Religious Leaders

*“Jesus said to the chief priests, the temple guard, and the elders, who had come for him, ‘Am I leading a rebellion, that you have come with swords and clubs? Every day I was with you in the temple courts, and you did not lay a hand on me. But this is your hour-when darkness reigns.’ Then seizing him, they led him away and took him into the house of the high priest.” (Luke 22:52-54)*

After the arrest in the middle of the night, Jesus was next brought before the Sanhedrin and Caiaphas, the High Priest. It is here that the first physical trauma was inflicted. A soldier struck Jesus across the face for remaining silent when questioned by Caiaphas. The palace guards blind-folded Him and mockingly taunted Him to identify them as they each passed by, spat upon Him, and struck Him in the face.

### Roman Trial

*“Pilate then went back inside the palace, summoned Jesus and asked him, ‘Are you the king of the Jews?’ ‘Is that your own idea,’ Jesus asked, ‘or did others talk to you about me?’ ‘Am I a Jew?’ Pilate replied. ‘It was your people and your chief priests who handed you over to me. What is it you have done?’ Jesus said, ‘My kingdom is not of this world. If it were, my servants would fight to prevent my arrest by the Jews. But now my kingdom is from another place.’ ‘You are a king, then!’ said Pilate. Jesus answered, ‘You are right in saying I am a king. In fact, for this reason I was born, and for this I came into the world, to testify to the truth.*

*मसीह विरोधी है!”(2 यूहन्ना 7)*

### उसकी गिरफ्तारी

गतसमनी में मसीह का शारीरिक जुनून शुरू हुआ। इस प्रारंभिक पीड़ा के कई पहलुओं में से सबसे बड़ी शारीरिक रुचि खूनी पसीना है। यह दिलचस्प है कि केवल चिकित्सक सेंट ल्यूक ही इसका उल्लेख करते हैं। वह कहता है, "और तड़पते हुए उस ने और अधिक देर तक प्रार्थना की। और उसका पसीना लोह की बूंदों के समान भूमि पर टपकने लगा।" (लूका 22:44)

### धार्मिक नेताओं द्वारा परीक्षण

*“यीशु ने महायाजकों, और मन्दिर के पहरेदारों, और पुरनियों से, जो उसके लिथे आए थे, कहा, क्या मैं बलवा करनेवाला हूँ, कि तुम तलवारें और लाठियाँ लिए आए हो? मैं प्रति दिन मन्दिर के आंगनों में तेरे संग रहा, और तू ने मुझ पर हाथ न लगाया। लेकिन यह तुम्हारी घड़ी है-जब अंधेरा राज करता है। तब वे उसे पकड़कर ले गए और महायाजक के घर में ले गए।” (लूका 22:52-54)*

आधी रात में गिरफ्तारी के बाद, यीशु को अगली बार महायाजक और महायाजक कैफा के सामने लाया गया। यहीं पर पहला शारीरिक आघात लगा था। कैफा द्वारा पूछे जाने पर चुप रहने के लिए एक सैनिक ने यीशु के चेहरे पर प्रहार किया। महल के पहरेदारों ने उसकी आंखें मूंद लीं और उसे ताना मारते हुए कहा कि जब वे प्रत्येक के पास से गुजरे तो उन्हें पहचानने के लिए, उस पर धूका और उसके चेहरे पर प्रहार किया।

### रोमन परीक्षण

*“तब पीलातुस वापस महल में गया, और यीशु को बुलवाकर पूछा, ‘क्या तू यहूदियों का राजा है?’ ‘क्या यह आपका अपना विचार है,’ यीशु ने पूछा, ‘या दूसरों ने आपसे मेरे बारे में बात की?’ ‘क्या मैं एक यहूदी हूँ?’ पिलातुस ने उत्तर दिया। ‘तेरी प्रजा और महायाजकों ने ही तुझे मेरे वश में कर दिया। तुमने क्या किया है?’ यीशु ने कहा, ‘मेरा राज्य इस संसार का नहीं है। यदि ऐसा होता, तो मेरे सेवक यहूदियों द्वारा मेरी गिरफ्तारी को रोकने के लिए संघर्ष करते। लेकिन अब मेरा राज्य दूसरी जगह से है।’ तो फिर तुम एक राजा हो।’ पिलातुस ने कहा। यीशु ने उत्तर दिया, ‘तुम ठीक कह रहे हो कि मैं एक राजा हूँ। वास्तव में मेरा जन्म इसी कारण से हुआ है, और मैं जगत में इसलिये आया हूँ, कि सत्य की गवाही दूँ। सच्चाई के पक्ष में हर कोई मेरी बात सुनता है।” (यूहन्ना 18:33-37)*

सुबह-सुबह, पस्त और चोटिल, निर्जलित, और एक नींद की रात से थके हुए, यीशु को किले एंटोनिया के प्रेटोरियम में ले जाया जाता है, यहूदिया के प्रोक््यूरेटर, पॉटियस पिलाट की सरकार की सीट। बेशक, आप यहूदिया के टेटार्क हेरोदेस एंटीपास को जिम्मेदारी सौंपने के प्रयास में पीलातुस की कार्रवाई से परिचित हैं। यीशु को स्पष्ट रूप से हेरोदेस के हाथों कोई शारीरिक दुर्व्यवहार नहीं हुआ और वह पीलातुस के पास वापस आ गया। से अनुकूलित - "एक चिकित्सक

*Everyone on the side of truth listens to me.'"* (John 18:33-37)

In the early morning, battered and bruised, dehydrated, and exhausted from a sleepless night, Jesus is taken across the Praetorium of the Fortress Antonia, the seat of government of the Procurator of Judea, Pontius Pilate. You are, of course, familiar with Pilate's action in attempting to pass responsibility to Herod Antipas, the Tetrarch of Judea. Jesus apparently suffered no physical mistreatment at the hands of Herod and was returned to Pilate. Adapted from - "A Physician Testifies About the Crucifixion, Dr. C. Truman Davis, [konnections.com/Kcundick/crucifix.html](http://konnections.com/Kcundick/crucifix.html)"

It was in response to the cries of the mob that Pilate ordered Bar-Abbas released and condemned Jesus to scourging and crucifixion.

### Questions

1. Following His Baptism, immersion in water, Jesus was:
  - a. \_\_\_ Full of the Holy Spirit
  - b. \_\_\_ Tempted but never yielding to the Devil's temptation
  - c. \_\_\_ Nothing happened
2. Temptation occurs when one is lured and enticed by their desires.  
True \_\_\_ False \_\_\_
3. I have been anointed to proclaim good news, forgiveness of sins.  
True \_\_\_ False \_\_\_
4. Many of the witnesses to Jesus' miracles recognized that only through God's power could they be performed.  
True \_\_\_ False \_\_\_
5. The religious leaders refused to recognize God's power in Jesus by His miracles.  
True \_\_\_ False \_\_\_

### Chapter 7

#### The Atoning Sacrifice

*"The soldiers led Jesus away into the palace (that is, the Praetorium) and called together the whole company of soldiers. They put a purple robe on him, then twisted together a crown of thorns and set it on him. And they began to call out to him, 'Hail, king of the Jews!'" Again, and again, they struck him on the head with a staff and spit on him. Falling on their*

कूसीफिकेशन के बारे में गवाही देता है, डॉ. सी. ट्रुमैन डेविस, [konnections.com/Kcundick/crucifix.html](http://konnections.com/Kcundick/crucifix.html)"

यह भीड़ के रोने की प्रतिक्रिया में था कि पीलातुस ने बार-अब्बास को रिहा करने का आदेश दिया और यीशु को कोड़े मारने और सूली पर चढ़ाने की निंदा की।

### प्रश्न

6. अपने बपतिस्मे के बाद, पानी में विसर्जन के बाद, यीशु थे:
  - a. \_\_\_ पवित्र आत्मा से भरपूर
  - b. \_\_\_ प्रलोभन दिया लेकिन शैतान के प्रलोभन के आगे कभी नहीं झुके
  - c. \_\_\_ कुछ नहीं हुआ
7. प्रलोभन तब होता है जब कोई अपनी इच्छाओं से बहक जाता है और बहक जाता है।  
सही गलत \_\_\_
8. मुझे शुभ समाचार, पापों की क्षमा का प्रचार करने के लिए अभिषेक किया गया है।  
सही गलत \_\_\_
9. यीशु के चमत्कारों के कई गवाहों ने माना कि केवल परमेश्वर की शक्ति के द्वारा ही उन्हें किया जा सकता है।  
सही गलत \_\_\_
10. धार्मिक नेताओं ने यीशु में उसके चमत्कारों से परमेश्वर की शक्ति को पहचानने से इनकार कर दिया।  
सही गलत \_\_\_

### अध्याय 7

#### प्रायश्चित्त बलिदान

*"सिपाहियों ने यीशु को महल (अर्थात्, प्रेटोरियम) में ले जाया और सैनिकों की पूरी टीम को एक साथ बुलाया। उन्होंने उस पर बैजनी वस्त्र पहिनाया, और कांटों का मुकुट गूंथकर उस पर लगाया। और वे उसे पुकारने लगे, 'यहूदियों के राजा, जय हो! वे बार-बार लाठी से उसके सिर पर वार करते और उस पर थूकते थे। उन्होंने घुटनों के बल गिरकर उन्हें श्रद्धांजलि दी। और जब उन्होंने उसका ठट्टा किया, तब उन्होंने बैजनी वस्त्र उतारकर उसी के वस्त्र उस पर पहिनाए।'" (मरकुस 15:16-20)*

#### कोड़े

सूली पर चढ़ाने की प्रस्तावना के रूप में असामान्य कोड़े मारने के बारे में अधिकारियों के बीच बहुत असहमति है। इस काल के अधिकांश रोमन लेखक इन दोनों को नहीं जोड़ते हैं। कई विद्वानों का मानना है कि पीलातुस ने मूल रूप से यीशु को अपनी पूरी सजा के रूप में कोड़े मारने का आदेश दिया था और क्रूस द्वारा मौत की सजा केवल भीड़ द्वारा ताने के जवाब में आई थी कि प्रोक्व्यूरेटर इस ढोंग के खिलाफ

*knees, they paid homage to him. And when they had mocked him, they took off the purple robe and put his own clothes on him.” (Mark 15:16-20)*

### Scourging

There is much disagreement among authorities about the unusual scourging as a prelude to crucifixion. Most Roman writers from this period do not associate the two. Many scholars believe that Pilate originally ordered Jesus scourged as his full punishment and that the death sentence by crucifixion came only in response to the taunt by the mob that the Procurator was not properly defending Caesar against this pretender who allegedly claimed to be the King of the Jews.

Preparations for the scourging were carried out when the Prisoner was stripped of His clothing and His hands tied to a post above His head. It is doubtful the Romans would have made any attempt to follow the Jewish law in this matter, but the Jews had an ancient law prohibiting more than forty lashes.

The Roman legionnaire steps forward with the flagrum (or flagellum) in his hand. This is a short whip consisting of several heavy, leather thongs with two small balls of lead attached near the ends of each. The heavy whip is brought down with full force again and again across Jesus' shoulders, back, and legs. At first the thongs cut through the skin only. Then, as the blows continue, they cut deeper into the subcutaneous tissues, producing first an oozing of blood from the capillaries and veins of the skin, and finally spurting arterial bleeding from vessels in the underlying muscles.

The small balls of lead first produce large, deep bruises which are broken open by subsequent blows. Finally, the skin of the back is hanging in long ribbons and the entire area is an unrecognizable mass of torn, bleeding tissue. When it is determined by the centurion in charge that the prisoner is near death, the beating is finally stopped.

The half-fainting Jesus is then untied and allowed to slump to the stone pavement, wet with His own blood. The Roman soldiers see a great joke in this provincial Jew claiming to be king. They throw a robe across His shoulders and place a stick in His hand for a scepter. They still need a crown to make their travesty complete. Flexible branches covered with long thorns (commonly used in bundles for firewood) are plaited into the shape of a crown and this is pressed into His

सीज़र का ठीक से बचाव नहीं कर रहा था, जिसने कथित तौर पर राजा होने का दावा किया था। यहूदी।

कोड़े मारने की तैयारी तब की गई जब कैदी के कपड़े उतार दिए गए और उसके हाथ उसके सिर के ऊपर एक पोस्ट से बंधे थे। यह संदेहास्पद है कि रोमनों ने इस मामले में यहूदी कानून का पालन करने का कोई प्रयास किया होगा, लेकिन यहूदियों के पास एक प्राचीन कानून था जो चालीस से अधिक कोड़ों को प्रतिबंधित करता था।

रोमन लेगियोनेयर अपने हाथ में फ्लैग्रम (या फ्लैगेलम) लेकर आगे बढ़ता है। यह एक छोटा चाबुक है जिसमें कई भारी, चमड़े के थॉंग होते हैं, जिनमें से प्रत्येक के सिरों के पास सीसे की दो छोटी गेंदें जुड़ी होती हैं। भारी चाबुक को यीशु के कंधों, पीठ और पैरों पर बार-बार पूरी ताकत के साथ नीचे लाया जाता है। पहले तो थॉंग्स त्वचा से ही कटते हैं। फिर, जैसे-जैसे वार जारी रहता है, वे चमड़े के नीचे के ऊतकों में गहराई से कट जाते हैं, जिससे पहले त्वचा की केशिकाओं और नसों से रक्त का रिसाव होता है, और अंत में अंतर्निहित मांसपेशियों में वाहिकाओं से धमनी रक्तस्राव होता है।

लेड की छोटी गेंदें पहले बड़े, गहरे घाव पैदा करती हैं जो बाद के वार से खुल जाती हैं। अंत में, पीठ की त्वचा लंबे रिबन में लटकी हुई है और पूरा क्षेत्र फटे, खून बहने वाले ऊतक का एक अपरिचित द्रव्यमान है। जब संचुरियन प्रभारी द्वारा यह निर्धारित किया जाता है कि कैदी मृत्यु के निकट है, तो अंततः पिटाई बंद कर दी जाती है।

आधे बेहोश यीशु को तब खोल दिया जाता है और पत्थर के फुटपाथ पर गिरने दिया जाता है, अपने ही खून से गीला हो जाता है। राजा होने का दावा करने वाले इस प्रांतीय यहूदी में रोमन सैनिकों को एक बड़ा मजाक दिखाई देता है। वे उसके कंधों पर एक वस्त्र फेंकते हैं और एक राजदंड के लिए उसके हाथ में एक छड़ी रखते हैं। उन्हें अभी भी अपनी त्रासदी को पूरा करने के लिए एक ताज की जरूरत है। लंबे कांटों से ढकी लचीली शाखाओं (आमतौर पर जलाऊ लकड़ी के बंडलों में उपयोग की जाती हैं) को एक मुकुट के आकार में बांधा जाता है और इसे उनकी खोपड़ी में दबाया जाता है। फिर से, प्रचुर मात्रा में रक्तस्राव होता है, खोपड़ी शरीर के सबसे संवहनी क्षेत्रों में से एक है। उसका उपहास करने और उसके चेहरे पर प्रहार करने के बाद, सैनिक उसके हाथ से छड़ी लेते हैं और उसके सिर पर वार करते हैं, कांटों को उसकी खोपड़ी में गहराई तक ले जाते हैं। अंत में, वे अपने परपीड़क खेल से थक जाते हैं और उनकी पीठ से लबादा फाड़ दिया जाता है। पहले से ही घावों में रक्त और सीरम के थक्कों का पालन करने के बाद, इसके हटाने से कष्टदायी दर्द होता है जैसे कि एक शल्य चिकित्सा पट्टी को लापरवाही से हटाने में, और लगभग जैसे कि उसे फिर से कोड़ा जा रहा हो, घाव एक बार फिर से खून बहने लगते हैं।

### सूली पर चढ़ाया

यहूदी प्रथा के सम्मान में, रोम के लोग उसके वस्त्र लौटा देते हैं। क्रॉस का भारी पेटीबुलम उसके कंधों पर बंधा हुआ है, और निंदा किए गए

scalp. Again, there is copious bleeding, the scalp being one of the most vascular areas of the body.

After mocking Him and striking Him across the face, the soldiers take the stick from His hand and strike Him across the head, driving the thorns deeper into His scalp. Finally, they tire of their sadistic sport and the robe is torn from His back. Already having adhered to the clots of blood and serum in the wounds, its removal causes excruciating pain just as in the careless removal of a surgical bandage, and almost as though He were again being whipped, the wounds once more begin to bleed.

### Crucifixion

In deference to Jewish custom, the Romans return His garments. The heavy patibulum of the cross is tied across His shoulders, and the procession of the condemned Christ, two thieves, and the execution detail of Roman soldiers headed by a centurion begins its slow journey along the Via Dolorosa. In spite of His efforts to walk erect, the weight of the heavy wooden beam, together with the shock produced by copious blood loss, is too much. He stumbles and falls. The rough wood of the beam gouges into the lacerated skin and muscles of the shoulders. He tries to rise, but human muscles have been pushed beyond their endurance.

The centurion, anxious to get on with the crucifixion, selects a stalwart North African onlooker, Simon of Cyrene, to carry the cross. Jesus follows, still bleeding and sweating the cold, clammy sweat of shock, until the 650-yard journey from the fortress Antonia to Golgotha is finally completed.

Jesus is offered wine mixed with myrrh, a mild analgesic mixture. He refuses to drink. Simon is ordered to place the patibulum on the ground and Jesus is quickly thrown backward with His shoulders against the wood. The legionnaire feels for the depression at the front of the wrist. He drives a heavy, square, wrought-iron nail through the wrist and deep into the wood. Quickly, he moves to the other side and repeats the action being careful not to pull the arms too tightly, but to allow some flexion and movement. The patibulum is then lifted in place at the top of the stipes and the titulus reading "Jesus of Nazareth, King of the Jews" is nailed in place.

The left foot is now pressed backward against the right foot, and with both feet extended, toes down, a nail is driven through the arch of each, leaving the knees moderately flexed. The victim is now crucified. As He

मसीह, दो चोरों का जुलूस, और एक सेंचुरियन के नेतृत्व में रोमन सैनिकों का निष्पादन विवरण वाया डोलोरोसा के साथ अपनी धीमी यात्रा शुरू करता है। सीधा चलने के उनके प्रयासों के बावजूद, भारी रक्त हानि से उत्पन्न झटके के साथ लकड़ी के भारी बीम का वजन बहुत अधिक है। वह ठोकर खाकर गिर जाता है। बीम की खुरदरी लकड़ी फटी त्वचा और कंधों की मांसपेशियों में घुस जाती है। वह उठने की कोशिश करता है, लेकिन मानव मांसपेशियों को उनके धीरज से परे धकेल दिया गया है।

सूली पर चढ़ने के लिए उत्सुक, सूली पर चढ़ने के लिए उत्सुक, एक कट्टर उत्तरी अफ्रीकी दर्शक, साइरेन के साइमन को क्रॉस ले जाने के लिए चुनता है। यीशु पीछा करता है, अभी भी खून बह रहा है और सदमे का ठंडा, चिपचिपा पसीना पसीना आ रहा है, जब तक कि किले एंटोनिया से गोलगोथा तक 650 गज की यात्रा आखिरकार पूरी नहीं हो जाती।

यीशु को लोहबान के साथ मिश्रित शराब की पेशकश की जाती है, एक हल्का एनाल्जेसिक मिश्रण। उसने पीने से इंकार कर दिया। साइमन को पेटीबुलम को जमीन पर रखने का आदेश दिया जाता है और यीशु को लकड़ी के खिलाफ अपने कंधों के साथ जल्दी से पीछे की ओर फेंक दिया जाता है। लेगियोनेयर कलाई के सामने अवसाद के लिए महसूस करता है। वह एक भारी, चौकोर, गढ़ा-लोहे की कील को कलाई से और लकड़ी में गहराई तक चलाता है। जल्दी से, वह दूसरी तरफ जाता है और इस क्रिया को दोहराता है कि बाहों को बहुत कसकर न खींचे, बल्कि कुछ लचीलेपन और गति की अनुमति दें। तब पेटीबुलम को स्टेप्स के शीर्ष पर जगह में उठाया जाता है और "नासरत के यीशु, यहूदियों के राजा" पढ़ने वाले शीर्षक को जगह में रखा जाता है।

बाएं पैर को अब दाहिने पैर के खिलाफ पीछे की ओर दबाया जाता है, और दोनों पैरों को फैलाकर, पैर की उंगलियों को नीचे करके, प्रत्येक के आर्च के माध्यम से एक कील को घुमाया जाता है, जिससे घुटनों को मध्यम रूप से फ्लेक्स किया जाता है। पीड़ित को अब सूली पर चढ़ाया गया है। जैसे-जैसे वह धीरे-धीरे कलाई में नाखूनों पर अधिक भार के साथ नीचे की ओर झुकता है, उंगलियों के साथ दर्दनाक दर्द और मस्तिष्क में विस्फोट करने के लिए बाहों में दर्द होता है - कलाई में नाखून मध्य नसों पर दबाव डाल रहे हैं। जैसे ही वह इस खिंचाव वाली पीड़ा से बचने के लिए खुद को ऊपर की ओर धकेलता है, वह अपना पूरा वजन अपने पैरों के माध्यम से कील पर रखता है। फिर से, पैरों की मेटाटार्सल हड्डियों के बीच की नसों के माध्यम से कील फटने की भीषण पीड़ा होती है।

"वे गोलगोथा नामक स्थान पर आए (जिसका अर्थ है खोपड़ी का स्थान)। वहाँ उन्होंने यीशु को पित्त मिला हुआ दाखमधु पिलाया; लेकिन उसे चखने के बाद उसने पीने से इनकार कर दिया। जब उन्होंने उसे सूली पर चढ़ाया, तो चिट्ठी डालकर उसके कपड़े बांट दिए। और वे

slowly sags down with more weight on the nails in the wrists excruciating pain shoots along the fingers and up the arms to explode in the brain -- the nails in the wrists are putting pressure on the median nerves. As He pushes Himself upward to avoid this stretching torment, He places His full weight on the nail through His feet. Again, there is the searing agony of the nail tearing through the nerves between the metatarsal bones of the feet.

“They came to a place called Golgotha (which means The Place of the Skull). There they offered Jesus wine to drink, mixed with gall; but after tasting it, he refused to drink it. When they had crucified him, they divided up his clothes by casting lots. And sitting down, they kept watch over him there. Above his head they placed the written charge against him: THIS IS JESUS, THE KING OF THE JEWS.” (Matthew 27:33-37)

“It was the third hour (9:00 am) when they crucified him. The written notice of the charge against him read: THE KING OF THE JEWS.” (Mark 15:25-27)

“At the sixth hour [noon] darkness came over the whole land until the ninth hour. And at the ninth hour Jesus cried out in a loud voice, ‘Eloi, Eloi, lama sabachthani?’ - which means, My God, my God, why have you forsaken me?” (Mark 15:33-34)

At this point, as the arms fatigue, great waves of cramps sweep over the muscles, knotting them in deep, relentless, throbbing pain. With these cramps comes the inability to push Himself upward. Hanging by his arms, the pectoral muscles are paralyzed and the intercostal muscles are unable to act. Air can be drawn into the lungs, but cannot be exhaled. Jesus fights to raise Himself in order to get even one short breath. Finally, carbon dioxide builds up in the lungs and in the blood stream and the cramps partially subside. Spasmodically, he is able to push Himself upward to exhale and bring in the life-giving oxygen. It was undoubtedly during these periods that He uttered the seven short sentences recorded.

The first, "Father, forgive them for they know not what they do."

The second, to the penitent thief, "Today thou shalt be with me in Paradise."

The third, looking down at the terrified, grief-stricken adolescent John -- the beloved Apostle -- he said, "Behold thy mother." Then, looking to His mother Mary, "Woman behold thy son."

बैठे बैठे उस पर पहरा देते रहे। उन्होंने उसके सिर के ऊपर यह लिखा हुआ आरोप लगाया कि यह यहूदियों का राजा यीशु है।” (मत्ती 27:33-37)

“यह तीसरा घंटा (सुबह 9:00 बजे) था जब उन्होंने उसे सूली पर चढ़ाया। उनके खिलाफ आरोप का लिखित नोटिस पढ़ा: द किंग ऑफ द ज्यूज़। (मरकुस 15:25-27)

“छठे घंटे [दोपहर] के नौवें घंटे तक सारे देश में अँधेरा छा गया। और नौवें घंटे यीशु ने ऊंचे शब्द से पुकारा, 'एलोई, एलोई, लमा सबक्तनी?' - जिसका अर्थ है, मेरे भगवान, मेरे भगवान, तुमने मुझे क्यों छोड़ दिया है?" (मरकुस 15:33-34)

इस बिंदु पर, जैसे ही बाहों की थकान होती है, ऐंठन की बड़ी लहरें मांसपेशियों पर हावी हो जाती हैं, उन्हें गहरी, निरंतर, धड़कते हुए दर्द में बांधती हैं। इन ऐंठन के साथ खुद को ऊपर की ओर धकेलने में असमर्थता आती है। उसकी बाहों से लटकते हुए, पेक्टरल मांसपेशियां लकवाग्रस्त हो जाती हैं और इंटरकोस्टल मांसपेशियां कार्य करने में असमर्थ होती हैं। फेफड़ों में हवा खींची जा सकती है, लेकिन साँस नहीं छोड़ी जा सकती। यीशु एक छोटी साँस लेने के लिए खुद को ऊपर उठाने के लिए संघर्ष करता है। अंत में, कार्बन डाइऑक्साइड फेफड़ों और रक्त प्रवाह में बनता है और ऐंठन आंशिक रूप से कम हो जाती है। स्पस्मोडिक रूप से, वह साँस छोड़ने और जीवन देने वाली ऑक्सीजन लाने के लिए खुद को ऊपर की ओर धकेलने में सक्षम है। निस्संदेह इन अवधियों के दौरान उसने दर्ज किए गए सात छोटे वाक्यों का उच्चारण किया।

पहला, "पिताजी, उन्हें क्षमा करें क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या करते हैं।"

दूसरा, पश्चाताप करने वाले चोर को, "आज तू मेरे साथ जन्नत में होगा।" तीसरा, भयभीत, दुःखी किशोर जॉन - प्रिय प्रेरित - को देखते हुए उसने कहा, "तेरी माँ को निहारना।" फिर, अपनी माता मरियम की ओर देखते हुए, "हे नारी तेरा पुत्र देख।"

चौथा रोना 22वें भजन की शुरुआत से है, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?"

असीमित दर्द के घंटे, मरोड़ के चक्र, जोड़ों के फटने की ऐंठन, रुक-रुक कर आंशिक श्वासावरोध, कर्कश दर्द जहां ऊतक उसकी विखंडित पीठ से फाड़ा जाता है। वह ऊबड़-खाबड़ लकड़ी के खिलाफ ऊपर और नीचे चलता है, असीम दर्द के घंटे, मरोड़ के चक्र, जोड़ों में ऐंठन, आंतरायिक आंशिक एस्प। फिर एक और पीड़ा शुरू होती है: छाती में एक भयानक कुचल दर्द होता है क्योंकि पेरीकार्डियम धीरे-धीरे सीरम से भर जाता है और हृदय को संकुचित करना शुरू कर देता है।

एक फिर से 22वां भजन, 14वाँ पद याद आता है: "मैं जल की नाई उण्डेल दिया गया, और मेरी सब हड्डियां जोड़ से बाहर हो गई हैं;

The fourth cry is from the beginning of the 22nd Psalm, "My God, my God, why hast thou forsaken me?"

Hours of limitless pain, cycles of twisting, joint-rending cramps, intermittent partial asphyxiation, searing pain where tissue is torn from His lacerated back. He moves up and down against the rough timber enduring hours of limitless pain, cycles of twisting, joint-rending cramps, intermittent partial asp. Then another agony begins: a terrible crushing pain deep in the chest as the pericardium slowly fills with serum and begins to compress the heart.

One remembers again the 22nd Psalm, the 14th verse: "I am poured out like water, and all my bones are out of joint; my heart is like wax; it is melted in the midst of my bowels."

It is now almost over. The loss of tissue fluids has reached a critical level; the compressed heart is struggling to pump heavy, thick, sluggish blood into the tissue; the tortured lungs are making a frantic effort to gasp in small gulps of air. The markedly dehydrated tissues send their flood of stimuli to the brain. Jesus gasps His fifth cry, "I thirst."

One remembers another verse from the prophetic 22nd Psalm: "My strength is dried up like a potsherd; and my tongue cleaveth to my jaws; and thou hast brought me into the dust of death."

A sponge soaked in posca, the cheap, sour wine which is the staple drink of the Roman legionaries, is lifted to His lips. He apparently doesn't take any of the liquid. The body of Jesus is now in extremes, and He can feel the chill of death creeping through His tissues. This realization brings out His sixth words "It is finished." His mission of atonement is now complete. Finally, He chooses to die. With one last surge of strength, he once again presses His torn feet against the nail, straightens His legs, takes a deeper breath, and utters His seventh and last cry, "Father! Into thy hands I commit my spirit."

The rest you know. In order that the Sabbath not be profaned, the Jews asked that the condemned men be dispatched and removed from the crosses. The common method of ending a crucifixion was by crurifracture, the breaking of the bones of the legs. This prevented the victim from pushing himself upward; thus, the tension could not be relieved from the muscles of the chest and rapid suffocation occurred. The legs of the two thieves were broken, but

मेरा हृदय मोम के समान है, वह मेरी अन्तड़ियों के बीच में पिघल गया है।"

यह अब लगभग खत्म हो चुका है। ऊतक तरल पदार्थ का नुकसान एक महत्वपूर्ण स्तर पर पहुंच गया है; संकुचित हृदय ऊतक में भारी, गाढ़ा, सुस्त रक्त पंप करने के लिए संघर्ष कर रहा है; उत्पीड़ित फेफड़े हवा के छोटे-छोटे झोंकों में हांफने की उन्मत्त कोशिश कर रहे हैं। स्पष्ट रूप से निर्जलित ऊतक मस्तिष्क को उत्तेजनाओं की बाढ़ भेजते हैं। यीशु ने अपनी पाँचवीं पुकार को हांफते हुए कहा, "मैं प्यासा हूँ।" भविष्यद्वाणी के 22वें भजन से एक और वचन याद आता है: "मेरा बल घड़े की नाई सूख गया है, और मेरी जीभ मेरे जबड़ों से चिपक गई है, और तू ने मुझे मृत्यु की धूल में डाल दिया है।"

पोस्का में लथपथ एक स्पंज, सस्ती, खट्टी शराब जो कि रोमन सेनापतियों का मुख्य पेय है, उनके होठों तक उठाई जाती है। वह स्पष्ट रूप से कोई तरल नहीं लेता है। यीशु का शरीर अब चरम पर है, और वह अपने ऊतकों से रेंगने वाली मृत्यु की ठंड को महसूस कर सकता है। यह अहसास उनके छठे शब्दों को सामने लाता है "यह समाप्त हो गया है।"

उनका प्रायश्चित का मिशन अब पूरा हो गया है। अंत में, वह मरने का विकल्प चुनता है। एक आखिरी ताकत के साथ, वह एक बार फिर अपने फटे पैरों को कील से दबाता है, अपने पैरों को सीधा करता है, एक गहरी सांस लेता है, और अपना सातवां और आखिरी रोना कहता है, "पिताजी! मैं अपनी आत्मा को तेरे हाथों में सौंपता हूँ।"

बाकी आप जानते हैं। ताकि सब्त को अपवित्र न किया जाए, यहूदियों ने मांग की कि निंदा किए गए लोगों को भेज दिया जाए और उन्हें सूली पर चढ़ा दिया जाए। सूली पर चढ़ाए जाने को समाप्त करने का सामान्य तरीका कुरकुरी फ्रैक्चर, पैरों की हड्डियों को तोड़ना था। इसने पीड़ित को खुद को ऊपर की ओर धकेलने से रोका; इस प्रकार, छाती की मांसपेशियों से तनाव को दूर नहीं किया जा सका और तेजी से घुटन हुई। दोनों चोरों के पैर टूट गए थे, लेकिन जब सिपाही यीशु के पास आए, तो उन्होंने देखा कि यह अनावश्यक था।

जाहिरा तौर पर मौत के बारे में दोगुना सुनिश्चित करने के लिए, लेगियोनेयर ने अपने लांस को पसलियों के बीच पांचवें चौराहे के माध्यम से, पेरीकार्डियम के माध्यम से और दिल में ऊपर की ओर चलाया। सेंट जॉन के अनुसार सुसमाचार के 19वें अध्याय का 34वां छंद रिपोर्ट करता है: "और तुरंत लोहू और पानी निकला।" अर्थात्, हृदय के आस-पास की थैली से पानी के तरल पदार्थ का पलायन हुआ, पोस्टमॉर्टम के सबूत देते हुए कि हमारे भगवान की मृत्यु सामान्य क्रूस पर घुटन से नहीं हुई, बल्कि दिल की विफलता (एक टूटा हुआ दिल) के झटके और दिल के संकुचन के कारण हुई। पेरीकार्डियम में तरल पदार्थ।

इस प्रकार, हमें हमारी झलक मिली है - चिकित्सा साक्ष्य सहित - बुराई के उस प्रतीक की जिसे मनुष्य ने मनुष्य और ईश्वर की ओर प्रदर्शित



when the soldiers came to Jesus, they saw that this was unnecessary.

Apparently to make doubly sure of death, the legionnaire drove his lance through the fifth interspace between the ribs, upward through the pericardium and into the heart. The 34th verse of the 19th chapter of the Gospel according to St. John reports: "And immediately there came out blood and water." That is, there was an escape of water fluid from the sac surrounding the heart, giving postmortem evidence that Our Lord died not the usual crucifixion death by suffocation, but of heart failure (a broken heart) due to shock and constriction of the heart by fluid in the pericardium.

Thus, we have had our glimpse -- including the medical evidence -- of that epitome of evil which man has exhibited toward Man and **toward God. It has been a terrible sight, and more than enough to leave us despondent and depressed.** How grateful we can be that we have the great sequel in the infinite mercy of God toward man.

**Scourging and Crucifixion** were adapted from – "A Physician Testifies About the Crucifixion, Dr. C. Truman Davis, [konnections.com/Kcundick/crucifix.html](http://konnections.com/Kcundick/crucifix.html)"

David foretold it this way *"My God, my God, why have you forsaken me? Why are you so far from saving me, so far from the words of my groaning? ... But I am a worm and not a man, scorned by men and despised by the people. All who see me mock me; they hurl insults, shaking their heads: He trusts in the LORD; let the LORD rescue him. Let him deliver him, since he delights in him. ... I am poured out like water, and all my bones are out of joint. My heart has turned to wax; it has melted away within me. My strength is dried up like a potsherd, and my tongue sticks to the roof of my mouth; you lay me in the dust of death. Dogs have surrounded me; a band of evil men has encircled me, they have pierced my hands and my feet. I can count all my bones; people stare and gloat over me. They divide my garments among them and cast lots for my clothing. ... All the ends of the earth will remember and turn to the LORD, and all the families of the nations will bow down before him, for dominion belongs to the LORD and he rules over the nations. All the rich of the earth will feast and worship; all who go down to the dust will kneel before him — those who cannot keep themselves alive. Posterity will serve him; future generations will be told about the Lord. They will*

किया है। यह एक भयानक दृश्य रहा है, और हमें निराश और उदास छोड़ने के लिए पर्याप्त से अधिक है। हम कितने आभारी हो सकते हैं कि मनुष्य के प्रति ईश्वर की असीम दया में हमारे पास महान अगली कड़ी है।

**दस्त और सूली पर चढ़ना** से अनुकूलित किया गया था - "ए फिजिशियन टेस्टीफाईज अबाउट द क्रूसीफिक्शन, डॉ. सी. ट्रुमैन डेविस, [konnections.com/Kcundick/crucifix.html](http://konnections.com/Kcundick/crucifix.html)"

दाऊद ने इसे इस प्रकार पूर्वबताया, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया? तुम मुझे बचाने से इतनी दूर क्यों हो, मेरे कराहने के शब्दों से इतनी दूर? ... परन्तु मैं तो कीड़ा हूँ, न कि मनुष्य, जो मनुष्यों के द्वारा तिरस्कृत और प्रजा के द्वारा तुच्छ जाना जाता है। जो मुझे देखते हैं वे सब मेरा उपहास करते हैं; वे सिर हिलाकर गाली गलौज करते हैं; वह यहोवा पर भरोसा रखता है; यहोवा उसे छुड़ाए। वह उसे छुड़ाए, क्योंकि वह उस से प्रसन्न होता है। ... मैं जल की नाई उँडेल दिया गया हूँ, और मेरी सब हड्डियाँ जोड़ से बाहर हो गई हैं। मेरा दिल मोम हो गया है; यह मेरे भीतर पिघल गया है। मेरा बल घड़े के समान सूख गया है, और मेरी जीभ मेरे मुँह की छत से चिपक गई है; तू ने मुझे मृत्यु की धूल में डाल दिया। कुत्तों ने मुझे घेर लिया है; दुष्टों के दल ने मुझे घेर लिया है, उन्होंने मेरे हाथ और मेरे पाँवों को बेध दिया है। मैं अपनी सारी हड्डियों को गिन सकता हूँ; लोग घूरते हैं और मुझ पर प्रसन्न होते हैं। वे मेरे वस्त्र आपस में बाँटते हैं, और मेरे वस्त्र के लिथे चिट्ठी डालते हैं। ... पृथ्वी के सब दूर देश स्मरण करके यहोवा की ओर फिरेंगे, और जाति जाति के सब कुल उसके साम्हने दण्डवत् करेंगे, क्योंकि प्रभु ही का है, और वह अन्यजातियों पर प्रभुता करता है। पृथ्वी के सब धनी लोग पर्व करेंगे और दण्डवत् करेंगे; जितने लोग मिट्टी में मिल जाएंगे, वे सब उसके साम्हने घुटने टेकेंगे; जो अपने आप को जीवित नहीं रख सकते। वंश उसकी सेवा करेगा; आने वाली पीढ़ियों को यहोवा के बारे में बताया जाएगा। वे उसके धर्म का प्रचार उन लोगों पर करेंगे जो अभी तक अजन्मे नहीं हैं - क्योंकि उस ने यह किया है।" (भजन 22:1-8; 14-18; 27-31) वंश उसकी सेवा करेगा; आने वाली पीढ़ियों को यहोवा के बारे में बताया जाएगा। वे उसके धर्म का प्रचार उन लोगों पर करेंगे जो अभी तक अजन्मे नहीं हैं - क्योंकि उस ने यह किया है।" (भजन 22:1-8; 14-18; 27-31) वंश उसकी सेवा करेगा; आने वाली पीढ़ियों को यहोवा के बारे में बताया जाएगा। वे उसके धर्म का प्रचार उन लोगों पर करेंगे जो अभी तक अजन्मे नहीं हैं - क्योंकि उस ने यह किया है।" (भजन 22:1-8; 14-18; 27-31)

### दफ़न

"यह तैयारी का दिन था (अर्थात् सब्ब से एक दिन पहले)। इसलिए, जैसे ही शाम हुई, अरिमथिया के यूसुफ, परिषद के एक प्रमुख सदस्य, जो स्वयं परमेश्वर के राज्य की प्रतीक्षा कर रहे थे, साहसपूर्वक पीलातुस के पास गए और यीशु के शरीर के लिए कहा। पीलातुस यह सुनकर चकित रह गया कि वह पहले ही मर चुका है। सूबेदार को बुलाकर

proclaim his righteousness to a people yet unborn — for he has done it.” (Psalm 22:1-8; 14-18; 27-31)

### Burial

“It was Preparation Day (that is, the day before the Sabbath). So, as evening approached, Joseph of Arimathea, a prominent member of the Council, who was himself waiting for the kingdom of God, went boldly to Pilate and asked for Jesus’ body. Pilate was surprised to hear that he was already dead. Summoning the centurion, he asked him if Jesus had already died. When he learned from the centurion that it was so, he gave the body to Joseph. So, Joseph bought some linen cloth, took down the body, wrapped it in the linen, and placed it in a tomb cut out of rock. Then he rolled a stone against the entrance of the tomb.” (Mark 15:42-46)

### Resurrection

Jesus of Nazareth, The Messiah, did His Father’s will (John 6:38) by offering His body of flesh as the only sacrifice that could atone for man’s sins, forgiveness. His sin offering was accepted by God as evidenced of His resurrection from death. Without His resurrection Jesus’ death would have been meaningless, no different than all mankind.

“After the Sabbath, at dawn on the first day of the week, Mary Magdalene and the other Mary went to look at the tomb. There was a violent earthquake, for an angel of the Lord came down from heaven and, going to the tomb, rolled back the stone and sat on it. His appearance was like lightning, and his clothes were white as snow. The guards were so afraid of him that they shook and became like dead men. The angel said to the women, “Do not be afraid, for I know that you are looking for Jesus, who was crucified. He is not here; he has risen, just as he said.” (Matt 28:1-6)

“On the evening of that first day of the week, when the disciples were together, with the doors locked for fear of the Jews, Jesus came and stood among them and said, ‘Peace be with you!’ After he said this, he showed them his hands and side. The disciples were overjoyed when they saw the Lord. Again, Jesus said, ‘Peace be with you! As the Father has sent me, I am sending you.’ And with that he breathed on them and said, ‘Receive the Holy Spirit.’” (John 20:19-22)

“A week later his disciples were in the house again, and Thomas was with them. Though the doors were locked, Jesus came and stood among them and said, ‘Peace be with you!’ Then he said to Thomas, ‘Put

उसने उससे पूछा कि क्या यीशु पहले ही मर चुका है। जब उस ने सूबेदार से जान लिया कि ऐसा ही है, तो उस ने उसकी लीय यूसुफ को दे दी। सो यूसुफ ने कुछ सनी का कपड़ा मोल लिया, और लीय को उतारकर उस सनी में लपेटा, और चट्टान की बनी हुई कब्र में रखा। तब उसने कब्र के द्वार पर एक पत्थर लुढ़काया।” (मरकुस 15:42-46)

### जी उठने

नासरत के यीशु, मसीहा ने अपने पिता की इच्छा (यूहन्ना 6:38) को अपने मांस के शरीर को एकमात्र बलिदान के रूप में पेश किया जो मनुष्य के पापों, क्षमा का प्रायश्चित्त कर सकता था। उसके पापबलि को परमेश्वर ने मृत्यु से उसके पुनरुत्थान के प्रमाण के रूप में स्वीकार किया था। उसके पुनरुत्थान के बिना यीशु की मृत्यु अर्थहीन होती, जो सभी मानवजाति से भिन्न नहीं होती।

“सब्त के दिन के बाद, सप्ताह के पहिले दिन भोर को मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने गई। एक भयंकर भूकम्प हुआ, क्योंकि यहोवा का एक दूत स्वर्ग से उतरा, और कब्र पर जाकर पत्थर को लुढ़काकर उस पर बैठ गया। उसका रूप बिजली की तरह था, और उसके कपड़े बर्फ की तरह सफेद थे। पहरेदार उससे इतना डरते थे कि वे काँपते थे और मरे हुए लोगों की तरह हो जाते थे। स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, “उरो मत, क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम यीशु को, जो क्रूस पर चढ़ाया गया था, ढूँढ़ रही हो। वह यहाँ नहीं है; जैसा उसने कहा, वैसा ही वह जी उठा है।” (मत्ती 28:1-6)

“सप्ताह के उस पहिले दिन की सांझ को जब चले यहूदियों के डर से द्वार बन्द किए हुए इकट्ठे थे, तब यीशु आया, और उनके बीच खड़ा हो गया, और कहा, ‘तुम्हें शांति मिलो!’ इतना कहने के बाद उसने उन्हें अपने हाथ और बाजू दिखाए। प्रभु को देखकर शिष्य बहुत प्रसन्न हुए। फिर से, यीशु ने कहा, ‘तुम्हें शांति मिलो! जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं तुम्हें भेज रहा हूँ।’ और उस ने उन पर फूंक मारी, और कहा, ‘पवित्र आत्मा ग्रहण करो!’” (यूहन्ना 20:19-22)

“एक सप्ताह के बाद उसके चले फिर घर में थे, और थोमा उनके साथ था। हालाँकि दरवाजे बंद थे, यीशु आया और उनके बीच खड़ा हो गया और कहा, ‘तुम्हें शांति मिलो!’ तब उस ने थोमा से कहा, अपनी उँगली यहाँ रख; मेरे हाथ देखो। अपना हाथ बढ़ा कर मेरी बाजू में रख दो। शक करना बंद करो और विश्वास करो।’ थोमा ने उस से कहा, ‘हे मेरे प्रभु और मेरे परमेश्वर!’” (यूहन्ना 20:26-28)

बलिदान पापबलि और पुनरुत्थान के साथ यीशु ने अपनी मृत्यु के द्वारा मनुष्य के साथ एक नई वाचा स्थापित की। (इब्रा. 9:15)

परमेश्वर इस नई वाचा में उन लोगों को रखता है जो मानते हैं कि मसीह एक मानव शरीर में परमेश्वर था, एक पापी जीवन से एक धर्मी जीवन में परिवर्तन, और परमेश्वर से मसीह के लहू में डूबे रहने के द्वारा क्षमा करने की याचना करता है। वे अब मसीह की देह में हैं, “मेरी कलीसिया” जिसे उसने अपने बलिदान और पुनरुत्थान के द्वारा स्थापित किया था।

प्रश्न

*your finger here; see my hands. Reach out your hand and put it into my side. Stop doubting and believe.' Thomas said to him, 'My Lord and my God!'" (John 20:26-28)*

With the sacrificial sin offering and resurrection Jesus established a New Covenant with man by HIS death. (Heb. 9:15)

God puts those in this New Covenant who believe Christ was God in a human body, change from a sinful life to a righteous one, and plead to God to forgive by being immersed in Christ's blood. They are now in Christ's Body, the "My Church" He established by His sacrifice and resurrection.

#### Questions

1. With His atoning sacrifice and resurrection Jesus established a New Covenant with Man. True \_\_\_ False \_\_\_
2. Who does God put into the New Covenant?
  - a. \_\_\_ Those who believe Jesus was God in human body
  - b. \_\_\_ Those who repent – change from a sinful life
  - c. \_\_\_ Those who plead for forgiveness by being Baptized
  - d. \_\_\_ All the above.
3. Those put into the New Covenant are in the Church Christ established. True \_\_\_ False \_\_\_

#### Chapter 8

### Instructions to His Disciples

*"My food," said Jesus "is to do the will of him who sent me and to finish his work. Do you not say, 'Four months more and then the harvest'? I tell you, open your eyes and look at the fields! They are ripe for harvest. Even now the reaper draws his wages, even now he harvests the crop for eternal life, so that the sower and the reaper may be glad together. Thus, the saying 'One sows and another reaps' is true. I sent you to reap what you have not worked for. Others have done the hard work, and you have reaped the benefits of their labor." (John 4:34-38)*

What is this sowing and reaping that those in Christ are to do?

#### Make Disciples

*"Jesus told His disciples shortly before He returned to the Father that 'All authority in heaven and on earth*

4. अपने प्रायश्चित्त बलिदान और पुनरुत्थान के साथ यीशु ने मनुष्य के साथ एक नई वाचा की स्थापना की। सही गलत \_\_\_
5. परमेश्वर ने नई वाचा में किसे रखा है?
  - a. \_\_\_ जो लोग मानते हैं कि यीशु मानव शरीर में भगवान थे
  - b. \_\_\_ पश्चाताप करने वाले - पापी जीवन से परिवर्तन
  - c. \_\_\_ जो बपतिस्मा लेकर क्षमा की याचना करते हैं
  - d. \_\_\_ सब से ऊपर।
6. जिन्हें नई वाचा में रखा गया है वे चर्च में स्थापित क्राइस्ट में हैं। सही गलत \_\_\_

#### अध्याय 8

### अपने शिष्यों को निर्देश

*"मेरा भोजन," यीशु ने कहा, "मेरे भेजने वाले की इच्छा पूरी करना और उसका काम पूरा करना है। क्या आप यह नहीं कहते हैं, 'चार महीने और फिर फसल'? मैं तुमसे कहता हूँ, अपनी आंखें खोलो और देखो खेत हैं, वे कटनी के लिए पके हैं। अब भी काटने वाला अपनी मजदूरी लेता है, अब भी वह अनंत जीवन के लिए फसल काटता है, ताकि बोने वाला और काटने वाला एक साथ खुश रहें। इस प्रकार, 'एक बोता है और दूसरा काटता है' कहावत सच है। मैंने तुम्हें वह काटने के लिए भेजा है जिसके लिए तुमने काम नहीं किया है। दूसरों ने कड़ी मेहनत की है, और तुमने उनके श्रम का लाभ उठाया है।" (यूहन्ना 4:34-38)*  
यह बोना और काटना क्या है जो मसीह में करनेवालों को करना है?

#### शिष्य बनाओ

*"यीशु ने अपने पिता के पास लौटने से कुछ समय पहले अपने शिष्यों से कहा कि 'स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए जाकर सब जातियों को चेला बनाओ, और उन्हें नाम से बपतिस्मा दो (अधिकार) पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा का।" (मत्ती 28:18-19)*

*"सारी दुनिया में जाओ और प्रचार करो (घोषणा) सभी सृष्टि के लिए खुशखबरी (उद्धार मसीह के जीवन, मृत्यु [प्रायश्चित्त बलिदान], मृत्यु, दफन और पुनरुत्थान के माध्यम से है)। जो कोई विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास नहीं करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस 16:15-16)*

जो लोग क्षमा और उद्धार के मसीह के संदेश को स्वीकार करते हैं, उन्हें "उन सब बातों का पालन करना जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी हैं, मानना" सिखाया जाना चाहिए (मत्ती 28:20)। प्रेरितों के काम 2:42 में

has been given to me. Therefore, go and make disciples of all nations, baptizing them in the name (authority) of the Father and of the Son and of the Holy Spirit.” (Matthew 28:18-19)

“Go into all the world and preach (proclaim) the good news (salvation is through Christ’s life, death [the atoning sacrifice], death, burial and resurrection) to all creation. Whoever believes and is baptized will be saved, but whoever does not believe will be condemned.” (Mark 16:15-16)

Those who accept Christ’s message of forgiveness and salvation are to be taught to “observe all things that I have commanded you” (Matthew 28:20). In Acts 2:42 we find “they devoted themselves to the apostles’ teaching and fellowship, to the breaking of bread and the prayers.”

**Comment:** “Breaking Bread” probably refers eating their common meal together. However, it could have been the “Lord’s Supper” or both. The apostles’ teachings were not of man’s tradition or the apostles’ opinion but the Words Christ spoke as the Holy Spirit enabled them to recall.

Were the apostles and disciples the only ones who had the task of preaching/teaching the Gospel? NO.

“On that day (stoning of Stephen) a great persecution broke out against those belonging to the way (those in Christ) at Jerusalem, and all except the apostles were scattered throughout Judea and Samaria. Godly men buried Stephen and mourned deeply for him. ... Those who had been scattered preached (euaggelizo - therefore, evangelized as keérux is the Greek word for preach) the word wherever they went.” (Acts 8:1-5)

The apostle Paul stated “I am not ashamed of the gospel, because it is the power of God for the salvation of everyone who believes, (those who act upon their faith).” (Romans 1:16)

#### Questions

1. Jesus said My food is to do the will of My father.  
True \_\_\_ False\_\_\_

हम पाते हैं कि "उन्होंने अपने आप को प्रेरितों की शिक्षा और संगति में, और रोटी तोड़ने और प्रार्थना करने में लगा दिया।"

**टिप्पणी:** "ब्रेड ब्रेकिंग" का तात्पर्य शायद एक साथ अपना सामान्य भोजन खाने से है। हालाँकि, यह "भगवान का भोज" या दोनों हो सकता था। प्रेरितों की शिक्षाएं मनुष्य की परंपरा या प्रेरितों की राय की नहीं थीं, लेकिन वे शब्द जो मसीह ने पवित्र आत्मा के रूप में बोले, उन्हें याद करने में सक्षम बनाया।

क्या केवल प्रेरित और शिष्य ही सुसमाचार प्रचार/सिखाने का कार्य करते थे? ना।

"उस दिन स्तिफनुस को पत्थरवाह करना) यरूशलेम में मार्ग के लोगों (मसीह में रहने वालों) के खिलाफ एक बड़ा उत्पीड़न शुरू हो गया, और प्रेरितों को छोड़कर सभी यहूदिया और सामरिया में बिखरे हुए थे। धर्मपरायण लोगों ने स्तिफनुस को दफनाया और उसके लिए गहरा शोक मनाया। ... जो बिखरे हुए थे उन्होंने प्रचार किया (यूआगेलिज़ो - इसलिए, के रूप में प्रचारितकीरक्सो प्रचार के लिए ग्रीक शब्द है) वे जहां कहीं भी गए शब्द।" (प्रेरितों 8:1-5)

प्रेरित पौलुस ने कहा, "मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, क्योंकि यह उन सब के उद्धार के लिये परमेश्वर की सामर्थ है जो विश्वास करते हैं, (जो अपने विश्वास पर चलते हैं)। (रोमियों 1:16)

#### प्रश्न

6. यीशु ने कहा कि मेरा भोजन मेरे पिता की इच्छा पूरी करना है।  
सही गलत\_\_\_
7. यीशु के स्वर्ग में लौटने से कुछ समय पहले, उन्होंने कहा कि सारा अधिकार मुझे दिया गया है।  
सही गलत\_\_\_
8. यीशु ने अपने शिष्यों को निर्देश दिया:
  - a. \_\_\_ खुशखबरी सुनाकर चेला बनाओ
  - b. \_\_\_ आज्ञाकारी शिष्यों को बपतिस्मा दें
  - c. \_\_\_ सब से ऊपर
  - d. \_\_\_
9. जिन्होंने प्रेरितों की शिक्षा, संगति, रोटी तोड़ने और प्रार्थनाओं में क्षमा जारी रहने पर मसीह के संदेश को स्वीकार किया।  
सही गलत\_\_\_
10. मसीह के चर्च में, ईसाई, जब सताए गए, प्रचार किया, सुसमाचार, सुसमाचार, जहां भी वे गए थे।  
सही गलत\_\_\_

2. Shortly before Jesus returned to Heaven, He said ALL authority has been given to Me.  
True \_\_\_ False\_\_\_
3. Jesus instructed his disciples to:
- \_\_\_ Make disciples by proclaiming the Good News
  - \_\_\_ Baptize the obedient disciples
  - \_\_\_ All the above
  - \_\_\_
4. Those who accepted Christ message if forgiveness continued in the apostles teaching, fellowship, breaking of bread and prayers.  
True \_\_\_ False\_\_\_
5. Those in Christ's church, Christians, when persecuted proclaimed, preached, the Good News, Gospel, where ever they went.  
True \_\_\_ False\_\_\_

## Chapter 9

### Ascension and Second Coming

*"In my former book, Theophilus, I wrote about all that Jesus began to do and to teach until the day he was taken up to heaven, after giving instructions through the Holy Spirit to the apostles he had chosen. After his suffering, he showed himself to these men and gave many convincing proofs that he was alive. He appeared to them over a period of forty days and spoke about the kingdom of God. On one occasion, while he was eating with them, he gave them this command: 'Do not leave Jerusalem, but wait for the gift my Father promised, which you have heard me speak about. For John baptized with water, but in a few days, you will be baptized with the Holy Spirit.' So, when they met together, they asked him, 'Lord, are you at this time going to restore the kingdom to Israel?' He said to them: 'It is not for you to know the times or dates the Father has set by his own authority. But you will receive power when the Holy Spirit comes on you; and you will be my witnesses in Jerusalem, and in all Judea and Samaria, and to the ends of the earth.' After he said this, he was taken up before their very eyes, and a cloud hid him from their sight. They were looking intently up into the sky as he was going, when suddenly two men dressed in white stood beside them. 'Men of Galilee,' they said, 'why do you stand here looking into the sky? This same Jesus, who has been taken from you*

## अध्याय 9

### उदगम और दूसरा आ रहा है

"अपनी पिछली पुस्तक, थियोफिलस में, मैंने उन सभी के बारे में लिखा था जो यीशु ने करना शुरू किया और उस दिन तक पढ़ाया, जब तक कि उन्हें पवित्र आत्मा के माध्यम से अपने चुने हुए प्रेरितों को निर्देश देने के बाद स्वर्ग में नहीं ले जाया गया। अपनी पीड़ा के बाद, उसने खुद को इन लोगों को दिखाया और कई पुख्ता सबूत दिए कि वह जीवित था। वह चालीस दिनों की अवधि में उनके सामने प्रकट हुआ और परमेश्वर के राज्य के बारे में बोला। एक अवसर पर, जब वह उनके साथ भोजन कर रहा था, तो उसने उन्हें यह आज्ञा दी: 'यरूशलेम को मत छोड़ो, परन्तु उस उपहार की प्रतीक्षा करो, जिसका वादा मेरे पिता ने किया था, जिसके बारे में तुमने मुझे बोलते सुना है। क्योंकि यूहन्ना ने तो जल से बपतिस्मा तो दिया, परन्तु थोड़े ही दिनों में तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।' सो जब वे इकट्ठे हुए, तो उस से पूछा, हे यहोवा, क्या तू इसी समय इस्राएल का राज्य फेर देने वाला है? उसने उनसे कहा: 'पिता ने अपने अधिकार से निर्धारित समय या तारीखों को जानना आपके लिए नहीं है। परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे।' यह कहकर वह उन की आंखों के साम्हने उठा लिया गया, और बादल ने उसे उन के साम्हने से छिपा लिया। जब वह जा रहा था, तब वे आकाश की ओर ध्यान से देख रहे थे, तभी अचानक सफेद कपड़े पहने दो आदमी उनके पास आ खड़े हुए। 'गलील के लोग,' उन्होंने कहा, 'तुम यहाँ क्यों खड़े आकाश की ओर देख रहे हो? यह वही यीशु, जो तुझ से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, फिर उसी प्रकार लौटेगा जिस प्रकार तू ने उसे स्वर्ग में जाते देखा है।'" यह कहकर वह उन की आंखों के साम्हने उठा लिया गया, और बादल ने उसे उन के साम्हने से छिपा लिया। जब वह जा रहा था, तब वे आकाश की ओर ध्यान से देख रहे थे, तभी अचानक सफेद कपड़े पहने दो आदमी उनके पास आ खड़े हुए। 'गलील के लोग,' उन्होंने कहा, 'तुम यहाँ क्यों खड़े आकाश की ओर देख रहे हो? यह वही यीशु, जो तुझ से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, फिर उसी प्रकार लौटेगा जिस प्रकार तू ने उसे स्वर्ग में जाते देखा है।'" यह कहकर वह उन की आंखों के साम्हने उठा लिया गया, और बादल ने उसे उन के साम्हने से छिपा लिया। जब वह जा रहा था, तब वे आकाश की ओर ध्यान से देख रहे थे, तभी अचानक सफेद कपड़े पहने दो आदमी उनके पास आ खड़े हुए। 'गलील के लोग,' उन्होंने कहा, 'तुम यहाँ क्यों खड़े आकाश की ओर देख रहे हो? यह वही यीशु, जो तुझ से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, फिर उसी प्रकार लौटेगा जिस प्रकार तू ने उसे स्वर्ग में जाते देखा है।'" (प्रेरितों 1:1-11)

"जब पिनतेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक ही स्थान पर इकट्ठे थे।

*into heaven, will come back in the same way you have seen him go into heaven.”* (Acts 1:1-11)

“When the day of Pentecost arrived, they were all together in one place. And suddenly there came from heaven a sound like a mighty rushing wind, and it filled the entire house where they were sitting. And divided tongues as of fire appeared to them and rested on each one of them. And they were all filled with the Holy Spirit and began to speak in other tongues as the Spirit gave them utterance ....” “But Peter, standing with the eleven, lifted up his voice and addressed them, ‘Men of Judea and all who dwell in Jerusalem, let this be known to you, and give ear to my words. For these men are not drunk, as you suppose, since it is only the third hour of the day. But this is what was uttered through the prophet Joel: ‘And in the last days it shall be, God declares, that I will pour out my Spirit on all flesh, ... and it shall come to pass that everyone who calls upon the name of the Lord shall be saved.’” (Acts 2:1-4, 14-17, 21)

“Do not let your hearts be troubled. Trust in God; trust also in me. In my Father's house are many rooms; if it were not so, I would have told you. I am going there to prepare a place for you. And if I go and prepare a place for you, I will come back and take you to be with me that you also may be where I am. You know the way to the place where I am going.” (John 14:1-4)

“I declare to you, brothers, that flesh and blood cannot inherit the kingdom of God, nor does the perishable inherit the imperishable. Listen, I tell you a mystery: We will not all sleep, but we will all be changed— in a flash, in the twinkling of an eye, at the last trumpet. For the trumpet will sound, the dead will be raised imperishable, and we will be changed. For the perishable must clothe itself with the imperishable, and the mortal with immortality. When the perishable has been clothed with the imperishable, and the mortal with immortality, then the saying that is written will come true: ‘Death has been swallowed up in victory.’” (1 Cor 15:50-54)

“Brothers, we do not want you to be ignorant about those who fall asleep, or to grieve like the rest of men, who have no hope. We believe that Jesus died and rose again and so we believe that God will bring with Jesus those who have fallen asleep in him. According to the Lord's own word, we tell you that we who are still alive, who are left till the coming of the Lord, will certainly not precede those who have fallen asleep. For the Lord himself will come down from heaven, with a loud

और एकाएक आकाश से प्रचण्ड वायु का सा शब्द हुआ, और उस से सारा घर जहाँ वे बैठे थे, भर गया। और उन्हें आग की सी फटी जीभें दिखाई दीं, और उन में से प्रत्येक पर टिकी रहीं। और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें वचन दिया, वैसे ही वे दूसरी अन्य भाषा बोलने लगे... “परन्तु पतरस ने उन ग्यारहोंके संग खड़े होकर ऊंचे शब्द से उन से कहा, यहूदिया के लोग, और जितने उस में रहते हैं सब को। हे यरूशलेम, यह बात तुम को मालूम हो, और मेरी बातों पर कान लगा। क्योंकि ये लोग नशे में नहीं हैं, जैसा कि आप समझते हैं, क्योंकि यह दिन का केवल तीसरा घंटा है। परन्तु योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा यह कहा गया था, कि परमेश्वर की यह वाणी है कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब प्राणियों पर उण्डेलूंगा।

“*तुम्हारे दिलों को परेशान मत होने दो। भगवान में विश्वास रखो; मुझ पर भी भरोसा करो। मेरे पिता के घर में बहुत से कमरे हैं; अगर ऐसा नहीं होता तो मैं आपको बता देता। मैं वहाँ तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जा रहा हूँ। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिथे स्थान तैयार करूँ, तो लौटकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा, कि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम भी रहो। तुम उस स्थान का मार्ग जानते हो जहाँ मैं जा रहा हूँ।*” (यूहन्ना 14:1-4)

“हे भाइयो, मैं तुम से कहता हूँ, कि मांस और लोह परमेश्वर के राज्य के वारिस नहीं हो सकते, और न ही नाशवान अविनाशी के वारिस होते हैं। सुनो, मैं तुम्हें एक रहस्य बताता हूँ: हम सब नहीं सोएंगे, लेकिन हम सब बदल जाएंगे। एक पल में, पलक झपकते, आखिरी तुरही में। क्योंकि तुरही फूँकी जाएगी, मरे हुए अविनाशी जी उठेंगे, और हम बदल जाएंगे। क्योंकि नाशवान को अविनाशी को और नश्वर को अमरता का वस्त्र धारण करना चाहिए। जब नाशवान को अविनाशी और नश्वर को अमरता का वस्त्र पहनाया जाता है, तब लिखा हुआ वचन सच हो जाएगा: ‘मृत्यु को जीत में निगल लिया गया है।’” (1 कुरि 15:50-54)

“भाई बंधु, हम नहीं चाहते कि तुम उन लोगों के विषय में जो सो जाते हैं अज्ञानी हो, या बाकी लोगों की तरह शोक मनाओ, जिन्हें कोई आशा नहीं है। हम मानते हैं कि यीशु मर गया और फिर से जी उठा और इसलिए हम मानते हैं कि परमेश्वर यीशु के साथ उन लोगों को लाएगा जो उसमें सो गए हैं। प्रभु के अपने वचन के अनुसार, हम आपको बताते हैं कि हम जो अभी भी जीवित हैं, जो प्रभु के आने तक बचे हैं, निश्चित रूप से उन लोगों से पहले नहीं होंगे जो सो गए हैं। क्योंकि प्रभु स्वयं स्वर्ग से उतरेगा, और प्रधान दूत के शब्द और परमेश्वर की तुरही के शब्द के साथ, और मसीह में मरे हुए पहिले जी उठेंगे। उसके बाद, हम जो अब तक जीवित और बचे हुए हैं, उनके साथ बादलों में उठा लिए जाएंगे कि हवा में प्रभु से मिलें। और इसलिए हम हमेशा मालिक के साथ होंगे। इसलिए इन शब्दों से एक-दूसरे का हाँसला बढ़ाइए।” (1 थिस्स 4:13-18)

यीशु ने यूहन्ना 11:9-13 में अपने शिष्यों को "नींद" का अर्थ समझाया

command, with the voice of the archangel and with the trumpet call of God, and the dead in Christ will rise first. After that, we who are still alive and are left will be caught up together with them in the clouds to meet the Lord in the air. And so, we will be with the Lord forever. Therefore encourage each other with these words.” (1 Thess 4:13-18)

Jesus explained the meaning of “sleep” to His disciples in John 11:9-13 ““Are there not twelve hours of daylight? A man who walks by day will not stumble, for he sees by this world's light. It is when he walks by night that he stumbles, for he has no light.” After he had said this, he went on to tell them, ‘Our friend Lazarus has fallen asleep; but I am going there to wake him up.’ His disciples replied, ‘Lord, if he sleeps, he will get better.’ Jesus had been speaking of his death, but his disciples thought he meant natural sleep.”

Now, brothers, about times and dates we do not need to write to you, for you know very well that the day of the Lord will come like a thief in the night. (1 Thess. 5:1-2)

“But the day of the Lord will come like a thief. The heavens will disappear with a roar; the elements will be destroyed by fire, and the earth and everything in it will be laid bare. Since everything will be destroyed in this way, what kind of people ought you to be? You ought to live holy and godly lives as you look forward to the day of God and speed its coming. That day will bring about the destruction of the heavens by fire, and the elements will melt in the heat. But in keeping with his promise, we are looking forward to a new heaven and a new earth, the home of righteousness.” (2 Peter 3:10-13)

**Are you prepared** through obedient faith in Christ at His Second Coming?

#### Questions

1. After Jesus crucifixion He showed Himself to His apostles.  
True \_\_\_ False \_\_\_
2. Following the Holy Spirit coming on them Jesus' Apostles were eye witnesses to His life, crucifixion, resurrection and ascension back to Heaven.  
True \_\_\_ False \_\_\_
3. The human body, flesh and blood, cannot inherit the Kingdom of God.  
True \_\_\_ False \_\_\_
4. When Christ returns, the 2<sup>nd</sup> Coming, those in Christ Kingdom will be changed to imperishable beings.

“क्या दिन के बारह घंटे नहीं होते हैं? जो मनुष्य दिन में चलता है, वह ठोकर नहीं खाएगा, क्योंकि वह इस जगत की ज्योति से देखता है। जब वह रात को चलता है, तब ठोकर खाता है, क्योंकि उसके पास प्रकाश नहीं है।’ यह कहकर उस ने उन से कहा, हमारा मित्र लाजर सो गया है; लेकिन मैं वहाँ उसे जगाने जा रहा हूँ।’ उसके चेलों ने उत्तर दिया, ‘हे प्रभु, यदि वह सोएगा, तो वह ठीक हो जाएगा।’ यीशु उसकी मृत्यु के बारे में बात कर रहे थे, लेकिन उनके शिष्यों ने सोचा कि उनका मतलब प्राकृतिक नींद है।”

अब हे भाइयो, समय और तारीखों के विषय में हमें तुम्हें लिखने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि तुम अच्छी तरह जानते हो कि यहोवा का दिन रात में चोर की नाई आएगा। (1 थिस्स. 5:1-2)

“परन्तु यहोवा का दिन चोर के समान आएगा। आकाश गर्जना के साथ विलीन हो जाएगा; और सब कुछ आग से नाश हो जाएगा, और पृथ्वी और उस में का सब कुछ उजाड़ दिया जाएगा। चूँकि इस तरह से सब कुछ नष्ट हो जाएगा, तो आपको किस तरह के लोग होने चाहिए? आपको पवित्र और ईश्वरीय जीवन जीना चाहिए क्योंकि आप ईश्वर के दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं और इसके आने की गति बढ़ा रहे हैं। उस दिन आग से आकाश का विनाश होगा, और तत्व गर्मी में पिघल जाएंगे। परन्तु उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नये स्वर्ग और नई पृथ्वी की बात जोहते हैं, जो धर्म का घर है।” (2 पतरस 3:10-13)

**क्या आप तैयार हों** उसके दूसरे आगमन पर मसीह में आज्ञाकारी विश्वास के माध्यम से?

#### प्रश्न

6. यीशु को सूली पर चढ़ाने के बाद उन्होंने स्वयं को अपने प्रेरितों को दिखाया।  
सही गलत \_\_\_
7. पवित्र आत्मा के उन पर आने के बाद यीशु के प्रेरित उसके जीवन, सूली पर चढ़ाए जाने, पुनरुत्थान और स्वर्ग में वापस आरोहण के प्रत्यक्ष गवाह थे।  
सही गलत \_\_\_
8. मानव शरीर, मांस और रक्त, परमेश्वर के राज्य के वारिस नहीं हो सकते।  
सही गलत \_\_\_
9. जब क्राइस्ट वापस आएगा, दूसरा आगमन, जो क्राइस्ट किंगडम में हैं, उन्हें अविनाशी प्राणियों में बदल दिया जाएगा।  
सही गलत \_\_\_
10. दूसरे आगमन का समय बाइबिल में स्पष्ट रूप से कहा गया है।  
सही गलत \_\_\_

#### अध्याय 10

### मसीह की दलील

True \_\_\_ False \_\_\_

5. The time of the 2<sup>nd</sup> Coming is clearly stated in the Bible.

True \_\_\_ False \_\_\_

## Chapter 10

### Christ's Plea

*"Come to me, all you who are weary and burdened, and I will give you rest. Take my yoke upon you and learn from me, for I am gentle and humble in heart, and you will find rest for your souls. For my yoke is easy and my burden is light."* (Matt 11:28-30)

*"But do not forget this one thing, dear friends: With the Lord a day is like a thousand years, and a thousand years are like a day. The Lord is not slow in keeping his promise, as some understand slowness. He is patient with you, not wanting anyone to perish, but everyone to come to repentance."* (2 Peter 3:8-9)

*"Later Jesus appeared to the Eleven as they were eating; he rebuked them for their lack of faith and their stubborn refusal to believe those who had seen him after he had risen. He said to them, "Go into all the world and preach the good news to all creation. Whoever believes and is baptized will be saved, but whoever does not believe will be condemned."* (Mark 16:14-16)

*"So, they passed by Mysia and went down to Troas. During the night Paul had a vision of a man of Macedonia standing and begging him, "Come over to Macedonia and help us." After Paul had seen the vision, we got ready at once to leave for Macedonia, concluding that God had called us to preach the gospel to them."* (Acts 16:8-10)

*"The Son of Man came to seek and to save what was lost."* (Luke 19:10)

*"Remain in me, and I will remain in you. No branch can bear fruit by itself; it must remain in the vine. Neither can you bear fruit unless you remain in me. "I am the vine; you are the branches. If a man remains in me and I in him, he will bear much fruit; apart from me you can do nothing. If anyone does not remain in me, he is like a branch that is thrown away and withers; such branches are picked up, thrown into the*

*"हे सब थके हुए और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ, और मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर ले लो और मुझ से सीखो, क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ, और तुम अपने प्राणों को विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है।" (मैट 11:28-30)*

*"परन्तु, प्रिय मित्रों, यह एक बात मत भूलना: यहोवा के पास एक दिन हजार वर्ष के समान है, और एक हजार वर्ष एक दिन के समान है। यहोवा अपना वादा निभाने में देर नहीं करता, क्योंकि कुछ लोग धीमेपन को समझते हैं। वह तुम्हारे साथ सब्र रखता है, यह नहीं चाहता कि कोई नाश हो, परन्तु हर कोई पश्चाताप के लिए आए।" (2 पतरस 3:8-9)*

*"जब वे खा रहे थे, तब यीशु ग्यारहों को दिखाई दिया; उसने उन्हें उनके विश्वास की कमी और उन लोगों पर विश्वास करने से इनकार करने के लिए उन्हें डांटा, जिन्होंने उसके जी उठने के बाद उसे देखा था। उस ने उन से कहा, "सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि को सुसमाचार सुनाओ। जो कोई विश्वास करे और बपतिस्मा ले वह उद्धार पाएगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस 16:14-16)*

*"इसलिये वे मैसिया के पास से होकर त्रोआस को गए। रात के समय पौलुस ने एक दर्शन में देखा कि मकिदुनिया का एक व्यक्ति खड़ा है और उससे भीख माँग रहा है, "मकिदुनिया आकर हमारी सहायता कर।" जब पौलुस ने यह दर्शन देखा, तो हम तुरन्त मकिदुनिया जाने को तैयार हुए, और यह समझकर कि परमेश्वर ने हमें उन को सुसमाचार सुनाने के लिये बुलाया है।" (प्रेरितों 16:8-10)*

*"मनुष्य का पुत्र खोई हुई वस्तु को खोजने और उसका उद्धार करने आया है।" (लूका 19:10)*

*"मुझ में रहो, और मैं तुम में रहूंगा। कोई शाखा अपने आप फल नहीं दे सकती; यह बेल में रहना चाहिए। जब तक तुम मुझ में नहीं रहोगे तब तक तुम फल भी नहीं पा सकते। "मैं दाखलता हूँ; डालियाँ तुम हो। यदि कोई मुझ में बना रहे, और मैं उस में, तो वह बहुत फल देगा; मेरे अलावा तुम कुछ भी नहीं कर सकते। यदि कोई मुझ में नहीं रहता है, तो वह उस शाखा के समान है जो फेंक दिया जाता है और सूख जाता है; ऐसी डालियाँ उठाई जाती हैं, और आग में झोंक दी जाती हैं, और जल जाती हैं: यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरी बातें तुम में बनी रहें।" (यूहन्ना 15:4-7)*

*"तब पतरस ने पवित्र आत्मा से भरकर उन से कहा, हे लोगों के हाकिम और पुरनियो: यदि आज हमें अपंग पर किए गए करूणा के काम का लेखा देने के लिये बुलाया जा रहा है, और यह पूछा जाए कि वह कैसे चंगा हुआ, तो यह जान लो, तुम और इस्राएल के सभी लोग: यह*



fire and burned. If you remain in me and my words remain in you.” (John 15:4-7)

“Then Peter, filled with the Holy Spirit, said to them: ‘Rulers and elders of the people! If we are being called to account today for an act of kindness shown to a cripple and are asked how he was healed, then know this, you and all the people of Israel: It is by the name of Jesus Christ of Nazareth, whom you crucified but whom God raised from the dead, that this man stands before you healed. He is “the stone you builders rejected, which has become the capstone.’ Salvation is found in no one else, for there is no other name under heaven given to men by which we must be saved.” (Acts 4:8-12)

“For it is with your heart that you believe and are justified, and it is with your mouth that you confess and are saved. As the Scripture says, ‘Anyone who trusts in him will never be put to shame.’ For there is no difference between Jew and Gentile — the same Lord is Lord of all and richly blesses all who call on him, for, “Everyone who calls on the name of the Lord will be saved.” (Rom 10:10-13)

“I am not ashamed of the gospel, because it is the power of God for the salvation of everyone who believes: first for the Jew, then for the Gentile. For in the gospel a righteousness from God is revealed.” (Rom 1:16-17)

“A new command I give you: Love one another. As I have loved you, so you must love one another. By this all men will know that you are my disciples, if you love one another.” (John 13:34-35)

“Once you were alienated from God and were enemies in your minds because of your evil behavior. But now he has reconciled you by Christ’s physical body through death to present you holy in his sight, without blemish and free from accusation— if you continue in your faith, established and firm, not moved from the hope held out in the gospel.” (Col 1:21-23)

“So, if you think you are standing firm, be careful that you don’t fall! No temptation has seized you except what is common to man. And God is faithful; he will not let you be tempted beyond what you can bear. But when you are tempted, he will also provide a way out so that you can stand up under it.” (1 Cor 10:12-13)

नासरत के यीशु मसीह के नाम से है, जिसे तुम क्रूस पर चढ़ाया गया, परन्तु जिसे परमेश्वर ने मरे हुआओं में से जिलाया, कि यह मनुष्य तुम्हारे सामने चंगा हुआ खड़ा रहे। वह "वह पत्थर है जिसे तुम बनानेवालों ने ठुकरा दिया था, जो शिरोमणि बन गया है।" और किसी के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों को और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।" (प्रेरितों के काम 4:8-12)

"क्योंकि तू अपने मन से विश्वास करता है और धर्मी ठहरता है, और अपने मुँह से अंगीकार करते और उद्धार पाते हैं। जैसा कि पवित्रशास्त्र कहता है, 'जो कोई उस पर भरोसा करेगा, वह कभी लज्जित नहीं होगा।' क्योंकि यहूदी और अन्यजातियों के बीच कोई अंतर नहीं है - एक ही प्रभु सभी का प्रभु है और जो उसे पुकारते हैं, उन्हें बहुतायत से आशीर्वाद देते हैं, क्योंकि "जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह बच जाएगा।" (रोम 10:10-13)

"मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, क्योंकि यह उन सभी के उद्धार के लिए परमेश्वर की शक्ति है जो विश्वास करते हैं: पहले यहूदी के लिए, फिर अन्यजातियों के लिए। क्योंकि सुसमाचार में परमेश्वर की ओर से एक धार्मिकता प्रगट होती है।" (रोम 1:16-17)

"मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ: एक दूसरे से प्यार करो। जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। यदि तुम एक दूसरे से प्रेम रखोगे तो इसी से सब मनुष्य जानेंगे, कि तुम मेरे चले हो।" (यूहन्ना 13:34-35)

"एक बार तुम परमेश्वर से दूर हो गए थे और अपने बुरे व्यवहार के कारण तुम्हारे मन में शत्रु थे। परन्तु अब उस ने मसीह की देह के द्वारा मृत्यु के द्वारा तुम्हारा मेल कर लिया है, कि तुम को अपनी दृष्टि में पवित्र, निर्दोष और निर्दोष ठहराए, यदि तुम अपने विश्वास में बने रहो, स्थिर और दृढ़ रहो, और उस आशा से जो सुसमाचार में दी गई है, न हटे।" (कर्मल 1:21-23)

"तो, अगर आपको लगता है कि आप दृढ़ हैं, तो सावधान रहें कि आप गिरें नहीं! मनुष्य के लिए सामान्य के अलावा किसी भी प्रलोभन ने आपको नहीं पकड़ा है। और परमेश्वर विश्वासयोग्य है; वह तुम्हें उस से अधिक परीक्षा में नहीं पड़ने देगा जो तुम सहन कर सकते हो। लेकिन जब तुम परीक्षा में पड़ोगे, तो वह एक रास्ता भी निकालेगा, ताकि तुम उसके नीचे खड़े हो सको।" (1 कुरिं 10:12-13)

"मैं तुम्हारे कष्टों और तुम्हारी दरिद्रता को जानता हूँ - फिर भी तुम धनी हो। मैं उन लोगों की बदनामी जानता हूँ जो कहते हैं कि वे यहूदी हैं और नहीं हैं, लेकिन शैतान के आराधनालय हैं। आप जो भुगतने वाले हैं उससे डरो मत। मैं तुम से कहता हूँ, कि शैतान तुम में से कितनों को

*"I know your afflictions and your poverty — yet you are rich! I know the slander of those who say they are Jews and are not, but are a synagogue of Satan. Do not be afraid of what you are about to suffer. I tell you, the devil will put some of you in prison to test you, and you will suffer persecution for ten days. Be faithful, even to the point of death, and I will give you the crown of life." (Rev 2:9-10)*

#### Questions

1. Preach the Gospel to all the world so those who by action of their belief will be baptized and saved.  
True \_\_\_ False\_\_\_
2. Salvation is found only by obedience to Christ Gospel message.  
True \_\_\_ False\_\_\_
3. Love one another in order that everyone will know you are Christ's disciple.  
True \_\_\_ False\_\_\_
4. Those who do not stand firm in Christ may fall away when tempted.  
True \_\_\_ False\_\_\_
5. Be faithful even to point of death then Christ will give you the crown of life.  
True \_\_\_ False\_\_\_

#### Chapter 11

### Statements about The Man Who Was God

Christians wear the name of Christ because Christ is their Lord, Teacher, Guide, Savior, Redeemer, Model, High Priest, Hope, Sacrifice for sin and much, much more. The rock-solid foundation for our faith is the truth of Peter's confession. Jesus is real and the Bible is true. All that needs to be known about Jesus is found in the Bible. All of human history revolves around Him. Jesus is the central character of the human drama. It is not surprising that the history of the world is divided into two spans of time: before Christ (B.C.) and after Christ (A.D.). Even though the Bible reveals Jesus, there is considerable evidence outside the Bible confirming that Jesus is a historical person, just as the Bible presents him. These external writings collaborate what the Bible tells about him

#### Jesus

*"The Father who sent me has himself testified concerning me. You have never heard his voice nor seen his form, nor does his word dwell in you, for you*

*तुम्हारी परीक्षा लेने को बन्दीगृह में डालेगा, और तुम दस दिन तक सताहट सहते रहोगे। यहाँ तक कि मृत्यु तक विश्वासयोग्य रहो, और मैं तुम्हें जीवन का मुकुट दूंगा।"* (प्रकाशितवाक्य 2:9-10)

#### प्रश्न

6. पूरी दुनिया में सुसमाचार का प्रचार करें ताकि जो लोग अपने विश्वास के अनुसार बपतिस्मा लें और उद्धार पाएं। सही गलत\_\_\_
7. उद्धार केवल क्राइस्ट इंजील संदेश की आज्ञाकारिता के द्वारा पाया जाता है। सही गलत\_\_\_
8. एक दूसरे से प्रेम करो कि सब जान लें कि तुम मसीह के चले हो। सही गलत\_\_\_
9. जो मसीह में दृढ़ नहीं रहते, वे परीक्षा में पड़ सकते हैं। सही गलत\_\_\_
10. मृत्यु तक भी विश्वासयोग्य रहो, तो मसीह तुम्हें जीवन का मुकुट देगा। सही गलत\_\_\_

#### अध्याय 11

### उस व्यक्ति के बारे में कथन जो परमेश्वर था

ईसाई मसीह का नाम इसलिए पहनते हैं क्योंकि मसीह उनका प्रभु, शिक्षक, मार्गदर्शक, उद्धारकर्ता, मुक्तिदाता, आदर्श, महायाजक, आशा, पाप के लिए बलिदान और बहुत कुछ है। हमारे विश्वास की चट्टान-ठोस नींव पतरस के अंगीकार की सच्चाई है। यीशु वास्तविक है और बाइबिल सत्य है। यीशु के बारे में जानने के लिए वह सब कुछ है जो बाइबल में पाया जाता है। मनुष्य का सारा इतिहास उसी के इर्द-गिर्द घूमता है। यीशु मानव नाटक का केंद्रीय पात्र है। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि दुनिया का इतिहास दो कालखंडों में विभाजित है: ईसा से पहले (ईसा पूर्व) और ईसा के बाद (ई.) भले ही बाइबल यीशु को प्रकट करती है, बाइबल के बाहर इस बात की पुष्टि करने वाले पर्याप्त प्रमाण हैं कि यीशु एक ऐतिहासिक व्यक्ति है, ठीक वैसे ही जैसे बाइबल उसे प्रस्तुत करती है। बाइबल जो उसके बारे में बताती है, ये बाहरी लेख सहयोग करते हैं

#### यीशु

*"मेरे भेजनेवाले पिता ने आप ही मेरे विषय में गवाही दी है। तू ने न कभी उसका शब्द सुना, और न उसका रूप देखा, और न उसका वचन तुम में बसता है, क्योंकि उसके भेजे हुए की प्रतीति नहीं करते। तुम लगन से शास्त्रों का अध्ययन करते हो क्योंकि तुम सोचते हो कि उनके द्वारा तुम्हें अनन्त जीवन मिलता है। ये शास्त्र हैं जो मेरे बारे में गवाही देते हैं।"* (यूहन्ना 5:37-39)

#### प्रेरित पतरस

do not believe the one he sent. You diligently study the Scriptures because you think that by them you possess eternal life. These are the Scriptures that testify about me.” (John 5:37-39)

### **The Apostle Peter**

“You are the Christ, the Son of the living God.” (Matthew 16:16)

### **The Apostle John**

“In the beginning was the Word, and the Word was with God, and the Word was God. He was with God in the beginning. Through him all things were made; without him nothing was made that has been made. In him was life, and that life was the light of men. The light shines in the darkness, but the darkness has not understood it. There came a man who was sent from God; his name was John. He came as a witness to testify concerning that light, so that through him all men might believe. He himself was not the light; he came only as a witness to the light. The true light that gives light to every man was coming into the world. He was in the world, and though the world was made through him, the world did not recognize him. He came to that which was his own, but his own did not receive him. Yet to all who received him, to those who believed in his name, he gave the right to become children of God - children born not of natural descent, nor of human decision or a husband's will, but born of God.” (John 1:1-13)

“The Word became flesh and made his dwelling among us. We have seen his glory, the glory of the One and Only, who came from the Father, full of grace and truth.” (John 1:14)

### **John the Baptizer**

“He [John] cries out, saying, 'This was he of whom I said, He who comes after me has surpassed me because he was before me.' From the fullness of his grace we have all received one blessing after another. For the law was given through Moses; grace and truth came through Jesus Christ. No one has ever seen God, but God the One and Only, who is at the Father's side, has made him known.” (John 1:15-18)

“Jesus looked toward heaven and prayed Father, the time has come. Glorify your Son, that your Son may glorify you. For you granted Him authority over all people that he might give eternal life to all those you have given him. Now this is eternal life: that they may know you, the only true God, and Jesus Christ, whom you have sent. I have brought you glory on earth by completing the work you gave me to do. And now, Father, glorify me in your presence with the glory I had with you before the world began.” (John 17:1-5)

### **Jesus Before the Roman Governor, Pilate**

“Pilate then went back inside the palace, summoned

“तू जीवित परमेश्वर का पुत्र मसीह है।” (मत्ती 16:16)

### **प्रेरित जॉन**

“आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। वह शुरुआत में परमेश्वर के साथ था। उसके बिना कुछ भी नहीं बन सकता; उसके बिना कुछ भी नहीं बनाया गया था जो बनाया गया है। उसमें जीवन था, और वह जीवन मनुष्यों का प्रकाश था। अंधेरे में उजाला चमकता है, लेकिन अंधेरे ने उसे समझा नहीं। एक मनुष्य आया जो परमेश्वर की ओर से भेजा गया था; उसका नाम जॉन था। वह उस ज्योति के विषय में साक्षी देने आया, कि उसके द्वारा सब लोग विश्वास करें। वह स्वयं प्रकाश नहीं था; वह केवल प्रकाश के साक्षी के रूप में आया था। प्रत्येक मनुष्य को प्रकाश देने वाला सच्चा प्रकाश संसार में आने वाला था। वह संसार में था, और यद्यपि संसार उसके द्वारा बनाया गया था, संसार ने उसे नहीं पहचाना। वह उसके पास आया जो उसका था, परन्तु अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया। तौभी जितनों ने उसे ग्रहण किया, वरन उसके नाम पर विश्वास करनेवालों को, (यूहन्ना 1:1-13)

“वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच अपना निवास स्थान बना लिया। हमने उसकी महिमा, एक और एकमात्र की महिमा देखी है, जो पिता की ओर से अनुग्रह और सच्चाई से भरी हुई है।” (यूहन्ना 1:14)

### **यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला**

“वह [यूहन्ना] चिल्लाकर कहता है, 'यह वही है जिसके विषय में मैं ने कहा था, कि जो मेरे बाद आता है वह मुझ से बढ़कर है, क्योंकि वह मुझ से पहिले था।' उनकी कृपा की परिपूर्णता से हम सभी को एक के बाद एक आशीर्वाद मिला है। क्योंकि व्यवस्था मूसा के द्वारा दी गई थी; अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा आई। परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा है, परन्तु एकमात्र परमेश्वर, जो पिता के पास है, ने उसे प्रगट किया है।” (यूहन्ना 1:15-18)

“यीशु ने स्वर्ग की ओर दृष्टि करके प्रार्थना की पिताजी, समय आ गया है। अपने पुत्र की महिमा करो, कि तुम्हारा पुत्र तुम्हारी महिमा करो। क्योंकि तू ने उसे सब लोगों पर अधिकार दिया कि वह उन सभी को अनन्त जीवन दे, जिन्हें तू ने उसे दिया है। अब यह अनन्त जीवन है: कि वे तुम्हें, एकमात्र सच्चे परमेश्वर, और यीशु मसीह, जिसे तुमने भेजा है, जान सकते हैं। जो काम तू ने मुझे करने को दिया है, उसे पूरा करके मैं ने तुझे पृथ्वी पर महिमा दी है। और अब हे पिता, अपने साम्हने मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत के आरम्भ से पहिले मेरी तेरे साथ थी।” (यूहन्ना 17:1-5)

### **रोमन गवर्नर पिलातुस के साम्हने यीशु**

“तब पीलातुस वापस महल में गया, और यीशु को बुलवाकर पूछा, 'क्या तू यहूदियों का राजा है?' 'क्या यह आपका अपना विचार है,' यीशु ने पूछा, 'या दूसरों ने आपसे मेरे बारे में बात की?' 'क्या मैं एक यहूदी हूँ?' पिलातुस ने उत्तर दिया। 'तेरी प्रजा और महायाजकों ने ही तुझे मेरे वश में कर दिया। तुमने क्या किया है?' यीशु ने कहा, 'मेरा राज्य इस संसार का नहीं है। यदि ऐसा होता, तो मेरे सेवक यहूदियों द्वारा मेरी गिरफ्तारी को रोकने के लिए संघर्ष करते। लेकिन अब मेरा राज्य दूसरी जगह से है।' 'तो फिर तुम एक राजा हो।' पिलातुस ने कहा। यीशु ने उत्तर दिया, 'तुम ठीक कह रहे हो कि मैं एक राजा हूँ। वास्तव में मेरा जन्म इसी कारण से हुआ है, और मैं जगत में इसलिये आया हूँ।’

Jesus and asked him, 'Are you the king of the Jews?' 'Is that your own idea,' Jesus asked, 'or did others talk to you about me?' "Am I a Jew?' Pilate replied. 'It was your people and your chief priests who handed you over to me. What is it you have done?' Jesus said, 'My kingdom is not of this world. If it were, my servants would fight to prevent my arrest by the Jews. But now my kingdom is from another place.' 'You are a king, then!' said Pilate. Jesus answered, 'You are right in saying I am a king. In fact, for this reason I was born, and for this I came into the world, to testify to the truth. Everyone on the side of truth listens to me.' 'What is truth?' Pilate asked." (John 18:33-38)

### **Jews insisted**

"We have a law, and according to that law he must die, because he claimed to be the Son of God. When Pilate heard this, he was even more afraid, and he went back inside the palace. 'Where do you come from?' he asked Jesus, but Jesus gave him no answer. 'Do you refuse to speak to me?' Pilate said. 'Don't you realize I have power either to free you or to crucify you?' Jesus answered, 'You would have no power over me if it were not given to you from above. Therefore, the one who handed me over to you is guilty of a greater sin.'" (John 19:7-11)

### **The eunuch said to Phillip**

The eunuch said, "I believe that Jesus Christ is the Son of God." (Acts 8:38)

"All this was done that anyone who received him, those who believed in his name, he gave the right to become children of God - children born not of natural descent, nor of human decision or a husband's will, but born of God." (John 1:12-13)

### **Thallus**

Matthew states "They had crucified him ... and sitting down, they kept watch over him there ... from the sixth hour until the ninth hour darkness came over all the land." (Matthew 27:35-36; 45-46) Mark put it this way "At the sixth hour darkness came over the whole land until the ninth hour." (Mark 15:33)

Thallus, a Samaritan-born historian who lived and worked in Rome about A.D. 52, quoted by Julius Africanus, a Christian chronographer of the late second century.<sup>1</sup> "Thallus, in the third book of his histories, explains away this darkness as an eclipse of the sun." Africanus stated his objection to the report arguing that an eclipse of the sun cannot occur during the full moon, as was the case when Jesus died at Passover time. The force of the reference to Thallus is that the circumstances of Jesus' death were known and discussed in the Imperial City as early as the middle of the first century. The fact of Jesus' crucifixion must have been fairly well known by that time, to the extent that unbelievers like Thallus thought it necessary to explain the matter of the darkness as a natural phenomenon. ... Ironically, Thallus' efforts have been

कि सत्य की गवाही दूं। सच्चाई के पक्ष में हर कोई मेरी बात सुनता है।' 'सच क्या है?' पिलातुस ने पूछा।" (यूहन्ना 18:33-38)

यहूदियों ने जोर दिया

"हमारे पास एक कानून है, और उस कानून के अनुसार उसे मरना चाहिए, क्योंकि उसने भगवान का पुत्र होने का दावा किया था। जब पीलातुस ने यह सुना, तो वह और भी अधिक डर गया, और वापस महल के भीतर चला गया। 'आप कहां से हैं?' उसने यीशु से पूछा, परन्तु यीशु ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया। 'क्या तुम मुझसे बात करने से इनकार करते हो?' पिलातुस ने कहा। 'क्या तुम नहीं जानते कि मेरे पास तुम्हें मुक्त करने या तुम्हें सूली पर चढ़ाने की शक्ति है?' यीशु ने उत्तर दिया, 'यदि तुम्हें ऊपर से न दिया जाता तो तुम मुझ पर कोई अधिकार नहीं रखते। सो जिस ने मुझे तुम्हारे वश में किया है, वह और भी बड़े पाप का दोषी है।'" (यूहन्ना 19:7-11)

खोजे ने फिलिप्पुस से कहा

उस खोजे ने कहा, "मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।" (प्रेरितों 8:38)

"यह सब इसलिए किया गया कि जिसने भी उसे ग्रहण किया, जिसने उसके नाम पर विश्वास किया, उसे ईश्वर की संतान होने का अधिकार दिया - न तो प्राकृतिक वंश से पैदा हुए बच्चे, न ही मानव निर्णय या पति की इच्छा से, बल्कि ईश्वर से पैदा हुए।" (यूहन्ना 1:12-13)

थैलस

मत्ती कहता है, "उन्होंने उसे सूली पर चढ़ा दिया था ... और बैठे हुए, वे वहां उस पर पहरा देते रहे ... छठे घंटे से लेकर नौवें घंटे तक सारे देश में अन्धकार छा गया।" (मत्ती 27:35-36; 45-46) मरकुस ने इसे इस तरह से कहा: "छठे घंटे पर पूरे देश में नौवें घंटे तक अंधेरा छा गया।" (मरकुस 15:33)

थैलस, एक सामरी में जन्मे इतिहासकार, जो 52 ईस्वी के आसपास रोम में रहते थे और काम करते थे, जूलियस अफ्रीकनस द्वारा उद्धृत किया गया, जो दूसरी शताब्दी के उत्तरार्ध के एक ईसाई क्रोनोग्राफर थे। 1 "थैलस, अपने इतिहास की तीसरी पुस्तक में, इस अंधेरे को एक ग्रहण के रूप में बताते हैं। सूरज की।" अफ्रीकनस ने रिपोर्ट पर अपनी आपत्ति जताते हुए कहा कि पूर्णिमा के दौरान सूर्य का ग्रहण नहीं हो सकता है, जैसा कि फसह के समय यीशु की मृत्यु के समय हुआ था। थैलस के संदर्भ का बल यह है कि यीशु की मृत्यु की परिस्थितियों को पहली शताब्दी के मध्य में इंपीरियल सिटी में जाना जाता था और चर्चा की जाती थी। यीशु के सूली पर चढ़ाए जाने का तथ्य उस समय तक काफी अच्छी तरह से ज्ञात हो गया होगा, इस हद तक कि थैलस जैसे अविश्वासियों ने अंधेरे के मामले को एक प्राकृतिक घटना के रूप में समझाना आवश्यक समझा। ... विडंबना यह है कि थैलस'

मारा बार-सेरापियन

"ब्रिटिश संग्रहालय में एक पांडुलिपि मारा बार-सेरापियन नामक एक सीरियाई द्वारा अपने बेटे को भेजे गए एक पत्र के पाठ को संरक्षित करती है। पिता ने सुकरात, पाइथागोरस, और यहूदियों के बुद्धिमान राजा जैसे बुद्धिमान पुरुषों को सताने की मूर्खता का चित्रण किया, जिसे संदर्भ स्पष्ट रूप से यीशु के रूप में दर्शाता है। "सुकरात को मौत के घाट उतारने से एथेनियाई लोगों को क्या फायदा हुआ? अकाल और प्लेग उनके अपराध के लिए एक फैसले के रूप में आया। पाइथागोरस को जलाने से समोस के लोगों को क्या फायदा हुआ? एक पल में

turned into the mainstream of historical proof for Jesus and for the reliability of Mark's account of the darkness at his death."<sup>2</sup>

### **Mara Bar-Serapion**

"A manuscript in the British Museum preserves the text of a letter sent to his son by a Syrian named Mara Bar-Serapion. The father illustrated the folly of persecuting wise men like Socrates, Pythagoras, and the wise king of the Jews, which the context obviously shows to be Jesus. "What advantage did the Athenians gain from putting Socrates to death? Famine and plague came upon them as a judgment for their crime. What advantage did the men of Samos gain from burning Pythagoras? In a moment their land was covered with sand. What advantage did the Jews gain from executing their king? It was just after that that their kingdom was abolished. God justly avenged these three wise men: the Athenians died of hunger; the Samians were overwhelmed by the seas; the Jews, ruined and driven from their land, live in complete dispersion. ... Nor did the wise King die for good; he lived on in the teaching which He had given".<sup>3</sup>

### **Cornelius Tacitus**

A Roman historian living from about AD 50 to AD 100 wrote regarding Nero's fire. "Consequently, to get rid of the report, Nero fastened the guilt and inflicted the most exquisite tortures on a class hated for their abominations, called Christians by the populace. Christus, from whom the name had its origin, suffered the extreme penalty during the reign of Tiberius at the hands of one of our procurators, Pontius Pilatus".<sup>4</sup>

### **Plinius Secundus**

A Roman governor in AD 112 wrote Emperor Trajan "They were in the habit of meeting on a certain fixed day before it was light, when they sang an anthem to Christ as God, and bound themselves by a solemn oath not to commit any wicked deed ... after which it was their custom to separate, and then meet again to partake of food, but food of an ordinary kind".<sup>5</sup>

### **Seutonius**

An annalist and court official of the Imperial House during the reign of Hadrian wrote about AD 120 in the Life of Claudius. "As the Jews were making constant disturbances at the instigation of Chrestus, he (Claudius) expelled them from Rome."<sup>6</sup> Edward C. Wharton then states "The reason for the fame of this quotation is due to the fact that Luke, some sixty years earlier, had recorded this same incident as the reason for the apostle Paul yoking up with a Christian Jewish couple named Aquila and Priscilla (Acts 18:1-2). Again, the mention of Christ in the historical context is observed in extra-biblical literature."<sup>7</sup>

### **Flavius Josephus**

Josephus has an interesting observation. "There arose about this time Jesus, a wise man, if indeed we should

उनकी भूमि रेत से ढक गई। क्या फायदा क्या यहूदियों को अपने राजा को मारने से लाभ हुआ? इसके ठीक बाद उनके राज्य को समाप्त कर दिया गया था। परमेश्वर ने इन तीन बुद्धिमानों का न्यायोचित प्रतिशोध लिया: एथेनियाई लोग भूख से मर गए; सैमियन समुद्र से डूब गए; यहूदी, बर्बाद हो गए और अपने से खदेड़ दिए गए भूमि, पूर्ण फैलाव में रहते हैं। ... और न ही बुद्धिमान राजा भलाई के लिए मरा; वह उस शिक्षा में रहता था जो उसने दी थी"।<sup>13</sup>

### **कुरनेलियुस टैसिटस**

लगभग 50 ईस्वी से 100 ईस्वी तक रहने वाले एक रोमन इतिहासकार ने नीरो की आग के बारे में लिखा। "नतीजतन, रिपोर्ट से छुटकारा पाने के लिए, नीरो ने अपराध बोध को तेज कर दिया और अपने घृणित कार्यों के लिए नफरत करने वाले वर्ग पर सबसे उत्तम यातनाएं दीं, जिन्हें आबादी द्वारा ईसाई कहा जाता था। क्राइस्टस, जिनसे नाम की उत्पत्ति हुई थी, को इस दौरान अत्यधिक दंड का सामना करना पड़ा। हमारे एक खरीददार, पोंटियस पिलातुस के हाथों तिबेरियस का शासन।<sup>14</sup>

### **प्लिनियस सेकेंडस**

112 ईस्वी में एक रोमन गवर्नर ने सम्राट ट्रायान को लिखा "वे प्रकाश होने से पहले एक निश्चित निश्चित दिन पर मिलने की आदत में थे, जब उन्होंने मसीह को भगवान के रूप में एक गान गाया, और खुद को एक गंभीर शपथ से बंधे थे कि कोई भी दुष्ट काम न करें ... जिसके बाद उनका अलग होना, और फिर भोजन करने के लिए फिर से मिलना, लेकिन एक सामान्य प्रकार का भोजन करना उनका रिवाज था।"<sup>5</sup>

### **सेटोनियस**

हैड्रियन के शासनकाल के दौरान इंपीरियल हाउस के एक एनालिस्ट और कोर्ट अधिकारी ने लाइफ ऑफ क्लॉडियस में लगभग 120 ईस्वी सन् में लिखा था। "चूंकि चेस्टस के उकसाने पर यहूदी लगातार गड़बड़ी कर रहे थे, उसने (क्लॉडियस) उन्हें रोम से निष्कासित कर दिया।"<sup>6</sup> एडवर्ड सी। व्हार्टन फिर कहते हैं, "इस उद्धरण की प्रसिद्धि का कारण इस तथ्य के कारण है कि ल्यूक, लगभग साठ वर्षों पहले, इसी घटना को प्रेरित पौलुस ने अक्विला और प्रिस्किल्ला नामक एक ईसाई यहूदी जोड़े के साथ जुड़ने के कारण के रूप में दर्ज किया था (प्रेरितों के काम 18:1-2)। फिर से, ऐतिहासिक संदर्भ में मसीह का उल्लेख अतिरिक्त में देखा गया है- बाइबिल साहित्य।"<sup>7</sup>

### **फ्लेवियस जोसेफस**

जोसेफस का एक दिलचस्प अवलोकन है। "इस समय के बारे में एक बुद्धिमान व्यक्ति यीशु, यदि हम वास्तव में उसे एक आदमी कहते हैं, क्योंकि वह अद्भुत काम करता था, पुरुषों का शिक्षक था जो खुशी से सच्चाई को स्वीकार करता था। उसने कई यहूदियों और कई यूनानियों पर जीत हासिल की। जब पीलातुस ने हमारे अपने अगुवों के कहने पर उसे क्रूस पर चढ़ा दिया, तो जो पहिले से उस से प्रेम रखते थे, वे न रुके, क्योंकि वह तीसरे दिन उन्हें फिर जीवित दिखाई दिया, जैसे भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्यद्वानी की और उसके विषय में और भी बहुत सी अद्भुत बातें कहीं, और अब भी मसीहियों की वह जाति जो उसके नाम पर रखी गई है, अभी तक समाप्त नहीं हुई है।"<sup>8</sup>

प्रारंभिक यहूदी और अन्यजाति लेखक

call him a man; for he was a doer of marvelous deeds, a teacher of men who receive the truth with pleasure. He won over many Jews and also many Greeks. This man was the Messiah. And when Pilate had condemned him to the cross at the instigation of our own leaders, those who had loved him from the first did not cease. For he appeared to them on the third day alive again, as the prophets had predicted and said many other wonderful things about him. And even now the race of Christians, so named after him, has not yet died out.”<sup>8</sup>

### Early Jewish and Gentile Writers

The following quote from F. F. Bruce summarizes this very clearly. "Whatever else may be thought of the evidence from early Jewish and Gentile writers...it does at least establish, for those who refuse the witness of Christian writings, the historical character of Jesus himself. Some writers may toy with the fancy of a 'Christ-myth,' but they do not do so on the ground of historical evidence. The historicity of Christ is as axiomatic (self-evident) for an unbiased historian as the historicity of Julius Caesar. It is not historians who propagate the 'Christ-myth' theories.”<sup>9</sup>

### Summary

These and many other passages clearly show that Jesus:

- was God through whom everything was created
- humbled Himself to come to earth in the form of a man
- became the perfect and only sacrifice for sin.
- was raised from physical death witnessed by many
- ascended back to His home, Heaven with The Father
- will come again to receive those who have obedient faith
- acknowledged as human by secular writers, non-believers

### Questions

- Peter said - You are the Son of the Living God.  
True \_\_\_ False \_\_\_
- John said – The Word (Jesus) became flesh and made His dwelling among us.  
True \_\_\_ False \_\_\_
- John the Baptist – Grace and Truth came through Jesus Christ.  
True \_\_\_ False \_\_\_
- Jesus stated to Pilate He was king.  
True \_\_\_ False \_\_\_
- Several secular writers attested to Jesus' life and death.  
True \_\_\_ False \_\_\_

### Footnotes:

एफएफ ब्रूस का निम्नलिखित उद्धरण इसे बहुत स्पष्ट रूप से सारांशित करता है। "शुरुआती यहूदी और अन्यजातियों के लेखकों के सबूतों के बारे में और जो कुछ भी सोचा जा सकता है ... यह कम से कम उन लोगों के लिए स्थापित करता है, जो ईसाई लेखन की गवाही को अस्वीकार करते हैं, स्वयं यीशु के ऐतिहासिक चरित्र। कुछ लेखक एक की कल्पना के साथ खिलवाड़ कर सकते हैं 'क्राइस्ट-मिथ', लेकिन वे ऐतिहासिक साक्ष्य के आधार पर ऐसा नहीं करते हैं। जूलियस सीजर की ऐतिहासिकता के रूप में एक निष्पक्ष इतिहासकार के लिए मसीह की ऐतिहासिकता स्वयंसिद्ध (स्व-स्पष्ट) है। यह नहीं है इतिहासकार जो 'क्राइस्ट-मिथ' सिद्धांतों का प्रचार करते हैं।"<sup>9</sup>

### सारांश

ये और कई अन्य मार्ग स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि यीशु:

- वह ईश्वर था जिसके द्वारा सब कुछ बनाया गया था
- मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर आने के लिए खुद को दीन किया
- पाप के लिए सिद्ध और एकमात्र बलिदान बन गया।  
डी) कई लोगों द्वारा देखी गई शारीरिक मृत्यु से उठाया गया था  
ई) अपने घर, पिता के साथ स्वर्ग में वापस चढ़ गया  
च) आज्ञाकारी विश्वास रखनेवालों को ग्रहण करने के लिए फिर आएंगे  
छ) धर्मनिरपेक्ष लेखकों, अविश्वासियों द्वारा मानव के रूप में स्वीकार किया गया

### प्रश्न

- पतरस ने कहा - तुम जीवित परमेश्वर के पुत्र हो।  
सही गलत \_\_\_
- यूहन्ना ने कहा - वचन (यीशु) ने देहधारण किया और हमारे बीच अपना निवास स्थान बनाया।  
सही गलत \_\_\_
- जॉन द बैपटिस्ट - अनुग्रह और सत्य यीशु मसीह के माध्यम से आया।  
सही गलत \_\_\_
- यीशु ने पीलातस से कहा कि वह राजा है।  
सही गलत \_\_\_
- कई धर्मनिरपेक्ष लेखकों ने यीशु के जीवन और मृत्यु की पुष्टि की।  
सही गलत \_\_\_

### फुटनोट:

- एफएफ ब्रूस, द न्यू टेस्टामेंट डॉक्यूमेंट्स, एर्डमेन्स, पी। 113.
- एडवर्ड सी. व्हार्टन, ईसाई धर्म: इतिहास का एक स्पष्ट मामला हावर्ड पी। 7.
- ब्रिटिश संग्रहालय सिरिएक सुश्री, एफएफ ब्रूस, जीसस और ईसाई मूल एनटी पी के बाहर। 31.
- इतिहास और इतिहास, 15:44। ब्रिटानिका ग्रेट बुक्स से, वॉल्यूम। 15, पृ. 168.
- पत्र, 10:96।
- क्लौडियस का जीवन, 25:4
- एडवर्ड सी. व्हार्टन, ईसाई धर्म: इतिहास का एक स्पष्ट मामला, हावर्ड पी। 11।
- पुरावशेष, 18,3। 3.

1. F. F. Buce, The New Testament Documents, Eerdmens, p. 113.
2. Edward C. Wharton, Christianity: A Clear Case of History Howard p. 7.
3. British Museum Syriac Mss., F. F. Bruce, Jesus and Christian Origins Outside the N T p. 31.
4. The Annals and the Histories, 15:44. From Britannica Great Books, Vol. 15, p. 168.
5. Epistles, 10:96.
6. Life of Claudius, 25:4
7. Edward C. Wharton, Christianity: A Clear Case of History, Howard p. 11.
8. Antiquities, 18,3. 3.
9. F. F. Bruce, The New Testament Documents. P. 119. All the above were cited by Edward C. Wharton in his book Christianity: A Clear Case of History

Appendix A

### Prophecy and their Fulfillment

There are over a hundred prophecies concerning Jesus in the Old Testament but what were the possibilities of making just 25 predictions about someone who was to be born many years later and having these predictions come true?

Dr. Hawley O. Taylor has provided this answer: "Regarding these n cases of events foretold for Israel's Messiah who was to come, if the chances of success were even in the case of each one, that is p (probability) equals n in every case, then the overall probability that all n events would find their fulfillment in one person would be  $p^n$  equals  $(1/2)^n$ . Thus, there would be but one chance in  $2^n$  (33 million, where n equals 25) of all these foretold events coming true if they were mere guesses. Now a glance at these prophecies concerning Christ reveals that they do not all have an even chance of success, for in some instances it is highly improbable that the event could occur at all (as for a child to be born without a human father). A very conservative compromise would be p equals 1/5; and the overall probability for the n prophecies coming true would be  $p^n$  equals  $(1/5)^n$  or one chance out of a thousand trillion if n equals 25. [Modern Science and Christian Faith, p. 178.] Even if the prophecy regarding the virgin birth be excluded, the number remains astronomically large. Too large to assume that this accidentally happened! Twenty-five prophecies concerning Christ and their fulfillment, from Modern Science and Christian Faith, pp. 179-183.

9. एफएफ ब्रूस, द न्यू टेस्टामेंट डॉक्यूमेंट्स। पी. 119. उपरोक्त सभी का उल्लेख एडवर्ड सी. व्हार्टन ने अपनी पुस्तक क्रिश्चियनिटी: ए क्लियर केस ऑफ हिस्ट्री में किया है।

परिशिष्ट A

### भविष्यवाणी और उनकी पूर्ति

पुराने नियम में यीशु के बारे में सौ से अधिक भविष्यवाणियाँ हैं, लेकिन किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में केवल 25 भविष्यवाणियाँ करने की क्या संभावनाएँ थीं जो कई वर्षों बाद पैदा होने वाले थे और इन भविष्यवाणियों के सच होने की क्या संभावनाएँ थीं?

और n भविष्यवाणियों के सच होने की समग्र संभावना pn बराबर  $(1/5)^n$  या एक हज़ार ट्रिलियन में से एक मौका होगा यदि n 25 के बराबर है। [आधुनिक विज्ञान और ईसाई धर्म, पी। 178.] भले ही कुंवारी जन्म के बारे में भविष्यवाणी को बाहर कर दिया जाए, यह संख्या खगोलीय रूप से बड़ी बनी हुई है। यह मान लेना बहुत बड़ा है कि यह गलती से हुआ! पच्चीस भविष्यवाणियाँ मसीह और उनकी पूर्ति से संबंधित, आधुनिक विज्ञान और ईसाई धर्म से, पीपी। 179-183।

# International Bible Knowledge Institute - अंतर्राष्ट्रीय बाइबल ज्ञान संस्थान

## Electives Studies - वैकल्पिक अध्ययन

Mortal Man From Life to Death - नश्वर मनुष्य जीवन से मृत्यु तक

Planned Redemption - नियोजित मोचन

Creation before Genesis - उत्पत्ति से पहले का निर्माण

What Shall We Do? हम क्या करें?

End of Time on Earth - पृथ्वी पर समय का अंत

Marriage and Divorce - विवाह और तलाक

Silence of the Scriptures - शास्त्रों की चुप्पी

Daniel - डैनियल

First Principles of Christ - मसीह के पहले सिद्धांत

Holy Spirit - पवित्र आत्मा

Types and Metaphors - पवित्र आत्मा

## Additional Studies - वैकल्पिक अध्ययन

Today's Church Practices - वैकल्पिक अध्ययन

Compiling and Translating the Bible - बाइबल का संकलन और अनुवाद

Shadows, Types and Prophecies - छाया, प्रकार और भविष्यवाणियां

Teachings & Practices after AD 100 - 100 ईस्वी के बाद की शिक्षाएं और व्यवहार

God's Sabbath - भगवान का सप्ताह

Promises Now and For Evermore - वादे अभी और हमेशा के लिए

God's Rebuilding Process - भगवान की पुनर्निर्माण प्रक्रिया

Living The Maximum Life - अधिकतम जीवन जीना

Real Men are Godly Men - सच्चे पुरुष ईश्वरीय पुरुष हैं

Living For One Another - एक दूसरे के लिए जीना

Greatest Questions Ever Asked - अब तक के सबसे बड़े सवाल

Wonderful Words Of Life - जीवन के अद्भुत शब्द

Lessons From The Cross - क्रॉस से सबक

Jehovah's Witnesses church - यहोवा के साक्षी चर्च

Interesting but not required for BKS award - दिलचस्प है लेकिन बीकेएस पुरस्कार के लिए आवश्यक नहीं

**Outlined Bible** - उल्लिखित बाइबिल

**Summarized** - सारांशित बाइबिल

---

LESSONS AND SERVICES PROVIDED BY *INTERNATIONAL BIBLE KNOWLEDGE INSTITUTE* ARE FREE OF CHARGE.  
YOU WILL NEVER BE ASK FOR TUITION OR ANY OTHER FEE. *IBKI* IS NOT AN ACCREDITED INSTITUTION.

अंतर्राष्ट्रीय बाइबल ज्ञान संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाले पाठ और सेवाएं निःशुल्क हैं। आपसे कभी भी ट्यूशन या कोई अन्य शुल्क नहीं मांगा जाएगा। आईबीकेआई एक मान्यता प्राप्त संस्थान नहीं है।



International Bible Knowledge Institute  
Randolph Dunn, President  
Roberto Santiago, Dean



अंतर्राष्ट्रीय बाइबल ज्ञान संस्थान  
S.M.Vinay Kumar,  
IBKI India Director

संस्थान का लक्ष्य परमेश्वर और उसकी इच्छा के बारे में अधिक जानने में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति को बाइबल पाठ उपलब्ध कराना है। पाठों को प्रिंट करने के लिए डाउनलोड किया जा सकता है, ऑनलाइन अध्ययन किया जा सकता है या व्यक्तियों या चर्चों द्वारा ईमेल मंत्रालय में उपयोग किया जा सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय बाइबल ज्ञान संस्थान (IBKI) से डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए एक छात्र ने चार आवश्यक पाठ्यक्रम और 7 वैकल्पिक पाठ पूरे किए होंगे।

उन्नत अध्ययन "बीकेएस" (बाइबिल नॉलेज स्कॉलर) पुरस्कार प्राप्त करने के लिए, एक डिप्लोमा अर्जित करने के अलावा एक छात्र ने सभी वैकल्पिक पाठ और 7 अतिरिक्त अध्ययन पूरे कर लिए होंगे।

आईबीकेआई गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए पुस्तकों और पाठों को उनकी संपूर्णता में बिना किसी परिवर्तन या शुल्क के पुनः पेश करने की अनुमति देता है।

### Course One - The Message | कोर्स एक - संदेश

How Did Everything Get Here? सब कुछ यहाँ कैसे आया?

The Man Who Was God वह आदमी जो भगवान था

Christ - God's Mystery क्राइस्ट - भगवान का रहस्य

Myths About God भगवान के बारे में मिथक

### Course Two - Obedience To His Message | पाठ्यक्रम दो - उनके संदेश की आज्ञाकारिता

Time Before Christ मसीह से पहले का समय

Time Christ on the Earth पृथ्वी पर समय मसीह

Time After Christ मसीह के बाद का समय

Time to Decide तय करने का समय

From Death Through The Cross To Life मृत्यु से क्रूस के द्वारा जीवन की

### Course Three - A New Spiritual Life In Christ | कोर्स तीन - मसीह में एक नया आध्यात्मिक जीवन

Baptism into Christ मसीह में बपतिस्मा

Life to Death - The Mortal Life

A Kingdom Not Made With Hands हाथों से नहीं बना साम्राज्य

Servants In The Kingdom राज्य में सेवक

Message From The Epistles पत्रियों से संदेश

Worship God In Spirit and Truth आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की आराधना करें

### Course Four - Maturing In Christ | कोर्स चार - मसीह में परिपक्व होना

Jesus of Nazareth नासरत का यीशु

Life Of Christ मसीह का जीवन

United in Christ में संयुक्त

Spiritual Milk आध्यात्मिक दूध

Body, Soul, Spirit - Where Do They Go When You Die? शरीर, आत्मा, आत्मा - जब आप मरते हैं तो वे कहाँ जाते हैं?

Living Liberated लिविंग लिबरेटेड

Revelation Of Jesus Christ यीशु मसीह का रहस्योद्घाटन

कृपया इस कार्यक्रम और पाठों के बारे में सभी प्रश्नों को इस पते पर अपने नामित शिक्षक को निर्देशित करें।

Distributed by

Hyderabad & Naidupet Church of Christ,

1-2-168, CBN Colony, Helping Hands Trust,

Naidupet-524 126, A.P,India